



६५२९

अपने पूज्य पिता

Sethia Jain Library

BIKANER

Serial No. ६५२९

Index No.

स्वर्गवासी

लाला वृज लाल जी

— की —

शुभ स्मृति में—

प्रकाशक

लाला दुर्गादास जैन

बजाव धूर्त मण्डी,

पटियाला स्टेट.



श्री बाँदरागाय नमः

पंन हने गर बनला  
पर न होवे बनला संग

बने बाँदरा नै बर  
मिले दिना रेन दो हो

# जीवन चरित्र

श्री स्वामी खजान चन्द जी महाराज



सूचक—

लाला कल्याण जी बापला पैसावा मुम्बईमेडेल  
देवरा लाला हिरो बनिमर मुम्बईमेडेल (पहल)

द्वितीय अनुवादक—

श्री० रमानाथ वैज एम. ए. एल. ए. वैज बापि  
अनन्त राव

संस्करण—

लाला ब्रजलाल मुन्शीवा वैज बहादुर  
श्री मरुत गणेश श्रीवास्तव

प्रकाशक  
लाला दुर्गादास जैन  
बजाव, धूरी मण्डो,  
पटियाला स्टेट

प्रथम बार	}	बीर सम्बन्ध २४७३	}	ग्योष्ट
प्रति १०००		ई० ११४७		१।

मुद्रक  
लाला केदारनाथ अग्रवाल  
की प्रिंटिंग मिल्स,  
अम्बाला

## अनुवादक का महत्त्व

यह बात सर्वविदित है कि जो भाषा मूल पुस्तक में होती है, वे हम के अनुवाद में प्रायः पुरे पुरे नहीं आते। परन्तु फिर भी मेरी ओर से यह पूरा पूरा प्रयत्न रहा है कि भाषा में भले ही फेर फार हो जाए, पर मूल भाषा बदलने न पावे।

इतना निवेदन करने के पश्चात् मैं यह बात देना आवश्यक समझता हूँ कि मूल पुस्तक साधारण जनता की दृष्टि में रख कर लिखी गई थी। किन्तु हम ने यह अनुवाद करते समय जहाँ साधारण जनता की दृष्टि में रखा है, वहाँ विशेष रूप से जैन जनता का ही ध्यान रखा है। इस का कारण यही है कि हिन्दी भाषा में इस पुस्तक की पहलने वाली अधिक जैन जनता ही होगी। फिर भी मैं ने ऐसा कोई भाषा प्रवृत्त करने का प्रयत्न नहीं किया, जो साधारण जनता की दृष्टिपर हो। भाषा को सरल बनाने का भरसक प्रयत्न किया है।

इस पुस्तक में 'जैन धर्म के अनुयायी' नामक जो अध्याय है, हम ने कुछ छूट बढ़ा दिये गये हैं जो बिना आवश्यक जान पड़े। अतः जैन धर्म पर अजैन विद्वानों की कुछ आपत्तियाँ भी जोड़ दी गई हैं।

मैं अपने स्वयं की समझ करने से पूर्व पुस्तक के मूल रचूँ लेखक भीमसुख बारी राम साहू जी की धन्यवाद देता हूँ कि जिन्होंने इसका अनुवाद करने की आज्ञा प्रदान की है।

एवं इस पुस्तक के अनुवाद में कोई त्रुटि या असहजता हो गई हो, तो पाठकगण क्षमा करें।

—देवदत्त—

१८ म मार्च १९३८

७३६ - १११

# कृतज्ञता

लाला काशी राम जी चावला ने अपने शिक्षापीठ माहिं  
मे देश तथा जाति को अपूर्व सेवा की है। भिन्न भिन्न धर्म-  
मुवाइयों में परस्पर प्रेम बढ़ाने वाली इन की रचनाएँ देश भर में  
विशेष प्रसिद्ध हो रही हैं। गृहस्थ के विषय पर भी इन की  
हिन्दी तथा उर्दू की पुस्तकें जनता में आदर पा रही हैं। जनता  
ने इन को पढ़कर अति लाभ उठाया है। साधारण जनता इन को  
इस सेवा के लिये अनीब कृतज्ञ है।

जैन समाज विशेष रूप से चावला जी का कृतज्ञ है।  
यह इनकी चतुर्थ रचना है जो कि लोगों ने अपने जैन भाइयों को  
प्राथम्य पर लिखी है। जैन धर्म के सिद्धान्तों की चावला जी बड़े  
सुन्दर ढंग से प्रतिपादन करते हैं, क्योंकि वे स्वयं अहिंस तथा  
प्रेम के सिद्धान्तों पर उद्भूत हैं, इस लिये उनकी वर्णन शैली अपूर्व  
तथा मनोहर है। यही सिद्धान्त जैन धर्म की आधार शिला है।  
चावला जी के एक एक वाक्य से सम्प, प्रेम तथा वात्मन्यता की  
सुगन्ध आती है। इन्हीं गुणों के आधार पर मानव धर्म उद्भूत  
मकता है। जो मनुष्य अथवा जाति उपरोक्त गुणों से रहित होती  
है, वह न तो अपने को लाभ पहुँचा सकती है और न ही देश को  
और समाज को तो उस में क्या लाभ हो सकता है।

इस समझते हैं कि चावला जी एक अनिव्यक्त व्यक्ति हैं  
किन्तु जो इन का बड़ा कृपा है कि जब जहाँ इन में कुछ जितना  
है लिये प्राथम्य का गुरु, तो जहाँ न इस कार्य का एक मनुष्य  
अपवादक कथा इनका नहीं किया। इसका एक कारण तो उनका  
इनका न करने का स्वाभाविक गुण है और दूसरा जैसे कि  
कहा न स्वयं चावला जी 'नवेदन' में 'लगा है, इन का जै

एम्मे वे सीलिक मिश्रान्तों में ड्रेन हैं। बाबला जी लेखन कार्य के पत्रिका मासों द्वारा भी जैन समाज की सेवा करते हैं। तुषियाना के मानसिक कलत्र में इन के शिष्या प्रचारक होते रहते हैं। कदा बिहोर कबसों पर भी वे करना अनन्त समय जैन समाज की प्रशान करते रहते हैं। उर कभी दूसरे नगरों में जाते हैं, जो वहाँ भी करने करगमिन मासों द्वारा वहाँ की जनता की लाभ पावते हैं।

माया वाली रात की मे छैन हने के लव समझे और पर  
 धारण नही बिदे, पान्दु कहे मय में दे वृत्त शर्मे को दखने बाने  
 भगवान महाशेर के मखे पुरी है । यही धारण है कि वे किमी  
 भी धर्म के बिना कुछ बाना अनुचित समझने है । अरेव  
 धर्म में हो पुन है, इसका बर्तन बाने में बाने नही बिबिधिये  
 यदि यह बिबिध मय धर्मबिबिधियों के हो जार । तो काय हो  
 मय का समझन हो मयका है । पान्दु केवल सुन में का देने  
 मय में संगठन नही हो मयका, उर लव कि लव सुनो को  
 बाने बाना बान नही दिला बान । मय धर्मन मय में हो  
 मयन बाने का मय । हन में होना बानि और हने किमी भी  
 धर्म के निहाने, इनके सुनो और इनके बिबिधियों पर अनुचित  
 और बिबिध पुनने बाने सुननेकी न बाने बानि, बानि  
 अरेव धर्म को बानो बाने में लव सुनने का धरन बाना  
 बानि । धरन को मे लव हो बिबिध है किम बाना के अरेव  
 धर्म को मयका के निर है

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

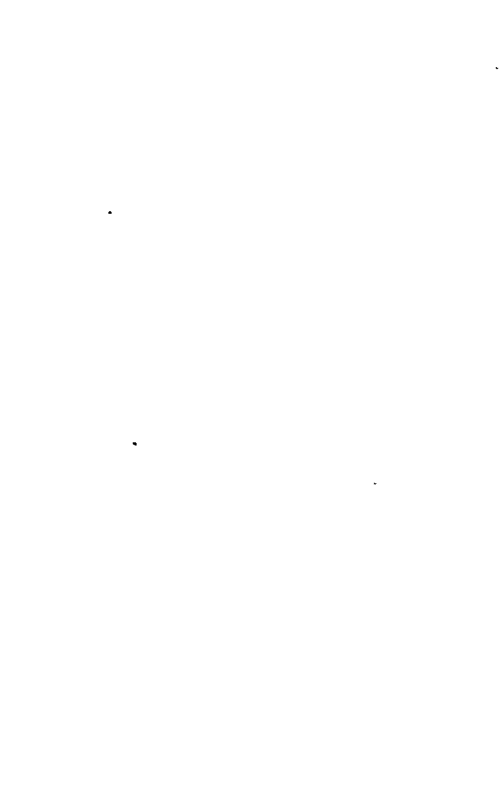


## धन्यवाद

मैं समझता हूँ कि जिन शासन प्रभावक, समाज सुधारक, पवित्र आत्मा, बाल जलचारी, प्रसिद्ध ब्रह्मा, दानपुत्र प्रवर्तक, १००८ पूज्यबाद स्वर्गीय गुरुदेव श्री श्रीस्वामी लखानचन्द जी महाराज के स्वर्ग मिथारने के पश्चात् यदि उनके अमंथ्य कपड़ों के बदले उनके श्री चरणों में यह अष्टाशुलि भेंट न की जाती, तो हम कृतज्ञता के पाप के भागी होते ।

बाबसा जी का धन्यवाद तो मन्त्री जी ने कर ही दिया है और मैं भी उनको आशीर्वाद देता हूँ कि उन्होंने अपने सपने लगा कर यह सेवा की है । पर महापुरुष के चरणों में भट्ठा के कुछ बदनाम अपनी शराकन और नेकदिशी का मद्य देना होता है । बाबसा जी का पुष्टार्थ विरोध रूप से प्रशंसनीय है । और उन्हें से हम कार्य को करके पुण्योत्सव न किया है ।

बाबसा जी के अतिरिक्त कविज्ञ जगन्नाथ भी समाज की, कवि श्री चन्दन लाल जी आदि महाराजान, मास्टर विद्या कलकौटी, कवि जगन्नाथ राम रायसिंह नगर, साक्षात् अमरना जीहरी प्रधान मन्तानन धर्म समा नामा तथा अन्य ललान समाजों और अन्य समाजों ने भट्ठा के कृत भेज कर अपने कृतज्ञता प्रकट की है । वे सब धन्यवाद के पात्र हैं ।



# कलियुग का महान धर्म दान ही है

कंजूस कोयले के समान है  
और

उदार व्यक्ति श्वेत हीरे के समान है ।  
कोयले पर किसी प्रकार का रंग नहीं चढ़ सकता  
जानी महाशय पर ही धर्म का रंग चढ़ सकता है ।

दान आत्म विकास का राजमार्ग है ।

# विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ
१	आवरणहीन निषेदन	१
२	प्रारम्भ	१०
३	जैन कीन है	१६
४	नास्तिक कीन है	३८
५	दुनिया में धमन कैसे हो	४८
६	संक्षिप्त जीवन	६१
७	जन्म कुलहली	७३
८	महाराज श्री की दीक्षा	७६
९	मौखिका	८६
१०	जैन मुनि	१०१
११	सच्चे मनुष्य	१२६
१२	महाराज श्री के चतुर्मास	१३८
१३	चतुर्मासों की मोटी २ बातें	१४१
१४	श्री महाराज का अन्तिम काल	१६३
१५	महाराज श्री के विशेष गुण	२००
१६	श्री महाराज की सेवा में समर्पित अभिनन्दनपत्र	२०७
१७	महाराज श्री के स्वर्ग सिंघारने पर अफमोस	२३५
१८	शिष्य परम्परा	२६६
१९	श्री महाराज जी के उपदेश	२७१
२०	जैन धर्म की शिक्षा	३२५
२१	जैन धर्म के अनुयायी	३३७
२२	तार्किकों का निवाण काल	३३६
२३	जैन धर्म पर अजैन विद्वानों के सम्मति	३४१



## आवश्यकिय निवेदन

निम्नन्देह मेरा नाम जैनधर्मावलम्बियों की जनगणना में नहीं आता और न ही मैं अपने नाम के पीछे 'जैन' शब्द 'लखता हूँ, तथापि अहिंसा और सत्य को जोकि जैन धर्म के मौलिक सिद्धान्त है, मैं अपने जीवन का अङ्ग मानता हूँ। बाल्यावस्था में ही मुझे इन सिद्धान्तों से प्रेम है और अपनी योग्यता के अनुसार अथवा इन सार लेखों और भाषणों द्वारा प्रचार कर रहा हूँ। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि संसार को आने वाले युद्धमंकों से, लड़ाई-झगड़ों से, और बलह-क्लेशों से बचना है तो हम इन्हीं सुन्दर सिद्धान्तों का अनुसरण करना पड़ेगा, अन्यथा कोई उपाय-दियाई नहीं देता, जो हमें आप दिन के इन झगड़ों से मुक्त करा सके। दूसरा विश्वव्यापी युद्ध अभी समाप्त हुआ ही है कि तीसरे महायुद्ध की सम्भावना भी जा रही है। समाचार पत्रों में जान पड़ता है कि उस के कारण भी एकत्रित हो रहे हैं।

सिक्ते दो युद्धों में जन तथा धन की इतनी हानी हुई है कि शताब्दियों तक भी उनकी पूर्ति न हो सकेगी। जिन देशों में युद्ध में विजय प्राप्त हुई है, उनकी आर्थिक दशा भी इतनी बराबर हो गई है कि वे देश बिना सहाय्य लिये अपनी व्यावहारिक गये नहीं चला सकते 'विजयी देश'—रूस, अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेन के बीच विजय क्षेत्र के वित्तबारे का लिये भारी मतभेद स्पष्ट हो गए हैं। साथ ही इन युद्धों ने उन्हे इतना धरती मारदा

कर दिया है कि वे सभी अन्तःकरण में यही चाहते हैं कि अब और कोई युद्ध न छिड़े। इसी नदेश्य को लेकर शान्ति सम्मेलन (conference) किये जाते हैं। उन में भिन्न २ कक्षाएँ सोचे जाते हैं जिन से कि किसी प्रकार यह सून की होली बन्द हो। परंतु वे होने वाले शान्ति सम्मेलन विफल होते दिखाई दे रहे हैं। इस का कारण यह है कि सम्मेलन में भाग लेने वाले अन्तःकरण से शान्ति नहीं चाहते। प्रत्येक अपने २ लाभ का ही विचार करता है। और ऊपर से सभी चिन्हाते हैं कि सेनाओं को घटा कर इतना कम कर दिया जाये कि जितनी सेना राज्य व्यवस्था के लिये आवश्यक हो, परंतु अन्दर ही अन्दर प्रच्छन्न रूप से प्रत्येक अपने सैन्य बल को बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है और नये से नये शस्त्र की खोज में लगा हुआ है। अतः केवल मन की प्रमत्त कर देने वाली ये बातें सब तक शान्ति स्थापित नहीं कर सकती कि अब तक इस अहिंसा और सत्य के सिद्धान्तों को नहीं अपनाते। यदि ऐसी ही दशा बनी रही, तो ये दो युद्ध तो क्या देखे हैं, न जाने और कितने युद्ध इस ससार को देखने पड़ेंगे, अहिंसा और सत्य-ये मानवता के मूलसिद्धांत हैं। इन पर उ नही बलता वह मानव नहीं, अपितु, दानव हैं, और दानव मरना लड़ने भिड़ने में ही प्रमत्त रहते हैं।

इसी दानवता के कारण देश में साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं कि वर्तमान में हमारे इस अधोगत देश में पाव कम हुए हैं। सभी कलकत्ते का विजय हिला देने वाला हुस्वाका हुआ। इसके पश्चात् वही हाल बिहार में किया गया पु अमदावाद, बम्बई, दाका अलोगढ़, आगरा आदि कई स्थानों पर दानव का हीना चला गया है। फिर पश्चात् क शहरों

दशर के दशर कर्म की भेंट कर दिये गए और देहातों को  
जलाकर राख का ढेर बना दिया गया। यदि मुसलमान हिन्दुओं  
का मुहल्लान करते हैं तो इस से मुसलमानों की क्या लाभ पहुंचता  
है और यदि हिन्दू मुसलमानों की हानि करते हैं तो हिन्दुओं  
को इस से क्या प्राप्ति होती है। जल में हर प्रकार से हानि को  
इस देश की ही हानि है, परंतु अपने साम्प्रदायिक पक्ष-पक्ष के  
कारण मनुष्य इस साम्प्रदायिक हानि को नहीं देख पाता।  
साम्प्रदायिक होने दोषही बखारें हैं जोकि दोनों पक्षों को  
मुहल्लान पहुंचाती हैं। जल में जाकर दोनों पक्ष पक्ष कलुष  
भी करते हैं कि मनुष्यों के लिये इस प्रकार एक दूसरे का गला  
काटना उचित नहीं है। इन में परस्पर की वनमन मुहल्लाने की  
बजाए और अधिक वनमन जाती है और हाना। भय और भ्रं  
दूरा आ पड़ता है। इसकी भारी जन तथा जन का हानि करने  
के पक्षों ही इन लोगों की प्रतीत होता है कि बिना जेल मिलान  
के ऐनिक जोइन बिगलना भी दुनार है। जेल धर्म इसी अहिंसा  
की जेल मिलान की गिरा देता है जिन की आचार्यवला आच  
आयेह देता और आयेह धर्म की कलुष हो नहीं है।

[illegible]



धर्म जहाँ अस्पृशिक साधना पर जोर देता है वहाँ नगर-प्राम तथा राष्ट्र के प्रति मनुष्य के कर्तव्य भी मने प्रकार बतलाता है। स्वयं भगवान् महावीर ने नगर, ग्राम तथा राष्ट्र धर्म को ऊँचा स्थान दिया है तथा इन ही का बर्णन शास्त्रों में पहले किया है और आत्म-साधना का इन के पश्चात्।

जैन गृहस्थ को यह आदेश है कि प्रातः उठते ही वह धर्म संकल्प करे \* "ऐ प्रभो! मैं कब अपने धन को समाज की सेवा के लिये खर्चूंगा। वह दिन धन्य होगा जब कि मेरा धन समाज सेवा में लगेगा और दीन दुःस्वयों के दुःख दूर करने के लिये खर्च होगा।" जैन शास्त्रों में लिखा है कि यदि किसी का कोई साथी बीमार हो या किसी और दुःख में पड़ा हुआ हो और आप उस की सेवा या सहायता कर सकते हैं अर्थात् उस दुःख दूर करने के साधन आप के पास हैं, परन्तु फिर भी उस से मुँह फेरे खड़े रह जाते हैं और अपने मन ही मन विचारने लग जाते हैं कि इस मनुष्य ने पहले मेरा कौन सा दिया है, कि मैं उसका काम करूँ या भागे को मुझे इस में लाभ पहुँच सकता है। यदि ऐसे भाव किसी के दिल में हों तो जैन धर्म के अनुसार वह व्यर्थ धन व्यर्थ है।

जैन गृहस्थ को यह आदेश है कि प्रातः उठते ही धर्म संकल्प करे

\* "ऐ प्रभो! मैं कब अपने धन को समाज की सेवा के लिये खर्चूंगा।

वह दिन धन्य होगा जब कि मेरा धन समाज सेवा में लगेगा







लेने हैं और उन का अधिक ध्यान इसा जाति का सुधार करने में होता है। परन्तु किसी भी जाति का धार्मिक व सामाजिक सुधार करना देश व राष्ट्र की मर्यादा सेवा करना है। मर्यादा मानव रूपी देह के अङ्ग प्रत्यङ्ग हैं। शरीर के किसी भी अङ्ग को ठीक रखना उस की सेवा करना, शरीर की ही सेवा करने है। इसी प्रकार किसी भी जाति का सुधार करना, न केवल उस देश की अविनाशिक सभ्यता की सेवा करना है। जिस प्रकार शरीर के किसी अङ्ग का रोगग्रस्त होना शरीर को भी दुर्बल बनाता है, उसी प्रकार किसी भी एक देश का दुःखी होना पूरे संसार को दुःखी बनाता है। महापुरुष किसी जाति की भुक्ति तथा कामभोगियों को दूर करके उसे सुदृढ़ बनाते हैं। महापुरुष प्रत्येक मन वाले को एक दूसरे से घृणा व द्वेष का भेषाकर उन को प्रेम की लड़ी में परो कर सामाजिक धार्मिक रूप में खड़ा करने का उपदेश देता है तो वह महापुरुष प्रत्येक व्यक्ति के लिये नमस्कृत्यार्थीय एवं आदरणीय है। धर्म के सभी मायु स्वयं तो अहिंसा के कड़े प्रवृत्त का पालन करते हैं अर्थात् किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा आक्रमण करने पर कम बल हाथ नहीं उठाते, परन्तु साथ ही साथ अपने अनुप्राप्त होने की भी चिन्ता कारण हिंसा न करने का उपदेश देते। इसी कारणों से वे महापुरुष का जीवन अविनाशिक सिद्धि में खड़े रहते हैं। और फिर जब मुझे इस कारणों से कहा जाय। तब तो मेरे लिये यह और भी आवश्यक बन जाता है। किसी महापुरुष का जीवन अविनाशिक सिद्धि के लिये अनिवार्य बनने का ही निष्कर्ष है।

जीवन से हम क्या २ शिवाय प्राप्त कर सकते हैं और उन शिवायों को अपने जीवन में किस प्रकार लाने सकते हैं। जीवन नियमों-नियमों का पालन कर वह महापुरुष कहलाए और उन कदमों में उनका जीवन संकल रहा, उन नियमों में क्या विशेषता है और किस प्रकार उन्हीं नियमों पर चलकर हम भी अपने जीवन को ऊँचा उठा सकते हैं। इन्हीं बातों का हमें समझने और मैंने सा-खदान चन्द्र जी महाराज का जीवन बारीक निगा है। मैं नहीं कह सकता कि कहां तक मैं अपने ध्येय में पूरा उतरा हूँ इस बात का निर्णय तो मेरे दिल पठकगुरु ही दे सकेंगे।

महापुरुषों के जीवन ऊँचे में इधर उधर भटकते हुए हम लोगों के दिलों दीपक का काम करते हैं। उनके प्रकाश की मालिका में बलवान् पथ पर चलते हुए हम अपने उद्देश्य तक पहुँच सकते हैं।

महापुरुष अपने आचार व्यवहार द्वारा हमारे दिलों में राजनीति बना गए हैं जिस पर हमें चलते हुए हम अपने जीवन को संकल बना सकते हैं। उनके जीवन की एक एक पंक्ति हमारे दिलों में शिवाय होनी है। मैं आशा रखता हूँ कि दिल पठकगुरु भी मजान चन्द्र जी महाराज के इस कमल जीवन बरेश को पढ़ कर शिवाय प्राप्त करेंगे और उन पर प्रभाव कर अपने जीवन को संकल बनाएंगे और हमें।



लेने हैं और उन का अधिक ध्यान उस जाति का सुधार करने होता है। परन्तु किसी भी जाति का धार्मिक व सामाजिक सुधार करना देश व राष्ट्र की सबसे सेवा करना है। सब जाति मानव रूपी देह के अङ्ग प्रत्यङ्ग हैं। शरीर के किसी भी अंग का ठीक रखना उस की सेवा करना, शरीर की ही सेवा करना है। इसी प्रकार किसी भी जाति का सुधार करना, न केवल उस देश की अपितु सारे संसार की सेवा करना है। जिस प्रकार शरीर के किसी अङ्ग का रोगग्रस्त होना शरीर की भी दुष्ट बनाता है, उसी प्रकार किसी भी एक देश का दुःखी होना ही संसार की दुःखी बनाता है। महापुरुष किसी जाति की दुष्टि तथा कमजोरियों को दूर करके उसे सुदृढ़ बनाते हैं। वे महापुरुष प्रत्येक मत वाले को एक दूसरे से घृणा व द्वेष को भेदवाकर उन को प्रेम की लड़ी में परो कर सामाजिक धार्मिक रूप से ऊँचा उठने का उपदेश देते हैं तो वह महापुरुष प्रत्येक व्यक्ति के लिये नमस्करणीय एवं आदरणीय है। जैन धर्म के सभी साधु स्वयं तो अहिंसा के कड़े प्रत का पालन करते ही हैं अर्थात् किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा आक्रमण करने पर भी उस पर हाथ नहीं उठाते, परन्तु साथ ही साथ अपने अनुयायी वर्ग को भी बिना कारण हिंसा न करने का उपदेश देते हैं। इन्हीं कारणों से ऐसे साधुआ का जीवन चरित्र लिखना मैं अपने लिये कम्पर समझता हूँ। और फिर जब मुझे इस काय के लिये कहा जाय तब तो मेरे लिये यह और भी आवश्यक बन जाता है। किसी महापुरुष का जीवन चरित्र लिखना केवल उनके जीवन की घटनाओं को ही लेखनी-बद्ध कर देना नहीं है बल्कि उनके जीवन की नीति व मूल्य दर्शा देना है।

जीवन से हम क्या २ शिक्षाएँ प्राप्त कर सकते हैं और उन शिक्षाओं को अपने जीवन में किस प्रकार उतार सकते हैं। जिन नियमोपनियमों का पालन कर वह महापुरुष कहलाए और जिन कारणों से उनका जीवन सफल रहा, उन नियमों में क्या विशेषता है और किस प्रकार उन्हीं नियमों पर चलकर हम भी अपने जीवन को ऊँचा उठा सकते हैं। इन्हीं बातों का ध्यान रखते हुए मैंने श्री गजानन चन्द्र जी महाराज का जीवन चरित्र लिखा है। मैं नहीं कह सकता कि कहाँ तक मैं अपने श्रेय में पूरा उत्तरा हूँ इस बात का विचार तो मेरे प्रिय पाठकगण ही दे सकेंगे।

महापुरुषों के जीवन ऊँचे में इधर उधर भटकते हुए हम लोगों के लिये दीपक का काम करते हैं। जिन के प्रकाश की सहायता से कल्याण पथ पर चलते हुए हम अपने उद्देश्य तक पहुँच सकते हैं।

महापुरुष अपने आचार व्यवहार द्वारा हमारे लिये राजमार्ग बना गए हैं जिस पर हमसफर होते हुए हम अपने जीवन का सफल बना सकते हैं उनके जीवन की एक एक घटना हमारे लिये शिक्षाप्रद होती है मैं आशा रखता हूँ कि प्रिय पाठकगण भी गजानन चन्द्र जी महाराज के इस अनूद्य जीवन चरित्र को पढ़ कर शिक्षा ले सकेंगे और उन पर आचरण कर अपने जीवन को सफल बना सकेंगे । शम् ।





## प्रारम्भ

जब से भारतीय संस्कृति का आरम्भ हुआ है, त लेकर आज तक के इस दीर्घ काल में अन्य देशों में संस्कृतियों उत्पन्न हुईं और विलीन हो गईं परन्तु वह भारतीय सभ्यता ही है जो मेरु के सदृश अकम्प स्वदा है सभ्यता में क्या विशेषता है जो अन्य सभ्यताओं से इसे ऊँचा करता है। वह विशेषता है इस की सत्य की स्वातंत्र्य तथा अति सुख की ओर मुकाब।

वेद-काल को ही लें तो वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, विशेषकर उपनिषदों में भारत की बुद्धि इसी आत्मिक सुख खोज में लगी हुई थी। हमें इस विषय में जाने की आवश्यकता नहीं कि जिस सिद्धान्त पर वह बुद्धि पहुँचती है वह ठीक है या नहीं। ध्यान देने का विषय तो यह है कि हमारी बुद्धि पर भुलाव उस तत्व-ज्ञान को प्राप्त करने में लगा हुआ था जिसे पराविद्या (लाकोत्तर विद्या) कहते हैं। यह विद्या शिष्य स्वयं आदि लौकिक विद्याओं से भिन्न है। इस विद्या में एक विशेष गुण है तथा अन्य विद्याओं में इसे एक विशेष महत्त्व प्राप्त है। इस का उद्देश्य बहुत ऊँचा है। इस का मार्ग भी अन्य विद्याओं के मार्गों से भिन्न है। भारत की बुद्धि इस बात को कभी स्वीकार नहीं करती कि इन पौद्गलिक वस्तुओं में ही वास्तविक सुख है। यह पुद्गल जग जग में बदलता रहता है। इन वस्तुओं में बहकाली वस्तुओं से हानि वाले जग-भंगुर सुख के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण जीवन को खो देना कभी पसन्द नहीं करता और न वह इसे अपना जीवन उद्देश्य मानने के लिये तैयार है।

ऐसे आनन्द की खोज में थी जो अनन्त और अक्षय हो ।  
 ऐसे ज्ञान को प्राप्त करना चाहती थी जिसे पाकर मनुष्य  
 तृप्त हो जाए इसे फिर उनके लिए कोई कार्य करना शेष न  
 जाए । इस की सब भाव दौड़ समाप्त हो जाए और वह ऐसे  
 ज्ञान पर पहुँच जाए, जहाँ आनन्द ही आनन्द हो, दुःख नाम  
 त्र को भी न रहे, जहाँ शोक, निराशा, चिन्ता आदि समीप  
 ही न फटक सकें ।

भगवान् बुद्ध इसी पथ के अधिक थे । भगवान् महावीर  
 वामी ने भी इसी अक्षय स्थान को प्राप्त किया था और भव्य  
 तीर्थों को इस स्थान के प्राप्त करने का उपदेश दिया । यह संसार  
 क्या है ? जीव कौन है ? इसके संसार में आने का क्या उद्देश्य  
 है ? इस का जीवन-लक्ष्य क्या है ? शारीरिक सुखों के होते हुए  
 भी वह दुःखी क्यों हो रहा है ? दुःख का वास्तविक स्वरूप क्या  
 है और इस से छुटकारा किस प्रकार पाया जाता है ? ये प्रश्न ये  
 जिन की ओर हमारे महापुरुषों ने जनता का ध्यान आकर्षित  
 किया था । इनके स्नेहपूर्ण उपदेश जनता के हृदय पर गहरा  
 प्रभाव डाल गए । इन की मादा जीवन बिताने की शिक्षा और  
 उपदेश इन का त्यागमय जीवन एवं कठोर तपस्या अपना प्रभाव  
 द ले बिना न रह सका ।

महाराजा अशोक जैसा प्र शासक अशोकचन्द्र से  
 धर्म-अशोक बन गया । इस र राजकुमार और राजकुमारियां  
 भिक्षु का आनन्द लेते साधु-सा का वेष पहन अहिंसा का  
 मन्त्र लेते । उपदेशों से अपनी उन्नत राजा ने स्वयं स्थान  
 स्थान पर जाकर आत्म-साधना प्रेरण का मन्त्र देना और अपना  
 नारा जीवन इस काय में बन गया । इस से स्पष्ट है कि भारत

था। और इस सुख के आगे शेष सब सांसारिक सुखें  
सुच्छ समझा था।

अठारवी शताब्दि में हमारी सभ्यता में एक बार कि  
गिरावट आती है। स्वार्थ, प्रमाद, और विषय-आसक्ति के स्रोत  
निकल पड़े। उदार भावनाएँ उड़ गईं। दिन रात लड़ाई  
होने लगी। एक दूसरे का विध्वान उठ गया। वे सिद्धान्त जो  
हमारे जीवन को ऊँचा उठाने वाले थे, मुला दिए गये। त्रिम  
का परिणाम यह हुआ कि हजारों मीलो से आने वाले योरोप के  
लानची व्यापारियों ने बन्दर-वांट के नियमानुसार सारे भारत पर  
अपना पाँव जमा लिया। परन्तु कुछ ही समय बीता था कि  
कुछ एक समझदार व्यक्तियों ने सोच हुए भारतीयों को ज्ञान  
आरम्भ किया। जो लोग इस पाश्चात्य सभ्यता के नशे में नूर  
चूर हो गए थे, उन्हें फिर इस सुन्दर और पवित्र सभ्यता का पाठ  
पढ़ाया। इस युग के देवता महात्मा गान्धी ने प्रेम, अहिंसा और  
निष्काम सेवा का मधुर राग अजापा और विशाल जनता के  
हृदय में स्वतन्त्रता प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा उत्पन्न की।

भारतीय सभ्यता की महान नदी मानवता के पवित्र  
सिद्धान्तों के स्रोत से निकल कर हजारों वर्षों का दीर्घ मार्ग काटती  
हुई ऊँचान और नीचान में बहती हुई आई है तथापि इसका पवित्र  
जल धारा में कौड़ी अन्तर नहीं आया। इस में कौड़ी सन्देह नहीं कि  
यह जल बाग किमी किमी समय रतना दलदल में फँस गई तथा  
किमी समय तो आस्यो स ओझल भी हो गई, परन्तु इस का  
आन्तरिक जल-प्रवाह उदा का न्या बना रह, इस का पवित्रता  
और निमज्जना में कौड़ी अन्तर नहीं आया अतः वह जल बाग  
जा कि मिट सा गई या फिर अपना मर निकालती है,

त, गन्धगी और मृग को रहा ले जाती है तथा फिर अपने विष और निर्मल जल से भरी हुई बहने लगती है।

यह उन्न क्या है? यह हमारे जीवन का पवित्र उद्देश्य है, यह हमारी आत्मा का उद्धान है, यह हमारा शुद्ध हृदय है जो इस चकर खाते हुए संसार में भ्रम के सदृश अचल है, और दैहिक अस्थिर भोग-विलास को लपेट से मुक्त है। जो उस का अनुभव कर लेता है उस के मन की सब चिन्ताएं मिट जाती हैं। वह पूर्ण निर्मल होकर आत्मिक ज्ञान को प्राप्त कर लेता है और जन्म मरण के चक्राल से मुक्त होकर अक्षय सुख को प्राप्त कर लेता है।

यह गौरव इसी देश की प्रज्ञा है जिस ने ऐसे ऐसे महान व्यक्तियों को जन्म दिया, जिन्होंने न केवल अपने आप को उन्नत किया, बल्कि हमारे भूते भटकों को मत्स्य मार्ग पर डाला। जोड़े हुए लोगों को उन्नत, और उन्हें अपना भूला हुआ कर्तव्य सुझाया। फिर भी बहुत से लोगों ने अपने कर्तव्य को भुला दिया है, कुपय्यानी बन रहे हैं, सुभागों को छोड़ कर कुमार्ग पर चल रहे हैं जैसा कि एक बड़े के कवि ने कहा है—

पड़ गया उन्हें मन खाने का लतका ऐसा  
रुज होता है मनरत को अग्न देखते हैं  
साह बह बतने हैं सदा लगती है जिस में ठेकर  
काम वह करने हैं जिस में कर देखने हैं।

इस देश-वर्णियों की दो बनीसी दशा है जब वे अपने

१. सुशा। २. हानि।

कर्तव्य को भूल जाते हैं, तो इनकी सुद्धि पर ऐसा आशङ्क जाता है कि उन्हें अच्छे घुरे की भी पहिचान नहीं रहती। अपने मित्र अमित्र का भी भान नहीं रहता जैसे कि कहा है—

सुखामद करते हैं गैरों की और आपस में लड़ते हैं।

युद्धी बरबादिया आती हैं युद्धी घर बिगड़ते हैं ॥

एक प्रकार से तो हम बड़े भाग्य-शाली हैं कि इनका जन्म इस आर्य देश में हुआ जिस की सम्भ्रता सूर्य के सग चमक रही है, जिसका जीवन-उद्देश्य ऊँचा और पवित्र रहा है जो स्वायत्ता को एक रोग समझता आया है और दूसरों के लिये सब कुछ न्योच्छावर कर देने में अपना सुख मानता है। ऐसे देश में उत्पन्न होना एक गौरव की बात है। आज भी हम अमानक कलह-फ्लेश लड़ाई भगाड़ों के झमाने में सारा संसार भारत की ओर आशा की दृष्टि से देख रहा है कि यह भारत हमारा नेतृत्व करे। हमें जीवन-उद्देश्य बताए और हम आप दिनों के संकटों से मुक्त करे। परन्तु दूसरी ओर हम ऐसे अभाग्य प्रभाषित हो रहे हैं कि ऐसी सुन्दर एवं पवित्र सम्भ्रता की ओर अपने महापुरुषों के शुभ नाम को कलङ्कित कर रहे हैं। हम हम भूमि पर भार रूप बन कर, स्वार्थ और महालोभ में फँस कर अपनी सम्भ्रता की नाम-शेष कर रहे हैं। आज हमारा जो प्रेम धन में ही रहा है, वह हमें अखनति की ओर लेजाने वाला है जसा कि एक कवि ने कहा है—

चान्दा के दुन्दुआ के बदले लाम्बो नन पक जात है

बिक जात है दुम्ना मून दुम्न की असमस्त बिन जात है।

इशक की चाहन बिक जानी है जिसे महज्वन बिक जाती है

लाम्बो जीवन बिक जान है, लालच के बाजार में आकर ॥१॥

खान्दी के टुकड़ों के बदले, नाने खुदा बिक जाते हैं  
 लुझा ने ईनां की बेचा, पट्टिडत ने खुतखाने बेचे ।  
 भक्ति के काशाने बेचे, मदियों के अफसाने बेचे  
 अपने धर्म की शान को बेचा, तालच के बाजार में आकर ॥२॥  
 खान्दी के टुकड़ों के बदले, देश पुजारी बिक जाते हैं  
 बिक जाते हैं धर्मपुजारी, लुटते पूंजी धर्म की सारी ।  
 सब कुछ लुटा है घारी घारी, ऐसी अकल गई है मारी  
 हम संनारी बिक जाते हैं, तालच के बाजार में आकर ॥३॥

यह नियम है कि जब महा लोभ आत्मा पर छा जाता है,  
 धन एकत्रित करने के अतिरिक्त उसे और कुछ दिखाई ही  
 देता और वह उसी में पागल सा हो जाता है, जैसे कि  
 है—

शैतान से दिल को रख<sup>१</sup> हो जाता है  
 दुराचार<sup>२</sup> इन्सान को जून्त<sup>३</sup> हो जाता है ।  
 हृद से जो सवा हो हिस्से<sup>४</sup> व खुद-बानी<sup>५</sup>  
 अक्सर है यही कि खन्त<sup>६</sup> हो जाता है ॥

इस समय हमारी यही दशा हो रही है । हमने अपने धर्म,  
 नै, कर्म, हमने<sup>७</sup>, मर्म<sup>८</sup> का निश्चिन्नाय भी विचार नहीं ।  
 यय वासना का बाजार गम है, दिल में हमारे धर्म है, बुद्धि  
 हमारे भरम है, प्रेम और सेवा का भाव दिल्कुल नर्म है ।  
 ला इस दशा में हम अपने देश और सभ्यता को बदनाम  
 में बान नही ला और क्या है - आओ! अब हम अपने

१. नरक २. कठने ३. मननप्रद ४. लभ ५. स्वयं  
 ६. संत ७. धर्म ८. धर्म

मनीष की रक्षा के लिये, अपनी सभ्यता को पुनः प्रकट करने के लिये, अपने पूर्वजों के नाम की सज्जा रखने के लिये इस देश से जाओ, अपने कर्तव्यों को समझें, अपने उद्देश्य को संभालें और फिर से अपने देश एवं धर्म की रक्षा को ऊँचा करें। हमें हमारे मूर्खों का ज्ञान तभी हो सकता है जब हम अपने शास्त्रों को पढ़ें, अपने पुराने इतिहास की छानबीन करेंगे और अपने महापुरुषों की जीवनियों का स्वाध्याय करेंगे। महापुरुषों के जीवन का लक्ष्य प्रकाशस्वम्भ है जिन के सहारे हम अपना मार्ग खोज सकते हैं और अपने जीवन-उद्देश्य को समझ सकते हैं। जिस मार्ग का जीवन चरित्र आप के सामने उपस्थित किया जा रहा है, वह ने अपने विविध जीवन द्वारा एक उदाहरण सदा दिया है। अपने मनोहर उपदेशों से हजारों मनुष्यों को इस घोर निराशा जगा कर कल्याण मार्ग पर डाला है, देश व जाति के भेदों को ऊँचा करने के लिये अपना जीवन अर्पण किया है तथा संकट सह कर लोगों के संकटों को दूर किया है।

यह माना कि ऐसे महान व्यक्तियों का जन्म किसी वा सम्प्रदाय में होता है, परन्तु उनकी अमूल्य शिक्षाएं सब के लिये होती हैं। जैसे कि सूर्य उदय तो एक दिशा से होता है परन्तु उस का प्रकाश चारों दिशाओं के अन्धकार को दूर करता है। ऐसा ही महापुरुषों का उपदेश सब के लिये होता है। उनका लक्ष्य सार सार का भलाई करना होता है। उनका जीवन वाचक जीवन का पदकर तथा उनका रहस्यमय जीवन का ध्यान करके आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयत्न करें।



# जैन कौन है?

एक गवा ने पूछे जो अनूले इमलाम  
 पाह ने दूरासी स किया हम से बलाम ।  
 होला कि हज्ज मोतहिद हों जिस से  
 ऐसी मिलित और ऐस मरहब को सलाम ॥

एक शहर मुझे एक जैन सभा में टहरने का बदमा  
 म हुआ । एक सज्जन ने मेरे वहां टहरने का प्रस्थ किया  
 । मैं हरीश सभा से मैनेजर से पास पहुँचा । जिस भाई ने  
 मेरे टहरने का प्रस्थ किया था, उसका नाम लेबर और अपना  
 रिश्ता देबर वहां स्थान देने के लिए धर्मनाही । इस पर  
 हरीश मैनेजर को मेरे साथ को लाहौर हूँ, वह नीचे लिखे  
 अनुसार है

मैनेजर - क्या 'बन' 'द' टहरने ?

मे - 'बन' 'द' टहरने का एक सज्जन टहरने का है एक का  
 'द' टहरने का एक का 'द' टहरने है 'द' टहरने का 'द' टहरने का  
 'द' टहरने का एक का 'द' टहरने टहरने

मैनेजर - 'द' टहरने का सज्जन टहरने का टहरने टहरने टहरने  
 टहरने टहरने है

मे - 'द' टहरने का 'द' टहरने टहरने टहरने टहरने टहरने टहरने  
 टहरने टहरने टहरने टहरने टहरने टहरने टहरने टहरने टहरने  
 टहरने टहरने



मैनेजर — हम किसी को नहीं जानते । किराया आ  
करेगा ।

मै — मैंने यह तो नहीं कहा कि मैं किराया न दूँगा  
साधारणतया होशियार आपसे निवेदन किए हैं ।

मैनेजर — आप जैन हैं या अजैन ?

मै — मैं जैन भी हूँ और अजैन भी ।

मैनेजर — यह कैसे हो सकता है । आप मुझ से हँसी करने

मै — हँसी करना मेरे स्वभाव और धर्म के विरुद्ध है । मैंने  
आपसे निवेदन की है ।

मैनेजर — आप तो विभिन्न मनुष्य प्रतीत होते हैं, एक ही मनुष्य  
जैन और अजैन दोनों कैसे हो सकता है ? मैंने तो  
तक पैसा न देना है और न ही सुना है ।

मै — आप देखें मैं लोत्रिय और सुन भी लोत्रिय । जहाँ  
मगवान कीर के मन्दिर और सिद्धांशों का सम्बन्ध है  
इन्हीं दिनों ज्ञान में जानता हूँ और इन्हीं जीवन में  
क शिष्ट व्यवहार प्रयत्न करता हूँ । मगवान कीर को मैं  
का सम्मान पर मान बान लोत्रिय मानता हूँ । मैंने  
का जीवन धर्म 'अहिंसा' अपने आप को कृप-कृत्य  
है इस 'अहिंसा' में जैन हूँ । परन्तु महात्मा का  
जैन ममता के आकार और व्यवहार का सम्बन्ध है ।  
मैं हूँ मगवान अजैन रहना चाहता हूँ

मैनेजर — आप 'अहिंसा' काटन लगाने । स्पष्टतया  
'अहिंसा' अपने आपको के बारह प्रत्यक्ष किए



मै—मै ने तो यह सुना है कि जैन या जिन यह है कि अपनी इन्द्रियों को जीत लिया है। अपनी जिह्वा को अन्य इन्द्रियों को बरा में कर लिया है। पहला धर्म मै ने अहिंसा का सुना है। इस धर्म को धारण करने का किसी को मन, वचन और काया से बिना कारण नहीं देवे। अब मै यही देखता रहता हूँ कि जिन माण्डवों बारह धर्म लिए हैं और अपने को जैन कहते हैं, वे एक व्यावहारिक जीवन में इनका पालन करते हैं।

मैनेजर—हां! यह सब कुछ ठीक है, परन्तु फिर आपका तात्पर्य है?

मै—मै यह देखना हूँ कि यदि वास्तव में इन धर्मों को धारण करने से मनुष्य के चरित्र का विकास होता है। उसी बोल-चाल पर रहत-मन का ढंग सुधर जाता है, तो मैं भी धर्म धारण करूँ अन्यथा धर्म के विशेषण लगाने से दिखावे से क्या लाभ?

मैनेजर—तुम्हारी बातें कुछ बहकी सी हैं। तुम अपना मत साफ क्यों नहीं कहते?

मै—मै साफ कह हूँ नाराज तो नहीं हूँ? पहले मै आप एक कवि का चरमान सुनाता हूँ—

एक गधर ने पूछे ओ अमृते इमनाम  
 बाल ने दुगनी म किया कम से नाम ।  
 बाला 'क' दृष्ट मालकद ही जिन के  
 क्या 'म' जिन और 'म' मरहब को सनाम ॥

गधर ने आप से। मरहब मरहब गए होंगे ।

ज०—तो आप यह बात मुझ पर लागू करते हैं।

—निस्सन्देह ! आप ने अपनी बातचीत और व्यवहार से जैन धर्म की शान को ऊँचा नहीं किया। मेरे हृदय में जैन धर्म के लिए जो श्रद्धा है, उसे धक्का लगा है। यद्यपि मैं यह भी समझता हूँ कि मेरे या आप के विचार या व्यवहार से किसी भी धर्म की सच्चाई या महत्त्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मेरा यह कहना भी भूल है कि किसी एक मनुष्य के व्यवहार को देख कर उसके धर्म के विषय में कुछ निश्चय किया जावे। परन्तु फिर भी इस सत्य को भुलाया नहीं जा सकता कि वृक्ष उसके फलों से पहचाना जाता है। जिस धर्म के अनुयायी अपने धर्म की रक्षति चाहते हैं, उन्हें सर्व-प्रथम उस धर्म की श्रेष्ठता का यह प्रमाण देना चाहिये कि उन की सभ्यता उच्चकोटि की हो, क्योंकि मधुर वचन मनुष्यत्व की प्रथम कसौटी है।

मैंनेजर यह बातें सुन कर चुप हो गए। मुझे ध्यान देने के विषय में बातचीत होाने लगी।

मैं ने उपरोक्त घटना एक जैन भाई के विषय में आपके सामने रखी है। इस का कारण यह है कि यह जीवन चरित्र जिस में उपरोक्त लेख शामिल कर रहा हूँ, एक जैन महात्मा का है। दूसरा कारण यह है कि जैन धर्म अहिंसा को परम धर्म मानता है। अहिंसा की नींव पर ही इस धर्म का प्रासाद खड़ा है। इस लिए जैन भाइयों को अहिंसा का पालन करना चाहिए और बिना कारण हिंसा नहीं करना चाहिए।

मैं यह जानता हूँ कि जैन शास्त्रों में जैन गृहस्थों के अहिंसा

घन को जैन मुनियों के अहिंसा घन के समान नहीं रखा है। मुनि पूर्ण रूप से अहिंसा का पालन करते हैं, परन्तु जैन गुरुओं के अहिंसा घन की सीमा यही है कि वे निर्दोष प्राणियों को हिंसा न करें। बिना कारण और बिना आवश्यकता के मनुष्यों एवं वृक्षों जैन धर्म के अनुयायी को शोभा नहीं देता। अहिंसा के कारण मैंने उल्लेखित घटना नहीं लिखी है। परन्तु जैन धर्म की शान और मर्यादा को ये भी घटनाएँ कम करती हैं, यह मानवानी की आवश्यकता है। इसी दृष्टिकोण से उल्लेखित घटना पढ़नी चाहिए।

यह ठीक है कि ममय एवं दूसरे लोगों के आचार एवं व्यवहार का प्रभाव भी अवरण पड़ता है। और वर्तमान समय में मनुष्यों के चरित्र का काफी पतन हो चुका है। जैनों भी इससे प्रभाव में बच नहीं सकते, तो भी मैं यह अवरण कहूँगा कि जैन धर्म का मुख्य-मिशन अहिंसा होने के कारण जैन धर्म के अनुयायियों को अन्य लोगों के लिए आदर्श बनकर दिखना चाहिए। इस बात का मैं विशेष ध्यान रखना चाहिये कि जिस व्यक्ति को किसी संस्था का मैनेजर या प्रबन्धक बनाया जावे, उसमें ममय और मर्यादवादी का होना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि उसका भव्य-व्यवहार एवं व्यवसाय ही है। व्यावहारिक व्यवसाय में ममय का भव्य-व्यवहार का प्रभाव कम होता है। जैना कि उक्त व्यक्ति ने यह है।

यह बातें सब के ही मन में रहनी चाहिए।

स्वामी सदानन्द के द्वारा लिखित।

यह कि उक्त व्यक्ति ने लिखा है।

धर्म माले भड़वाई रहन्दे, ठाकर द्वारे ठग।

बिच नमोतां गहन कुसुतां पुन्हा आशिक रहन अलग ॥

ऐसा न हा कि जैन धर्म-स्थान भी इस कोटि में शामिल हो  
जावे और कोई मनचला इन प्रबन्ध-कर्ताओं का भी हिस्सा न देदेवे।

मनुष्य के लिए पहला आवश्यकता यह है कि वह विना-  
कारण नोकराक, कठोरता एवं असभ्य व्यवहार से बचे। एक  
कवि कहता है—

इनना ही आदमी मे समझिए कमाले फइम।

बितना कि एहतसाज करे वह फजूल से ॥

बिना कारण व्यथे ही मनुष्य के दिल में अभिमान  
और रागद्वेष व घुरे भाव पैदा हो जाते हैं। जब ये दोष  
जनता पर अपना प्रभाव डालते हैं, तब मनुष्य के हृदय में  
अशान्ति और चिन्ता पैदा कर देते हैं। जब जीवन की शान्ति  
ही नष्ट हो जाती है, तब जीवन का आनन्द ही क्या? अतः  
आवश्यक है कि मनुष्य अपने साथियों से अभिमान और  
असभ्यता से व्यवहार न करे। इस लिए एक कवि ने कहा है—

ओ दशर ओ तारु के पुतले तुम्हे इतना गरूर।

तेरे हम जिन्स और फिर तू ही रहे इन से नफूर ॥

हो के इन्सा फिर करे तू जका इन्सान पर।

क्या यही है आदमियत तेरे हाँ ऐ बैशाऊर ॥

किसी धर्म के दर्शन-शास्त्र का विकसित होना दूसरे  
लोगों पर इतना अन्ध प्रभाव नहीं डालता जतना कि उसके  
अनुयायियों का मनुष्यव्यवहार और संचरित्र, इस लिए एक काव  
कहते हैं—

मेरा कसूर हजने नासह करे मुआफ।

इमनाम यह नही कि माये पे हा शमाफ।



। परन्तु इन में विरुद्ध कोई तत्वही या भद्र अपने आप की  
 ही और दूसरों की छोटा समझता है, तो अच्छा है कि वह  
 मि को छोड़ दे और अपने स्वभाव का सुधार करे। अपने  
 भाव को नष्ट और महनशील बनाने का प्रयत्न करे। इस  
 दृष्टि एक कवि ने कहा है:—

आइं मूरत में गयी रह.

मुँह में अच्छा कह न कह ।

मन तो यह है कि कोई भी धर्म मनुष्य को दुरे व्यवहार  
 की शिक्षा नहीं देता, अभिमान या घमंड का पाठ नहीं पढ़ाता ।  
 यदि हम इन धर्मों के नाम की ही देखें, तो इन में विदित होता  
 है कि प्रत्येक धर्म मनुष्य को मज्जनता, नम्रता और मदाचार  
 की शिक्षा देता है । उदाहरण के लिए जैन शब्द के विषय में  
 मैं तो पहले ही कहा जा चुका है । जिन शब्द का अर्थ है अपने  
 मन और इन्द्रियों की वश में करना इसी प्रकार आर्य शब्द  
 का अर्थ है उत्तम, श्रेष्ठ, मध्य । मुनस्सिम का अर्थ है दूसरों की  
 सम्माननी चाहने वाला । मित्र का अर्थ है, सेवक, सहाचारी ।  
 ईनाई का अर्थ है हठरत ईसा का अनुयायी जिन का उपदेश है  
 कि यदि तुम्हारे एक गाल पर धप्पड़ लगाए, तो दूसरा भी  
 उसके आगे कर दो । अर्थात् इनके नम्र और महनशील बन  
 जाओ । परन्तु व्यवहारिक जीवन में हमारा आचरण इस के  
 विपरीत है । यही कारण है कि आज धर्म का नाम बदनाम हो  
 रहा है । बहुत से लोग कहते हैं कि मन्दिर में सुख और  
 शान्ति मिलेगी । मन्दिर में ही हम नम्र हैं । अन्त में लोग  
 'जैसे धर्म है, वैसे धर्म के लोग हैं' का प्रस्ताव करते हैं  
 । इन के मतों से ही हमें अपने आचरण के चरित्र पर हमें नज़र



में प्रमाणित करें कि धर्म को मानने वाले इतने भेद, व  
और संवामाची होते हैं।

मनुष्य की मनुष्यता की कमीटी उसका सदुपचार  
सदुपचार से रहित मनुष्य कागज के सुन्दर फूल के समान।

मीरत नहीं है जिस में यह मूल फूल है।

जिस गुल में यू नहीं, वह कागज का फूल है ॥

एक कवि ने लिखा है:—

मनु मनु नहीं तो फिर क्या है।

फूल में यू नहीं तो फिर क्या है।

बड़े लोग ऐसे जादू टाने की शोख में रहते हैं, कोई  
मनु मिट्टा बनना चाहते हैं जिस में वे दूसरा पर प्रकाश  
मैंने और कहे अपने बग में कर सकें। कुछ लोग किसी  
बड़ी की छानबान में रहते हैं, किसी ऐसे गुप्त की शोख  
है जिस में वे लोहे की तबिय को सातना बना सकें। पर  
मनु जानें हैं -

इसका सब में करना सम्भोष है तो यह है।

मनु काय की समझ, यह सम्भोष है तो यह है।

मनु यह है कि मनुष्य का गुण सब गुणों में ऊँचे  
इस का विशेष कारण यह है कि मनुष्य बड़ा इंसान जिस  
इसका गुण का इंसान की विशेषता मनुष्य की अन्तरात्मा के  
इसका गुण यह है गुण कर्मों का गुण है यह मनुष्य  
इसका गुण यह है मनुष्य का गुण यह है मनुष्य का गुण  
इसका गुण यह है मनुष्य का गुण यह है मनुष्य का गुण  
इसका गुण यह है मनुष्य का गुण यह है मनुष्य का गुण

मनुष्य का गुण यह है मनुष्य का गुण यह है मनुष्य का गुण  
मनुष्य का गुण यह है मनुष्य का गुण यह है मनुष्य का गुण

अतः सद्व्यवहार हृदय से होना चाहिए। सच्चा सदाचार सर्वोत्तम गुण है—

जब मिले जिससे मिले दिल खोलकर दिल से मिले ।  
इस से बढ़कर और खूबो कोई इन्सां में नहीं ॥

हां तो मेरा विषय यह था कि जैन कौन है ? इस का उत्तर निवेदन कर चुका हूं कि जैन वह है कि जिसे अपने आप पर कायू हो जिनके मन वचन और काया अपने वश में हैं । जैन भावरु का वारह व्रत धारण कराये जाते हैं । इस का भी यही चेहरा होता है कि वह अपने मन, वचन और काया पर विजय प्राप्त करे और सपनी जाबर जयतांत करे इन्हें कुन्तार्ग-गामी न बनने दे और इन का सदुपयोग करे । यहां इन व्रतों को संक्षेप से लिख देना अनुचित न होगा ।

(१) बिना कारण जान-वृत्त का किसी जीव को न नाशना और न ही उसे वष्ट देना ।

(२) यथाशक्ति अधिक में अधिक सत्य बोलना और झूठ बोलने से परहेज करना ।

(३) कोई ऐसी वस्तु न लेता जिस पर अपना अधिकार न हो ।  
अर्थात् स्थूल चोरी न बचना ।

(४) अपनी स्त्री के अतिरिक्त किसी अन्य से अपवित्र सम्बन्ध न रखना

५) घन शालन पधान परि-प्रद का लेभ न करना इन को न-गोद कहते हैं

६) अपने कर्म + न और अपने मन के मयादा करना

- (१) ध्यान पीने, पढ़ने तथा अन्य त्रीष नीचयोगों का प्रयोग नहीं करना। अर्थात् संन्यास में सेवा।
- (२) स्वार्थ नहीं करना और नहीं स्वार्थ काम करना।
- (३) प्रतिदिन कम से कम एक घंटा गुह्य हृदय में धर्म करना।
- (४) अपने कमरे में एक बार स्वागत करना अर्थात् दिन भर ध्यान में विन्यास।
- (५) प्रत्येक चतुर्दशी और अशुक्ल के दिन अधिकतर समय में कम से कम एक बार अर्थात् प्रार्थना पढ़ें। एक साथ १-२ घंटे ध्यान पूर्वक विन्यास।
- (६) मनुष्य मनुष्यों की आशा वाना आदि से सेवा और तीन दुश्मनों का महायत्न करना।

४. 'द्वयमेव' अर्थात् 'द्वय' है। 'द्वय' का अर्थ है 'दो'।  
 अर्थात् 'दो'। 'द्वय' का अर्थ है 'दो'।  
 अर्थात् 'दो'। 'द्वय' का अर्थ है 'दो'।

[illegible]

**THE UNIVERSITY OF CHICAGO**

बात चीत करने की कला में कुशल होना महान गुण है । जिस मनुष्य में यह गुण नहीं है, वह किसी भी सभा या मन्नायक में आदर प्राप्त नहीं कर सकता जो मनुष्य शाल चातक कला में कुशल नहीं है, उस की बुद्ध और ज्ञान अपूर्ण है । इस गुण से वंचित रहना दुर्भाग्य का चिह्न है । कल्पना कीजिए कि किसी शुभ अवसर पर मृत्यु और राग का वान चीत करना और इन के विरुद्ध शोक सभा में विवाह आदि का घटना या का वर्णन प्रारम्भ कर देना स्वयं हमों का पात्र बनना है । इस प्रकार का मूर्खता मनुष्य को कई प्रकार की विपत्तियों में डाल सकता है । जो मनुष्य अवसर और आवश्यकता के अनुसार बात चीत करना जानता है, उस के जीवन का बहुत सा भाग सुखी और सरल बन जाता है ऐसे मनुष्य से सभी लोग प्रेम से मिलते हैं और प्रत्येक का दुःखाला उस के लिये खुला रहता है । सभी लोग उस से मित्रता करने और उस में बात चीत करने में अपना गौरव समझते हैं । फिर इस कला से लाभ उठाने का प्रयत्न क्यों न किया जाए । क्या हमें अपनी उन्नति और प्रगति की आवश्यकता नहीं है ?

जैन शास्त्रों में बात चीत का दंग और सभ्यता सिद्धान्त के लिए बड़ा उपदेश दिया गया है परन्तु उस का वर्णन किसी और स्थान पर किया गया है । यहाँ पर कुछ और बातों का वर्णन किया जाता है :—

१. कम बोलना अच्छा है । इस से एक तो हमारा अमूल्य समय नष्ट नहीं होता, दूसरे दिमाग नहीं थकता । प्रत्येक बात का उचित अवसर देखना ही लाभ देता है ।

बिना अवसर और आवश्यकता के कोई बात  
कहनी चाहिए।

२. आवाज़ न तो बहुत ऊँची और न ही बहुत  
हानी चाहिये

मरन और मीचे ढंग से धीरे धीरे अपने विचारों  
पकट किया जाये। घुमा किया कर कोई पेचीदा बात  
को जाये। यह भी ध्यान रखना चाहिये कि जब कोई  
पूछी जा रही हो तब तक मुँह न खोलें जब तक  
उसका प्रश्न समझ न हो जाये

४. कभी कोई बात न कहे जिस से सुनने वाले को दुः  
ख और उसके माँसे पर बल पड़ जायें।

५. बात को बहुत न बढ़ाया जाये। चन्द्र राशियों में ही  
तात्पर्य स्पष्ट कर देना चाहिये। अथाग कर्म  
चाहिये कठिन बात को ठीक ढररे पर दे कर हल  
देना चाहिये

६. बाजार में गली के किनारे पर या घर के दरवा  
खड़े हो कर अधिक देर तक बातें न की जायें

७. मने हो आप हमारे में अच्छा जानते हो, परन्तु  
को बात बाट कर अपनी बात कहने के लिए शी  
करनी चाहिये।

८. अगानाग स्वयं ही न जानन जाना चाहिये। अपने  
को भी जानन का अवसर देना चाहिये

९. किसी को बुराई न करना चाहिये। और न ही  
सम्बन्ध से कुछ स्वयं बात कहना चाहिये।

बात चीत को झूठ से प्रभावशाली बनाने का प्रयत्न न करना चाहिये ।

सदैव तय्योगी बात अवसर के अनुसार कहनी चाहिये । पूछने पर बोलना चाहिये । जब किसी अन्य व्यक्ति से कुछ पूछा जावे, तो स्वयं मौन रहना चाहिये ।

किसी जाने वाले को तर्फ अँगुली से संकेत करके बात चीत न करनी चाहिये ।

बोलते समय गरदन को इधर उधर न घुमाना चाहिये । और न ही सिर को अधिक झुकाना चाहिये एवं बार बार सिर को न हिलाना चाहिये ।

बोलते समय बार बार धुक्का न चाहिये न ही दूसरी तर्फ मुँह करके बातें करना चाहिये और न मुँह बढ़ाना या सिकोड़ना चाहिये ।

बात करते समय मुँह को दूसरे के मुँह के न बहुत निकट ले जाना चाहिये और नही बहुत दूर, अपितु सम्यक्ता से काम लेना चाहिये ।

अपने साथी की तर्फ टिड्डीकी लगा कर न देखना चाहिये और नही बात चीत करते समय किसी और काम में लगना चाहिये ।

गन्दा हसी और असम्यक्ता-पूर्ण बात चीत न करनी चाहिये । न ही कभी गाली या गन्दे शब्दों का प्रयोग करना चाहिये ।

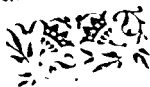
नाथे पर दल हात कर बात चीत न करनी चाहिये, प्रसन्नचित्त, प्रवृत्तिन मुख एवं मधुर और सुनीने शब्दों



ही किसी को डराता है। कभी कृतघ्न नहीं होता। सत्य चानता है। लोभ से दूर रह कर सन्तोष को धारण करता है। उसका हृदय साहस और लग्न से सुशोभित होता है। उसे मुँह नहीं मोड़ता। सांसारिक सुख से घृणा करता है। संयम की शरण लेता है।

इस प्रकार सच्चा मनुष्य वही बन सकता है जो धर्म के रस्य को समझ ले। धर्म वही है जो जैन भावक के १२ प्रव्रतों में दर्ज है। निस्सन्देह ये १२ प्रव्रत एक जैन धर्मानुयायी के लिये नियत किये गए हैं, परन्तु सत्य यह है कि ये प्रव्रत प्रत्येक मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने वाले हैं। जो इन्हें धारण करेगा, वह मनुष्यत्व के गुणों से भरपूर हो जावेगा।

स्वर्गीय श्री खजान चन्द जी महाराज लगातार पूरे ४२ वर्ष तक इसी प्रयत्न में लगे रहे कि जैन धर्म के अनुयायी सच्चे जैन अर्थात् सच्चे मनुष्य बन जावें। वे अपने कर्तव्य को समझें और उसे पालन करने का पूर्ण प्रयत्न करें। जिस के फलस्वरूप इन के जीवन में प्रकाश और सौन्दर्य का सम्मिश्रण हो। जिस से वे अपने धर्म और पूर्वजों के नाम को रोशन करें। महाराज भी को इस पवित्र उद्देश्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई जिस का विवरण जानें किया जावेगा। क्या ही अच्छा हो कि हम भी उपरोक्त बारह प्रव्रतों को धारण करके अपने जीवन को सफल बना सकें, ताकि अन्तिम समय पश्चात्ताप न करना पड़े।





# नास्तिक कौन है ?

वैश्वानुयायी साधारणतया बार फिरकी को नास्तिक  
 हैं अर्थात् जैन, बौद्ध, ब्राह्मण और देव समाजी ।  
 कहने के आ कारण बताए जाते हैं, उन में से एक तो  
 कि वे ईश्वर का नहीं मानते । दूसरा यह है कि वे देव को  
 प्रमाण नहीं मानते । परन्तु यह बात मुक्तिपुत्र प्रतीत नहीं ।  
 जैन आगमों को नास्तिक कहने से इन्कार करते हैं ।  
 अपनी बात का समर्थन करने के लिये जो मुक्तियों देते हैं,  
 का बड़ा लक्षित वर्णन करना असम्भित न होगा । मेरा मत है  
 है कि जब समय यह नहीं है कि हम परस्पर एक दूसरे  
 नास्तिक और अस्तु कह कर एक दूसरे से दूर दूर रहें और  
 के आकर । इस समय आगम और मेघ जोल को आशा  
 है । आमतौर पर कहा है, वह हमें इस बात के लिये कि  
 कर रहा है कि हम अपने विचारों का मूढ़ कर एक दूसरे  
 कहते या कहते एक दूसरे के गले मिलें, मगधित होकर ।  
 है । फिर का अपना उद्देश्य और विचार का ज्ञान प्राप्त है ।  
 इस को जैन के ब्रह्मण्ड का कहने के लिये प्रवृत्तियों हैं  
 जैन इस बात का उद्देश्य का समर्थन को करने हैं  
 जैन का मत है कि जैन आगमों का उद्देश्य है  
 जैन का मत है कि जैन आगमों का उद्देश्य है

हिन्दु जाति बड़ी बड़ी विपत्तियों और आपदाओं का सामना करने में भी नष्ट नहीं हुई। कई दूसरी जातियाँ और नभ्यताएं विकास में ही नष्ट हो गई हैं। परन्तु हिन्दु जाति और हिन्दु सभ्यता ज्यों की त्यों विद्यमान है; यह विचार श्रेष्ठ है परन्तु इस विषय में एक बात हृदयगम करने की आवश्यकता है।

निम्नन्देह भूत काल में हिन्दू जाति कायम रही, क्योंकि गैर इन को हड़प जाना चाहते थे। वे इसके अस्तित्व को मिटाना चाहते थे। किन्तु यदि हिन्दु जाति स्वयं अपने नाश के लिये कटिबद्ध हो जाये, तो उसे कौन बचा सकता है। इस समय हिन्दु जाति की यही हालत है। यह स्वयं कहीं विभक्त हो कर, कहीं छुआछूत देखाकर और कहीं स्वार्थ के बशीभूत होकर ऐसे कुनार्ग पर चल रही है कि अब विरोधियों को इसे नष्ट कर देने में किसी विशेष परिश्रम की आवश्यकता न पड़ेगी। शत्रु का सामना किया जा सकता है और उसे पराजित भी किया जा सकता है, परन्तु अन्दर का रोग मनुष्य को अन्दर ही अन्दर समाप्त कर देता है।

जिस लकड़ी को अन्दर से घुन खा जाए, वह जरा सी ठोकर से टुकड़े टुकड़े होकर पृथ्वी पर गिर पड़ती है। हिन्दु जाति ने अपने को घुन लगा लिया है। सबसे बड़ा घुन का कीड़ा जाति-अभिमान है। जब तक यह कीड़ा हमारे मस्तिष्क से नहीं निकलता, हमारी रक्षा कठिन है। दूसरा कीड़ा धार्मिक विरोध के कारण एक दूसरे को कुचलने का प्रयत्न है। उचित यह है कि हम इन कीड़ों का नष्ट-भष्ट करें।

अब इन पुक्तियों का जो जैन धर्मानुयायी अपने आस्तिक सिद्ध करने के लिए देते हैं, यहाँ बखन किया जाता

सिद्धान्त के अनुसार नास्तिक हमें कहते हैं जो  
अस्तित्व में थी। मोक्ष मार्ग में विश्वास न हो।  
अपरोक्ष नियम ठीक मान लिया जाये, तो केवल बाह्य  
नास्तिक रह जाते हैं। जैन धर्म और जैन शास्त्रों का  
काने बाह्यो को ज्ञान होगा कि जैन धर्म इन सबको  
मानता है। अब रही दूसरी बात येशू को न मानने की।

हिन्दु धर्म में कई ऐसे सम्प्रदाय हैं जो वैदिक  
को नहीं मानते। अष्टादशार्थ सृष्टि की उत्पत्ति के  
अभिप्रेत। अथर्व मुनि तो इस सिद्धान्त की इसी  
बातबुझी ऐसे ईश्वर का वर्णन करता है जो सृष्टि का  
वैशाल्य भी अपरोक्ष सिद्धान्त को नहीं मानता। स्वामी  
तो इसे आध्यात्मिक कहते हैं। मीमांसक भी किसी  
नहीं मानते। मीमांसा शास्त्र में तो इस के विरुद्ध बड़ी बड़ी  
साधक बुद्धिवा भी दी गई हैं।

केवल दो हिन्दु धर्म—नैवादिह और  
अर्थ के अपरोक्ष सिद्धान्त को मानते हैं।  
और अथर्व को अनादि ही मानते हैं। यदि ईश्वर  
सृष्टि का धर्म न मानने के कारण ही जैन धर्म को  
कहा जाये, तब अपरोक्ष हिन्दु धर्म भी इसी बोट में  
है। नास्तिक धर्मों की कमोर्दी के प्रायः तीन  
अर्थों में अर्थ है। अथर्व अर्थ है अथर्व, मोक्षमार्ग  
अथर्व के अर्थ अथर्व का अर्थ अथर्व का अर्थ। अपरोक्ष  
सिद्धान्त हिन्दु धर्म के अर्थ अर्थ है अर्थ जैन धर्म है  
अर्थ का अर्थ अर्थ अर्थ है अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ  
अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ

यों का विचार करने की आवश्यकता नहीं। यहाँ तो केवल सिद्ध करना है कि इस विषय में जैन शास्त्र और अन्य हिन्दुओं का सिद्धान्त एक ही है। इस लिये ईश्वर की सृष्टि कर्ता न होने के कारण जैन धर्म की नास्तिक कहना अन्याय है।

सिद्धान्त बौद्धों के सूत्र १६१० में पाणिनि ऋषि की भाषा के अन्वय ४ पाद ४ सूत्र ६ का अर्थ लिया गया है कि तब वह होता है जो परलोक को मानता है और नास्तिक वह है जो परलोक को नहीं मानता। जैन धर्म परलोक को मानता है, इस लिये उपरोक्त हिन्दु ग्रन्थ के अर्थानुसार वह नास्तिक नहीं।

जैन धर्म का दूसरा प्रसिद्ध सिद्धान्त कर्मवाद है। जैन मानता है कि जब मनुष्य किसी कार्य को करने का विचार करता है, तब भी वह उस कर्म का कर्मा माना जाता है। भावकर्म कहते हैं। जब मनुष्य बाटा से उस कार्य को कर लेता है, तो उसे कुछ कर्म कहते हैं। जैन धर्म मानता है कि कर्मों परमात्मा-कामात्मा-वर्मात्मा जीव के अन्धन का कार्य बन जाती है, जो जीव उन्हें स्वयं करे या दूसरों को करने की प्रेरणा करे अथवा जो वे बिचे कर्मों का समर्थन करे। फिर बिचे हुए कार्य जीव के समर्थन रहते हैं अतएव बिचे हुए कामात्मा, वर्मात्मा का अन्ध कर्मों बनकर माना न करते। जैन धर्म यह भी मानता है कि जब जीव कर्मों का एक कर देता है, तो पूर्ण कुछ और सर्वत्र ही कर माना बन जाता है। फिर वह कामात्मा वर्मात्मा और अन्धन को मान लेता है। जैन धर्म दुष्टा का परमात्मा का इस रूप में मानता है। परमात्मा का दुष्टा का मान परमात्मा का अन्धन मानता है। जैन धर्म नास्तिक धर्म के नास्तिक धर्म का अन्धन और जीव को मानता है।

जैन धर्म मुक्त-आत्माओं का फिर संसार में जन्म स्वीकार नहीं करता। वेने ही हिन्दु धर्म की प्रायः सभी मूल जीवन का संसार में दोबारा जन्म पारण करना भी जैन धर्म अवतारवाद का समर्थन नहीं करता।

इस से इनकार करना है। जब मोक्ष के स्वभाव की विधि तो जैन धर्म मानता है कि मोक्ष प्राप्त करने के लिये मोक्ष-साधन और मोक्ष-साधन की विधि है। अर्थात् मोक्ष के साधन-विधि स्वभाव को करने स्वभाव में विचार करना और साधन की अनुसार विधि साधन स्वभाव करना, ये तीनों विचार हैं। वैदिक धर्म में कोई स्वभाव या विचार अर्थात् साधन-विधि के विषय नहीं मानता है, वह केवल और केवल विधि का ही। परन्तु जैन धर्म इन सबको मानता है। इस में तो जैन धर्म तथा जैन विचारों में कोई विचार अभाव नहीं है।

१. ईश्वरजी देवताजी के अस्तित्व का मान्यता है।  
 २. ईश्वरजी का रूप और स्वरूप आदि देवता माने जाते हैं।  
 ३. ईश्वरजी के अस्तित्व के प्रति सभी मान्यता है।  
 ४. ईश्वरजी के अस्तित्व के प्रति सभी मान्यता है।  
 ५. ईश्वरजी के अस्तित्व के प्रति सभी मान्यता है।  
 ६. ईश्वरजी के अस्तित्व के प्रति सभी मान्यता है।  
 ७. ईश्वरजी के अस्तित्व के प्रति सभी मान्यता है।  
 ८. ईश्वरजी के अस्तित्व के प्रति सभी मान्यता है।  
 ९. ईश्वरजी के अस्तित्व के प्रति सभी मान्यता है।  
 १०. ईश्वरजी के अस्तित्व के प्रति सभी मान्यता है।



इस से बढ़कर वेद की निन्दा क्या हो सकती है। सिद्ध वेदों को सूत्रप्रमाण मानने के सम्बन्ध में गुरुमत प्रकाश दे देविए। सन् १६२२ के सस्करण के पृष्ठ ६४१ में लिखा है कि "वेद शास्त्र के सम्बन्ध में यह विश्वास रखना कि वे ईश्वरी वचन हैं और ग्रन्थ सादृश्य की तरह परमात्मा का ठीक रूप कराने वाले हैं, तो यह एक भूल है"। इस से बढ़कर सूत्र प्रमाण हो सकता है कि सिद्ध वेदों को सूत्रप्रमाण नहीं मानते। इस विचार से सिद्ध धर्म भी नास्तिक है। परन्तु इन्हें नास्तिक नहीं मानते। फिर जैन धर्म के साथ ही यह बुरा व्यवहार क्यों।

मैं जैन धर्म की तरफ से बकील तो नहीं हूँ, परन्तु मैं वे वस्तुस्थिति निवेदन की है और समय की आवश्यकता बताती है। प्रत्येक दृष्टिबिन्दु से यही सिद्ध होता है कि जैन नास्तिक नहीं है।

नास्तिक वास्तव में वे हैं जो दुराचारी और पापी हैं, मांस मदिशों का सेवन करते हैं, विषय विकारों में प्रस्त हैं, देश द्विन्दारी नहीं और अपने देश-वासियों से प्रेम नहीं करते, शास्त्रों के अनुसार अपने जीवन को पवित्र और श्रेष्ठ नहीं बनाते। अब प्रत्येक भाई आत्मनिरीक्षण करके देखे कि नास्तिक कौन है ?

यह मैट्रिक धर्मी भाइयों की सेवा में नम्रनिवेदन है। अब जैन भाइयों से भी प्रार्थना है कि वे अपने संकुचित क्षेत्र के दायरे से निरुक्त कर अपनी मिश्रता और सहयोग के क्षेत्र को विस्तृत करें। इन्हें भी यह न समझना चाहिए कि जो बारह श्रमों का समान तोर पर धारण करे वही जैन है। परन्तु मेरे विचार में जो व्यक्ति अपने जीवन में बारह श्रमों का पूर्ण रूपेण उतार नेता

१, बड़ी घास्तव में सदा जैन है। जैन भाइयों को भी डेढ़ ईंट की इमारत अलग न बनानी चाहिये वे अपनी भट्ठा हट्ट रखें, अपने मेढान्तों पर बायन रहें, परन्तु अपने आप को हिन्दु जाति का ही एक अङ्ग समझ कर इसे शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न करें। जिस समय जैनियों की तरफ से सच्चे प्रेम की अभिव्यक्ति होगी और शस्त्रबिहिन सहयोग प्रकट होगा, तो समाज की कोई शक्ति इन्हें अपना प्रिय माथो समझने से वैदिक-धर्मियों को नहीं रोक सकती। दिलीभावना की सार दोनों तरफ से बजती है। जो राज का आदेश एक तरफ से निकलेगा, दूसरी तरफ इसका न्याय पड़ना और उत्तर मिलना आवश्यक है। यह प्रकृति का घटल निदान्त है। इसे कोई बदल नहीं सकता।

श्री रघुनान पन्ध जी महाराज संगठन के बड़े समर्थक थे। वे अपने उपदेशों में संगठन पर बहुत जोर देते थे। बड़े स्थानों पर इन के उपदेशों से प्रभावित हो कर वैदिक धर्मियों और जैन भाइयों ने मिलकर हिन्दु-महासभा की स्थापना बायन की। इस कारण बड़े स्थानों पर आप की आर्चसभा और मनादनधर्म उभा ने भी अभिनन्दन पत्र पेश किए। आप भी साधारणतया गुरुप-नाम का और बिदेय रूप में हिन्दु-जाति का प्रेम और संगठन चाहते थे।





# दुनियां में अमन कैसे हो?

करे वान जिम से भी तू माफ़ कर,

औं रौनान भी हो तमसे इन्माफ़ कर।

न हो इस ताफ़ न हो उस तरफ़,

बधर झुट कि इनमाफ़ हो त्रिम ताफ़।

मराकन हो दिल में तो दिल साफ़ दे,

आमन में मराकन यह इनमाफ़ दे।

आज बीमार में ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ कि  
एलानि का मायाध्य हो। बहुत से देशों को तो इस मर्यादा  
महापुरुष ने नष्ट कर दिया है। जहाँ की इमारतें, का  
और निशान सब मिट चुकी है। लाखों मरिक्कों बिना  
क हो गई हैं। लाखों बच्चों के मिलों में अपने माता पि  
छोड़कर चले गए हैं। आनंदान के आनंदान के घर  
हैं ही और गाँव गाँव अपने राख छोड़कर दूसरे देशों को।  
दिले हुए हैं। यह तो हाथ हुआ कि देशों का जहाँ कि कुछ  
मवा का झुटिम देन में कुछ की आता नहीं बरुंथों का  
अमन-अमन और केवेना भीतर है। बड़ा आता बराय और  
का बला है, बड़ी बड़ी बला का ब मायावी है। न गों है  
कनी को बड़ का गद है बड़ी मर्यादा आता न बड़ा मर  
है। बड़ा बड़ा बड़ा मर बला में बला का बला दे न  
मर बड़ा मर बला मर बला है। मर्यादा का मर्यादा  
मर बड़ा मर बला मर बला मर बला मर बला मर बला  
मर बला मर बला मर बला मर बला मर बला मर बला

इस में कोई सन्देह नहीं कि साईब ने बड़ी उन्नति की है। मार्ग वर्षों में पार होता था वह अब घण्टों में काटा जाता है जो कार्य महीनों में पूरा होता था वह अब कारखानों द्वारा घण्टों में पूरा किया जाता है। भोगोपभोग की सामग्री अधिक होती है। पहले जहाँ वर्ष में एक दो फसल उठाई जाती थी चार चार उठाई जा रही हैं। प्रत्येक प्रकार के फल, पुष्प, शाक प्रत्येक ऋतु में उत्पन्न किये जा रहे हैं। पहले चर्खा कर और खड़ी पर बैठ बैठ कर महीनों में कहीं जाकर कड़ा तय्यार होता था किन्तु आज हजारों लाखों कारखाने एक दिन में लाखों गज कपड़ा तय्यार कर रहे हैं। इतने पर भी दशा यह हो रही है कि दुष्काल पहले से अधिक बढ़ रहे हैं। इसके कारण बहुत से लोग मर रहे हैं। पहले कोई बिरला ही कड़ा न मिलने के कारण नङ्गे जिस्म फिरता था परन्तु आज केवल जोबित मनुष्यों को अपना तन ढांपने के लिये बख्त मिलता अबितु मुद्दों तक को कलन नहीं मिल रहा। सारांश यह है कि खान पान और पहरे की वस्तुओं की कमी के कारण स्थान स्थान पर बेचैनी है। पहले कहा जाता था कि युद्ध की आवश्यकताओं के कारण यह कमी हुई है परन्तु अब युद्ध भी शांत हो चुका है और अशान्ति फिर भी बढ़ रही है। यहां पर मैं एक खास स्थान का बिकर कर देना चाँही होगा। मैंने के समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ था कि अहमदाबाद में ६८ कपड़े का भिन्न हैं और वन में साठ हजार गाँठ कपड़ा तय्यार होता है। परन्तु अहमदाबाद के निवासियों को पिछले दो मास में एक गज भी कपड़ा नहीं मिला। क्या इस से माँ कर कई आवश्यकतायें बात हो सकती है ?



वे अपनी विजय और सेनाओं से लिये मार्ग साफ कर लें,  
 और सारे राज्यों को हम हम प्रचार पाँस लें कि ये हम न मार  
 दें।





स्वयं प्राप्त हैं। अब इन दो शर्तों को सम्मुख रखने हुए  
की समस्या पर विचार किया जाता है—

भारतवर्ष इस समय एक रूप से स्वाधीन देश  
है। इसका कारण यह है कि इङ्गलिस्तान की आर्थिक दशा  
कारण बहुत गिर चुकी है। वह एक दृष्टि से श्रेष्ठ होकर  
के हाथों बिक चुका है। वैसे भी इङ्गलिस्तान व्यापारिक  
तथा अन्य साधनों में अमरीका का मुकाबिला नहीं कर सकता।  
इस लिये कुछ तो इस निर्भरता के कारण और कुछ शर्तों  
शर्त नं० २ के कारण अब इङ्गलिस्तान यदि भारतवर्ष  
स्वतन्त्रता न दे और अपने अधीन ही रखे तो उसे दो  
शक्तियों की भी व्यापार आदि के अधिकार देने होंगे। इस  
साथ ही शर्त नं० १ भी बड़ा महत्व रखती है। यदि मा  
रूस और अमरीका से गठजोड़ कर ले तो इङ्गलिस्तान किन्तु  
आउट हो जाता है। यद्यपि भारत इतना बेसमझ नहीं कि एक  
सांकल अपने पाँव से निकाल कर दूसरी सांकल अपने पाँव से  
ढाल ले फिर भी इङ्गलिस्तान को तो भय अवश्य है। इस लिये  
इङ्गलिस्तान के लिए एक ही मार्ग रह जाता है कि भारतवर्ष को  
स्वतन्त्रता दे दे और इस देश में अपने व्यापारिक और सैनिक  
अधिकार बनाए रखे। इस रूप में रूस और अमरीका दखल  
नहीं दे सकते। इस में कोई सन्देह नहीं कि इङ्गलिस्तान को  
बर्तमान भयदूर दृढ़मत पिछली चर्चिल की शानराना बल  
बलने काभा में कहीं अधिक बढ़ा है। वह "स्वयं जीवो जीवो  
दूसरों को मारे दो" के सिद्धान्त को अधिक मानती है। इस  
नमान कारणों का यह एक सामूहिक परिणाम है कि इङ्गलिस्तान  
विमल हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, ईराक, ईरान, हिन्दुस्तान को  
बल मय बल का काली क नज्जो पेश कर रहा है। शान

लिये हो रही है कि कहीं रूस या अमरीका इन देशों को अधिक आसानियां देकर इन से समझौता करने में पड़ल करें।

हिन्दुस्तान को जो आजादी दी गई है, वह इन्हीं हालात वजह से है। इंग्लैंडिस्तान चाहता है कि देश को स्थिर कर ले बाली ऐसी आजादी देकर अपने पुराने व्यापारिक अधिकार बचाए रखे और भविष्य के लिए अपने सैनिक अड़े फायम करे।

ये सारे हालात एक तो पाठकों की जानकारी के लिये दिये गए हैं, दूसरा सास उद्देश्य यह है कि संसार में उस समय की शान्ति होनी असम्भव है जब तक कि स्वार्थता, लूट खसूट और दूसरों के अधिकारों को छीनने की लालसा दूर न हो। धर्म, शान्ति, शान्ति और परमात्मबल इस घेरेनी और अमन की दूर नहीं कर सकते। सच्ची शान्ति तो अहिंसा, अहिंसा और सदाई से ही हो। सच्ची है जिसका उपदेश अटोई और वर्ष पूर्व भगवान् महावीर ने दिया था और जिस के सहारे अहिंसा के अवतार महात्मा गांधी ने हिंसालक दृष्टियों सामना करते हुए पचास वर्षों में ही सन्तुष्ट देश स्वतन्त्रता के द्वार पर ला खड़ा किया और अब इस देशनिवा-  
सियों का यह मतव्य है कि अमन इस स्वतन्त्रता का अनुचित उपयोग और अपने देश तथा सारे समार का भलाइ करे और  
हो, महात्मा गांधी ने ही अहिंसा का समार में एक अवलम्ब  
महात्मा उच्युत कर 'दण्ड' है 'क' स्वतन्त्र विना दुष्ट के भां प्रान  
होना जा सकता है समार के अनुप्य अहिंसा और शान्ति के  
रा अपना 'अमन' अमनराज, बदार्ग, सदा ही संसार



शान्ति का साम्राज्य फैलता चला जायगा। परन्तु लालसा और निर्देयतापूर्ण व्यवहार समाप्त न होंगे, दुनियां में अमन कायम नहीं हो सकता। लड़ाई मगड़े का कारण स्वार्थान्धता है। यह जब तक दूर न हो, अर्थों न हों, विचारों में शुद्धता न हो, दूसरों को बिना दुःख देने और सताने का अपवित्र विचार दूर न किया जाय, जब तक अमन स्थापित नहीं हो सकता। यही भगवान् का उपदेश है जिसे आज जैन मुनि घर घर सुनाते हैं। यही वह उपदेश है जिस को सुनाते सुनाते श्री स्वज्ञान बन महाराज ने अपना जीवन समाज के लिये अर्पण कर दिया।

स्वार्थान्धता के रोग को दूर करने का उपाय धन की तथा राजनैतिक शक्ति को प्राप्त करना नहीं, अपितु इन के प्रयत्न करना तो बड़ा लोभ और लालसा की भाग को और बढ़ावा दे तथा इस से और अधिक मात्रा में बेचैनी के बन्धन को फैलती है। इस का उपाय है आत्मा को ऊँचा करने दिल को नेकी और भलाई की ओर लगाना। छोटा हो अन्धारा और निर्देयतापूर्ण व्यवहार से मनुष्यसमाज सम्पूर्ण न तो आज तक कभी मुक्त होई और न जाये। मुक्तमग्रे। इन को मुक्त करने के लिये मनुष्य में मनुष्य होने की आवश्यकता है। मनुष्यता का पहला लक्षण यही है। दूसरों के साथ बड़ी नराम्य करीबी जुड़ना चाहने हो कि वे दुःख साथ करें। भगवान् महावीर ने यही कहा था कि सब से उ है। सभी जाना चाहते हैं। मरना कोई भी नहीं चाहता।

१ मन्व जीवार्थ इच्छन्ति, जीवित न मारं ज्ञतः। दशबैद्ये मन्व कथ्याय ६ गया ११



सब दृष्टि भाः आत जीन से जो गुरुमुख बन रहा है  
 को बसावा हो रहा है, क्या नहीं वे सब दृष्टि नहीं? है  
 हुआ है। परमात्मा एक बात को कभी है। नहीं कभी नहीं है  
 कहा रहा है। इसी कभी ने जो न गुरुमुख को आग्रह को  
 सना समझा ही भी। इसी कभी ने हस्तन मरुमर को  
 नमन समझा को भी। यह कभी है अन्तर्गत  
 सब एक भावना होकर न हो। सब एक मुख देना को। एक  
 कि जो न भी हस्तन को नहीं गुरुमुख मरुमर। भावना को कि  
 नमनस्य मरुमर को यह गुरुमुख है यह इसी गुरुमुख है।  
 मरुमर को 'दृष्टि' है कभी अन्तर्गत को 'दृष्टि'। सब दृष्टि  
 व कभी अन्तर्गत 'मरुमर' है। मरुमर को नमन को नमन  
 मरुमर को 'कभी' है नमन गुरुमुख को 'दृष्टि' नमन को 'दृष्टि'। यह  
 कभी 'दृष्टि' है अन्तर्गत को 'दृष्टि' मरुमर है। मरुमर-

कभी है नमन नमन को 'दृष्टि' है।

मरुमर को नमन को 'दृष्टि' है मरुमर को 'दृष्टि' है  
 मरुमर को 'दृष्टि' है मरुमर को 'दृष्टि' है

कभी को मरुमर है नमन गुरुमुख को 'दृष्टि' है

को है नमन मरुमर को है नमन मरुमर

को है नमन मरुमर को है नमन मरुमर

को है नमन मरुमर को है नमन मरुमर

को है नमन मरुमर को है नमन मरुमर

को है नमन मरुमर को है नमन मरुमर

को है नमन मरुमर को है नमन मरुमर



न देखा उमर सा काँट मुसाफिर,  
कही मजल नहीं जिस के सफर में।

यह मुसाफिर गन्तव्य स्थान पर पहुँच कर ही इतना है। इस की अन्तिम मंजिल नहीं भीत है जो यह भी नहीं माना कि जिस व्यक्ति पर हाथ साफ करने लगे हैं, जिस की कटने लगे हैं, उस का कितना आदर और सत्कार है। इन लोगों को उस की कितनी आवश्यकता है। वह व्यक्ति संसार लिये कितना उपयोगी है। सामान्यतया देखा जाता है कि संसार लोग, जो मनुष्यत्व से राहत दे, जिन के कारण संसार दुःख है। जिन की समाप्ति के लिये अत्याचार पीड़ित जन हाथ कर प्रार्थना करते हैं। इन लोगों की उमर की रसी होनी चली जाती है। पान्न जन व्यक्तियों की उमर की होनी निंद्यी मौत बड़ी

जिन के जीवन का प

होता है। जिन्हें रु

है, जिन का प्रत्येक

की उपस्थिति लोगों का बहुत दूर करने वाली होती है। आप की दावे आयु के लिये लाभ दिन रात प्रार्थना करते हैं। फिर भी मृत्यु उनकी आयु को समाप्त कर ही देता है। यह एक निश्चित नियम के अनुसार होता है। हम अपने लिये या स्वाध्याय के विचार से कर्मों का एक ही दावा कामना करते हैं परन्तु मनुष्य इस विषय में अज्ञान है। जो जितनी आयु कर्मों से बढ़ती है, उतनी वह अक्षय्य माने परन्तु आयु समाप्त होने पर उस बढ़ती सम्भव नहीं। अन्यान्य ही या मर्याद, मरता है या एक, पाया ही या कुछ का पुत्र जनान इन पर हम का अन्धान आनवाय है। यह



यह वह जगह है कि भास्तर पर आकलने प्रती  
यह वह जगह है कि हसरत पर हसरत आये।

अतः प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि अपने को इस संसार की असारता का सदैव ध्यान रखे। समझे कि यह वह स्थान है, यह वह जन्म है जिसे प्रत्येक मनुष्य जन्म मरण के चक्र से मुक्त हो सकता है। कहा है—

मुझके कृता अगरचे बहुत वे सवात है,  
वे पापों वे मदार हर एक इस की बात है।  
लेकिन बड़ा कहा जो किसी ने कहा है यह,  
हिम्मत के मारको के लिये खुश जा है यह।

मनुष्य-जन्म यह दरवाजा है जिस से जन्म किले से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। मनुष्य को अपना प्रकृति व्यवहार करना चाहिये कि इस के दरवाजे के निकट पहुँचने का प्रयत्न करे ताकि अवसर लगा कर बाहर निकल जाये। मनुष्य संसार में इस प्रकार कि स्वयं अपना कल्याण कर जाये और दूसरे पर-चिह्नो पर चलना अपने लिए गौरव समझे। ऐसे के जीवन लोगों को अन्धकार में दीपक का काम है एक कवि ने कहा है—

इन्हीं पर है कुछ फकर है अगर किसी की,  
इन्हीं में है गर है शफ आदमी को।  
इन्हीं में है आबाद हर मुल्को दीलत,  
इन्हीं से है सरमस्त हर कोमो मिलित।









फिरता है सीले द्वारस से कही मरदों का मुँह,  
रोर सीधा तैरता है बक्के रफतन भाव में।

अब उन्हें भय दिखाया जाता था मार-पीट की दृष्टि  
तो आप मुस्कराते और 'एक कवि के कथन के अनुसार'ों  
ध्यान न देते।

हराते क्या हो कह कह के ये खंजर हैं ये भाले हैं।  
ये खंजर और भाले सब हमारे देखे भाले हैं ॥

इन सब शिक्षाओं और कष्टों को सह कर महाराज श्री ने  
साफ साफ कह दिया कि मैं इस जाल में फँसना नहीं चाहता।  
फिर उन्होंने ने प्रेम से घर वालों की समझाया और वन की प्रत्येक  
युक्ति का उच्चार दिया। उन्हें साधु जीवन की ओछा समझाई।  
अब घर वालों ने देखा कि हमारे सभी प्रयत्न असफल हुए हैं  
हमारी शिक्षाओं और प्रयत्नों का कोई फल नहीं हुआ, तो उन्हें  
ने दिल में समझ लिया कि अब अधिक हठ करना व्यर्थ है  
साथ ही इस कुटुम्ब के लोग सज्जन पुरुष थे। इन के अपेक्षित  
विचार भी नेक थे। वे दिल में साधु जीवन की ओछा की सब  
समझते थे। परन्तु अपने मोह के कारण बाधाएँ डाल रहे थे।  
फिर उन्होंने ने विशेष प्रयत्न करना बन्द कर दिया। प्रसन्नता से  
उन्हें अपनी हार्दिक इच्छा पूरी करने की आज्ञा दे दी।

आप श्री ने घर वालों की इच्छा के अनुसार विवाह न  
किया परन्तु दूसरे प्रकार का विवाह किया जिस से उनके मन की  
कभी विश्राम नहीं। उस विवाह से नौ दो घरों की प्रसन्नता होती,  
परन्तु इस विवाह से हजारों घरों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।  
आप ने कलिंगुन सुदी तान के दिन सम्बन् १६६० में गुजरातवासी



कि स्वर्ग सिंघारने से एक रोज पड़ने भी आप ने उपदेश दिया कि आपको सांस लेने में बहुत कष्ट आप के हृदय में जाति-प्रेम कूट कूट कर भरा हुआ था। ने अपना जीवन जाति-सुधार के लिए कई बार आप श्री की शारीरिक कष्ट होता था, उपदेश देना कभी शब्द न करते थे।

जैन समाज का सुधार और उसे उन्नति के पक्ष लाकर आप श्री ने जो उपकार किया है, उसे जैन कभी नहीं भूल सकना। आशा है कि वे लोग आप के हृदय मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने को उन्नत करेंगे। साथ ही जाति और देश की उन्नति में सहायक होंगे।

आप श्री के उपदेश केवल जैन समाज के लिए परन्तु सारी मानव जाति के लिए थे। बहुत से अजैन लोग आप श्री के उपदेश सुनकर उनसे लाभ उठाते थे।

महाराज श्री का यह स्वाभाविक नियम रहा है कि किसी प्रकार का आदम्बर न चाहते थे। मौन रहकर ठोस करना आपको बहुत पसन्द था। यही कारण है कि अनुपम आदर्शमय और भाविक उपदेशों से प्रभावित जैन जाति निद्रा में जागृत हुई। आपके उपासकों के विषय में है—

१- ज्ञान में संगठन पैदा हो।

२- ज्ञान के वातका में प्रवेश न रहे।

३- ज्ञान में सम प्रवेश हो।

४- ज्ञान के लक्ष्य तक विशेष प्रयत्न हो।

१- जाति अपने आत्म-वल्याण के लिये प्रयत्नशील बने ।

महाराज श्री उपरोक्त विषयों पर ऐसे सुन्दर ढंग से भाषा डालने थे कि लोग मन्त्रमुग्ध हो जाते थे । आप जो भी कहते थे, वह आप की हादिक भावना की व्यक्त करती थी, और जनता के दिलों पर उसका प्रभाव पड़ता था । कई बार हुआ कि उपदेश के पश्चात् ही फौरन ही संघ के लोग नती सभा करते । अपने को संगठित करने और अपनी हानता को दूर करने के उपाय सोचते और जो फैसले होते, वे कार्यरूप में लाया जाता था ।

महाराज श्री जो बड़े नगरों में ही चतुर्नास नही करते थे, पितु दूरस्थ छोटे छोटे ग्रामों में भी भगवान् बीर का सन्देश डालते थे । जिसका फल यह हुआ कि कई छोटे छोटे स्थानों पर भी लोगों ने आप श्री के वचनों से प्रभावित होकर अपनी जाति के उपाय सोचे और उन्हें कार्यरूप में लाया गया उनके विवरण अन्यत्र दिया गया है ।

आप श्री को जैन शास्त्रों पर पूर्ण अधिकार था । यदि आपका जीवन ब्रह्म करता, तो आपको मुनि मंडल अपने कर्माधिकारों से विभूषित करता । परन्तु आप श्री को तो स्वप्न में भी ऐसा विचार न था । चुपचाप अपने कर्तव्य का पालन करना आप के जीवन का एक ध्येय था ।

६२ साल की उमर पर्यन्त पूरे ४२ वर्ष तक आपने जैन जाति की अनन्यक सेवा की और उसका सच्चा सुधार किया । जेठ वदा ४ सं० २००२ का पसहर में सास की तफ्तीफ से

आप स्वयं सहाय गये। वन्दे तो आपका चोला तोड़ने का  
 भर भी आकाशम न था, परन्तु आप भी के विरोध में ही  
 आ आति पहुँची है, उसकी पूर्ण निरुद्ध अवस्था में नहीं देख  
 जानि कृतिप ददं दृश्यते यानि श्रीर मोन रह का देव  
 करने वाले आदर्श सहायता बढ़ाने का काम है। इसका  
 नाम सदैव समर रहेगा। परन्तु जानि इन के नाम के  
 बाद लगा सक्ती है। नही नही इन के नाम को भी।  
 इन के उद्धार का बान्ह इन परार वगैर सहाय दे कि आप  
 के निःशेष उद्देश्यों का पूर्ण के त्रिप निरुद्ध प्रयत्नोत्तरे।

जैन ज्ञानि का सहायता भी के विरोध का जो हो  
 दुःख दुःख, श्रीर सहाय सुधार का जो धर्म लागू रहे  
 कम न था। परन्तु दुःखों में इसी दिनों में जानि का एक  
 सहायता निरुद्ध गता। मेरा मान्यते पुनरावृत्ति आचार्य भी बने  
 का सहायता न दे, जो आकाश में इसी दिनों में एक  
 गये। इन ज्ञानि सहायताओं के उद्देश्यों में केवल  
 का ही आकाश था। जानि का सहायता पनि हुई। जानि के  
 सहायता का विरोध ही कम न था, परन्तु एक  
 सहायता के विरोध में जानि का विरोध का वाक्य  
 श्रीर कम का एक का न का कहा है।—

सहायता में नृप का ज्ञान का सहायता,  
 सहायता में दृष्टि के सहायता का सहायता।  
 सहायता में ज्ञान का सहायता का सहायता,  
 सहायता में सहायता का सहायता।

# जन्म कुण्डली

मजहब कभी माइंस को सबदा न करेगा,

इन्सान घड़े भी, तो फरिस्ते न बनेंगे ।

प्रायः अच्छे हिन्दू घरों में बच्चे के उत्पन्न होने पर उसको जन्म कुण्डली तय्यार कराई जाती है । क्योंकि मनुष्य का विश्वास है कि वह अपने भविष्य को मालूम करने की तीव्र इच्छा रखता है । लोगों की इस इच्छा से ज्योतिषी, रम्नाल हस्तरेखा के विशेषज्ञ सब लाभ उठाते हैं । वे प्रति दिन अपने ईर्ष्या के लिए पर्याप्त रुपये कमा लेते हैं ।

इन उपरोक्त केवल रुपया कमाने वाले ज्योतिषियों के कारण इतने से लोगों को ज्योतिष में विश्वास नहीं रहा । परन्तु फिर भी लोग देवे अवश्य बनवाते हैं और हस्तरेखा की पुस्तकें लेते हैं । क्योंकि ऐसे व्यक्तियों की संख्या अधिक है जो किसी किसी प्रकार से अपने भविष्य को जानने का प्रयत्न करते हैं ।

यह तो सभी जानते हैं कि राजा लोग भी अपने दरबार में एक राजज्योतिषी रखते हैं । गणितज्योतिष की बातें प्रायः क निकलती हैं जैसे कि ज्योतिषी वर्षों पहले ही बतला देते हैं कि मुक दिन के अमुक समय पर चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण होगा । इन से प्रभावित होकर भी लोग कलितज्योतिष की तरफ आकर्षित होते हैं ।

वैज्ञानिक इन बातों का मिथ्या प्रमाणित करने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु मजहब विश्वास के सामने नतमस्तक होने का तय्यार नहीं । धार्मिक विश्वास और संस्कार निरन्तर चले आ रहे हैं । विज्ञान केवल प्राकृतिक वस्तुओं को ही खोज करता है,



परन्तु धर्म आत्मिक शक्ति का रहस्य समझता है।  
के चमत्कार वैज्ञानिकों या साधारण बुद्धि वाले  
में नहीं आ सकते। इनका रहस्य वही समझ सकते।  
क्षेत्र के खिलाड़ी हैं।

जम्म पत्रे बनवाने वाले लोगों में कई तो  
कि कोई भी बात सभी नहीं निकलती और कई  
कि सब बातें बिल्कुल ठीक निकलती हैं। कुछ  
विधान है कि कई बातें ठीक निकलती हैं और कई  
सब उद्योगियों के गणित पर आश्रित है।

यदि एक दूसरी दृष्टि से देखा जाए तो अपने  
पहले ही जान लेने से कोई लाभ नहीं। भाग्य  
को तो प्रत्येक व्यक्ति मानता ही है। यदि हमें कोई वस्तु  
वाली है, तो अवश्य मिलकर रहेगी। दूसरे यदि  
है, तो किसी शुभ फल की आशा नहीं की जा सकती।  
हमें वही बात बता सकती है जो हमारे भाग्य में है।  
भाग्य में जिंसा है, वही मिलेगा, तो पहले जान लेने  
लाभ नहीं। यदि कोई सुखी जाने वाली है,  
जान लेने से वह आनन्द नहीं जो इस के अकस्मात्  
प्राप्त होता है। यदि कोई कष्ट जाने वाला है, तो पहले ही  
जान हो जाने से हम चिन्ताग्रस्त हो जाते हैं।  
आदि कि वह अपनी भद्रा और पैटर्न को बढ़ाए और  
बने। प्रमादा मनुष्य तो स्वयं ही बदकिस्मत होता है।  
जन्मपत्री बनवाए ही उसे अपना दुभाग्य समझ लेता है।  
परिश्रमी और पुरुषार्थी मनुष्य को भी देवा इतर  
आवश्यकता नहीं। उसे अपने पुरुषार्थ पर विश्वास होना  
शरीर के भोग तो भोगने ही पड़ेंगे, परन्तु जो व्यक्ति



नमःपलम्—यथा कर्मवन्निष्ठायां ० ३१ ०  
श्लोके-कन्यालममवो बालो इत्यादि—

सातचन्द्रिका के प्रथम परिच्छेद में कहा है कि :  
कथा सात में जग्न होता है, बट अपने और  
प्रचार के चर्मणाओं का जाना, सीमाग्रहणों, सगुणों  
और प्रभावशाली होता है।

राशीफलम् - क्या समयचन्द्रिकायानेकोनचरणी  
 ओके-गम्भीरवेष्टितः शूरः इत्यादि— जिस की जन्मराशि में  
 वह मर्मा कर्मों को विचार पूर्वक करने काज्ञा, मन का  
 प्रविष्ट कथा, समाचतुर, परोपकारी, महाज्ञानी आदि गुण  
 प्रकट होंगे। इसका प्रधानपुरुष होगा। मर्मा के गत कर्म  
 करने होंगे।

शरीर में सूर्य पांचवें घर में और बुद्धि  
तर्क में ११ वें स्थान में है जिसका फल यह है कि राजा  
अपनी सेवा करते हैं। यह पुरुष सच्चल शास्त्री का हस्त।  
श्री गुरुदेव में प्रसिद्ध और बुद्धि का सुविधा होता है।

दे हि बह धर्मो यो भीरु ममान्ते मे मन्त्राय न रक्षत इत्यादि । अथानु गृहस्थाश्रम मे न कर्म कर्म मन्त्राया इत्यादि ।

कन्धवा का समय यह पुर है। यह राजवाड़ा छोड़ दिया  
कम ५५ लाख का धराबदल बन गया है।

१. संस्कृत का अर्थ है संस्कृत ।  
 २. संस्कृत का अर्थ है संस्कृत ।  
 ३. संस्कृत का अर्थ है संस्कृत ।  
 ४. संस्कृत का अर्थ है संस्कृत ।  
 ५. संस्कृत का अर्थ है संस्कृत ।  
 ६. संस्कृत का अर्थ है संस्कृत ।  
 ७. संस्कृत का अर्थ है संस्कृत ।  
 ८. संस्कृत का अर्थ है संस्कृत ।  
 ९. संस्कृत का अर्थ है संस्कृत ।  
 १०. संस्कृत का अर्थ है संस्कृत ।

47. 9 1. 4 1. 2 1. 3 1. 4 1. 5 1. 6 1. 7 1. 8 1. 9 1. 10 1. 11 1. 12 1. 13 1. 14 1. 15 1. 16 1. 17 1. 18 1. 19 1. 20 1. 21 1. 22 1. 23 1. 24 1. 25 1. 26 1. 27 1. 28 1. 29 1. 30 1. 31 1. 32 1. 33 1. 34 1. 35 1. 36 1. 37 1. 38 1. 39 1. 40 1. 41 1. 42 1. 43 1. 44 1. 45 1. 46 1. 47 1. 48 1. 49 1. 50 1. 51 1. 52 1. 53 1. 54 1. 55 1. 56 1. 57 1. 58 1. 59 1. 60 1. 61 1. 62 1. 63 1. 64 1. 65 1. 66 1. 67 1. 68 1. 69 1. 70 1. 71 1. 72 1. 73 1. 74 1. 75 1. 76 1. 77 1. 78 1. 79 1. 80 1. 81 1. 82 1. 83 1. 84 1. 85 1. 86 1. 87 1. 88 1. 89 1. 90 1. 91 1. 92 1. 93 1. 94 1. 95 1. 96 1. 97 1. 98 1. 99 1. 100 1. 101 1. 102 1. 103 1. 104 1. 105 1. 106 1. 107 1. 108 1. 109 1. 110 1. 111 1. 112 1. 113 1. 114 1. 115 1. 116 1. 117 1. 118 1. 119 1. 120 1. 121 1. 122 1. 123 1. 124 1. 125 1. 126 1. 127 1. 128 1. 129 1. 130 1. 131 1. 132 1. 133 1. 134 1. 135 1. 136 1. 137 1. 138 1. 139 1. 140 1. 141 1. 142 1. 143 1. 144 1. 145 1. 146 1. 147 1. 148 1. 149 1. 150 1. 151 1. 152 1. 153 1. 154 1. 155 1. 156 1. 157 1. 158 1. 159 1. 160 1. 161 1. 162 1. 163 1. 164 1. 165 1. 166 1. 167 1. 168 1. 169 1. 170 1. 171 1. 172 1. 173 1. 174 1. 175 1. 176 1. 177 1. 178 1. 179 1. 180 1. 181 1. 182 1. 183 1. 184 1. 185 1. 186 1. 187 1. 188 1. 189 1. 190 1. 191 1. 192 1. 193 1. 194 1. 195 1. 196 1. 197 1. 198 1. 199 1. 200 1. 201 1. 202 1. 203 1. 204 1. 205 1. 206 1. 207 1. 208 1. 209 1. 210 1. 211 1. 212 1. 213 1. 214 1. 215 1. 216 1. 217 1. 218 1. 219 1. 220 1. 221 1. 222 1. 223 1. 224 1. 225 1. 226 1. 227 1. 228 1. 229 1. 230 1. 231 1. 232 1. 233 1. 234 1. 235 1. 236 1. 237 1. 238 1. 239 1. 240 1. 241 1. 242 1. 243 1. 244 1. 245 1. 246 1. 247 1. 248 1. 249 1. 250 1. 251 1. 252 1. 253 1. 254 1. 255 1. 256 1. 257 1. 258 1. 259 1. 260 1. 261 1. 262 1. 263 1. 264 1. 265 1. 266 1. 267 1. 268 1. 269 1. 270 1. 271 1. 272 1. 273 1. 274 1. 275 1. 276 1. 277 1. 278 1. 279 1. 280 1. 281 1. 282 1. 283 1. 284 1. 285 1. 286 1. 287 1. 288 1. 289 1. 290 1. 291 1. 292 1. 293 1. 294 1. 295 1. 296 1. 297 1. 298 1. 299 1. 300 1. 301 1. 302 1. 303 1. 304 1. 305 1. 306 1. 307 1. 308 1. 309 1. 310 1. 311 1. 312 1. 313 1. 314 1. 315 1. 316 1. 317 1. 318 1. 319 1. 320 1. 321 1. 322 1. 323 1. 324 1. 325 1. 326 1. 327 1. 328 1. 329 1. 330 1. 331 1. 332 1. 333 1. 334 1. 335 1. 336 1. 337 1. 338 1. 339 1. 340 1. 341 1. 342 1. 343 1. 344 1. 345 1. 346 1. 347 1. 348 1. 349 1. 350 1. 351 1. 352 1. 353 1. 354 1. 355 1. 356 1. 357 1. 358 1. 359 1. 360 1. 361 1. 362 1. 363 1. 364 1. 365 1. 366 1. 367 1. 368 1. 369 1. 370 1. 371 1. 372 1. 373 1. 374 1. 375 1. 376 1. 377 1. 378 1. 379 1. 380 1. 381 1. 382 1. 383 1. 384 1. 385 1. 386 1. 387 1. 388 1. 389 1. 390 1. 391 1. 392 1. 393 1. 394 1. 395 1. 396 1. 397 1. 398 1. 399 1. 400 1. 401 1. 402 1. 403 1. 404 1. 405 1. 406 1. 407 1. 408 1. 409 1. 410 1. 411 1. 412 1. 413 1. 414 1. 415 1. 416 1. 417 1. 418 1. 419 1. 420 1. 421 1. 422 1. 423 1. 424 1. 425 1. 426 1. 427 1. 428 1. 429 1. 430 1. 431 1. 432 1. 433 1. 434 1. 435 1. 436 1. 437 1. 438 1. 439 1. 440 1. 441 1. 442 1. 443 1. 444 1. 445 1. 446 1. 447 1. 448 1. 449 1. 450 1. 451 1. 452 1. 453 1. 454 1. 455 1. 456 1. 457 1. 458 1. 459 1. 460 1. 461 1. 462 1. 463 1. 464 1. 465 1. 466 1. 467 1. 468 1. 469 1. 470 1. 471 1. 472 1. 473 1. 474 1. 475 1. 476 1. 477 1. 478 1. 479 1. 480 1. 481 1. 482 1. 483 1. 484 1. 485 1. 486 1. 487 1. 488 1. 489 1. 490 1. 491 1. 492 1. 493 1. 494 1. 495 1. 496 1. 497 1. 498 1. 499 1. 500 1. 501 1. 502 1. 503 1. 504 1. 505 1. 506 1. 507 1. 508 1. 509 1. 510 1. 511 1. 512 1. 513 1. 514 1. 515 1. 516 1. 517 1. 518 1. 519 1. 520 1. 521 1. 522 1. 523 1. 524 1. 525 1. 526 1. 527 1. 528 1. 529 1. 530 1. 531 1. 532 1. 533 1. 534 1. 535 1. 536 1. 537 1. 538 1. 539 1. 540 1. 541 1. 542 1. 543 1. 544 1. 545 1. 546 1. 547 1. 548 1. 549 1. 550 1. 551 1. 552 1. 553 1. 554 1. 555 1. 556 1. 557 1. 558 1. 559 1. 560 1. 561 1. 562 1. 563 1. 564 1. 565 1. 566 1. 567 1. 568 1. 569 1. 570 1. 571 1. 572 1. 573 1. 574 1. 575 1. 576 1. 577 1. 578 1. 579 1. 580 1. 581 1. 582 1. 583 1. 584 1. 585 1. 586 1. 587 1. 588 1. 589 1. 590 1. 591 1. 592 1. 593 1. 594 1. 595 1. 596 1. 597 1. 598 1. 599 1.







करते थे। कहावत प्रसिद्ध है कि—होनहार बिरहन  
बिड़ने पात। अमेही में भी कहा है—

• Coming events cast their shadow.

अर्थात् आने वाली घटनाएँ अपना प्रभाव  
विश्वाना प्रारम्भ कर देती हैं। जिस प्रकार वर्षा के  
हवा आती है, उसी प्रकार महापुरुष का प्रभाव  
प्रकट होना शुरू हो जाता है।

महागज श्री को प्रारम्भ से ही धर्म से प्रेम होना  
से भगवत् रहना, शास्त्र और धर्म होना सिद्ध करता  
था। महापुरुष बनेंगे और संसार में अपने माना विना  
विश्वगत करेंगे। इस संसार सागर में स्वयं पार होंगे  
को पार करारेंगे।

आप श्री की जब उसीमें वर्षों की वनर हुई तो  
सबाल भट्टाया गया। आप श्री की हृदि वैराग्य की ओर  
गते आप की इस हृदि की बदलने का एकमात्र उपाय  
समझते थे। वो असीर पत्नी के रितने आप। सब आप  
विना मे आपसे परामर्श दिया, तो आप ने विश्व  
रक्षत्र से साक इनकार कर दिया तथा लक्ष्मी का श्री को भी  
से कह दिया कि तुम अपनी बच्ची का जीवन नष्ट न करो

आप श्री के इनकार करने पर भी माता विना  
कान्ते थे। इनका मोह उन्हें प्रेरित करता था एवं कह  
कि वह धर्म नाममक दे, बचा दे। तुम अपना  
कहा था, व कहा जानने से कि—

कल है तो तुम मान नहीं कर देना।

कल है 'कल' में नहीं मानना दे जाने।





करके रोहतास, जेहलम और स्वालकोट होते पहुँचे। श्री स्वज्ञानचन्द्र की वैराग्यभावना बहुत जबरन थी। आपाचार्य श्री के परमरूप आ जाने की सुषमा तो वे शुष चाप धर से प्रधान कर के इन की सेवा पहुँचे। आप अपने माता पिता के सब से छोटे पुत्र थे। माता पिता आप को बहुत प्रेम करते थे। और उन्हें सहायकशाह कहा करते थे। जब सहायकशाह गायब हो गए तो माता पिता की बड़ी चिन्ता हुई। शोक होनी प्रारम्भ हुई। स्थान स्थान पर आपकी कदाचित् प्रसिद्धि है कि शरक और मुरक छिपे नहीं गये इनकी वैराग्य भावना से परिचित थे। उन्होंने अनुमान किया कि वे साधुओं की सेवा में गए होंगे जो वहाँ बोलना गए हैं। उन्हें मालूम हुआ कि वे साधु परमरूप में हैं। घर वालों ने कहा कि वे साधु परमरूप में हैं। घर वालों ने कहा कि वे साधु परमरूप में हैं। पीटना प्रारम्भ कर दिया, परमरूप के लोगों से यह देखा न रोकने के लिए आगे बढ़े। तब आपके माँ अपने स्वभाव से बहुत तेज थे और देखने में पट्टन प्रवेश ने सत्रवार कर कहा कि आपकी इस की चीज बचाया सब पीछे हट गये। श्री स्वज्ञानचन्द्र श्री को इनके पीछे कर कर वापिस ले गए। इसके पश्चात् गजराज गजराजराज श्री महाराज और आपाचार्य श्री आत्माराज गजराज करने हुए स्वालकोट आ पहुँचे। जब श्री को पता लगा कि उनके गुरु स्वालकोट पहुँच गए दूसरी रात या से भाग कर महाराज श्री के बरछों में गए आ पहुँचे। घर वालों को पता कर के बड़ी पहुँच







जी के शब्द सुनकर आश्चर्यान्वित हो गए और खड़े  
अभी तक मेरे पास इस प्रकार का कोई मुकदमा  
ऐसे मुकदमे तो बीसियों आते हैं कि मनुष्य घन का  
बनता है और दूसरे लोग टाँग मटोल करते हैं।  
पहला ही मुकदमा है कि इस मनुष्य को घन पेश  
और यह ठुकराता है।

घर वालों ने दूसरी आपत्ति यह की कि लक्ष्मण,  
नावाजिरा है, इस लिए इसकी राय को महत्व न  
इस विषय पर काफी वाद-विवाद हुआ। कागजात  
मजिस्ट्रेट ने कैमला दिया कि लक्ष्मण नावाजिरा है। यह भी  
चाहे, जा सकता है। उपरोक्त कैमला होने पर भी श्री  
श्री स्वज्ञान चन्द जी को शहर से बाहर न जाने दिया,  
उन्हें वेद भी नहीं किया। इसी बीच में आगामी चौम  
आगम और गणपतछेदक श्री गणपतराय जी महाराज ने  
१९४० का चौमामा स्थलकोट शहर में करना स्वीकार करती  
रायभरिंदी में श्री लालचन्द जी महाराज का वातुर्ग  
चौमामा प्रारम्भ होते दो आश्वजानचन्द जी ने चौरीन  
अपना डेरा स्थानक में लगा दिया। रात दिन वही रहने  
आना आने भी घर न जाते थे। रास्ता से पूछ हा ऊँची ने  
जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया।

लाला मोहनशाह का घराना प्रांतोष्ठ और प्रसिद्ध  
इनके नाम पर बन गया कोई व्यापक न हुआ था कि जिस  
में इनका घन हान रूप भी करना बनने का निश्चय कि  
इस लक्ष्य पर लाला को आश्वजानचन्द जी का इस प्रकार  
बहुत बुरा लगा। उन्होंने इस अपन कुल का





लेकर अपमान सहन करने को भी तय्यार हो जाता है। उसे अपनी प्रतिष्ठा और आदर का भी ध्यान नहीं रहता। धर्म की ओर धनने क्या परवा करनी है। धन की तुलना में वह किसी बड़े से बड़े गुरु या महात्मा की अवगणना भी कर देता है। उसके हृदय में धन का आदर दूसरी प्रत्येक वस्तु से अधिक होता है। धन ही उस के लिये आदरणीय और पूजनीय वस्तु होती है।

उपर्युक्त बातों का ध्यान रखते हुए जब हम एक जैन साधु के जीवन पर दृष्टिपात करते हैं, तो देखते हैं कि पूर्ण युवा अवस्था में वह सांसारिक आनन्द भोगने और हादिक इच्छाओं को पूरा करने का अवसर होता है तो वह घर के सब सुखों का त्याग करके अपने मित्र का एक एक बाल बख्शवाता है। सात में दो बार इस कठिनाई को सहन करता है। आज की जगत हुई बालिका से तेहर सौ वर्ष की वृद्धा स्त्री तक को माता के रूप में देखने लगता है। धन को पास न रखने का ब्रत धारण करता है। सदैव पैदल चलने, जूता न पहनने, छाया न लगाने, किसी स्थान पर बिना आज्ञा पर न रखने और स्त्रियों के समीप से दूर रहने का नियम धारण करता है। किसी पर हाथ न उठाने और बिना आज्ञा किसी वस्तु को हाथ न लगाने की कठिन प्रवृत्ति करता है। ज्यों ज्यों युवा अवस्था का विकास होता है, इसही सांसारिक इच्छाएं नष्ट होने लगती हैं। क्या ये शर्तें मौजिदा नहीं हैं? क्या वह मौजिदा नहीं कि एक स्वस्थ और सुन्दर नवयुवक के सामने अनेक सुन्दर युवतियां शृङ्गार कर के आती हैं और उससे सदुपदेश सुनना चाहती हैं। वह साधु सबकुछ उनकी उपदेश देता है, परन्तु अपनी दृष्टि की



करा भी अपवित्र नहीं होने देता। उसने अपने  
 शरीर को रूढ़ जंजीरों से बँध लिया है। इस की मान्यता  
 कि उस से मृत हो जावे। केवल पुस्तकें पढ़ने, ज्ञान प्राप्त  
 ध्यान करने, आसन लगाने या तीर्थ स्नान करने से  
 बन सकता। साधु बड़ी है जिसने अपने मन पर  
 प्राप्त कर ली है।

एक हिन्दी कवि ने कहा है—

जो मन मारे क्या पढ़े पुराण,  
 जो मन मारे क्या क्या ज्ञान।  
 जो मन मारे क्या धरे ध्यान,  
 जो मन मारे क्या वेद कुराण॥  
 जो मन मारे क्या मदी मसान,  
 जो मन मारे क्या पुण्य भरु दान।  
 जो मन मारे क्या युद्ध संभान,  
 जो मन मारे क्या गङ्गा स्नान॥  
 मन मारे तो सिद्धि होई  
 मार साधु विरला मन कोई

मुझे स्मरण है कि एक जैन उपाध्वय में एक दिन  
 कहा कर रहे थे। पर्युषणों के दिन थे। कहा समाप्त हो  
 पहले मुनि जी ने कहा कि मैं आप से एक व्रत करवाना  
 हूँ। सम्बत्सरी में जब केवल सात दिन बाकी हैं तुम इन  
 दिनों में ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने की प्रतिज्ञा करो। यह  
 उन्होंने यह कहा कि जो व्रत धारण करने की तत्पर  
 उपवास दाख जटाये। लगभग ४० या ८० व्यक्ति उपवास  
 के व्रत पांच साल ने दाख जटाया। जिस व्रत की साधारण







उपरोक्त गुण सच्चे साधुओं के ही  
व्यक्तिगत सुख और चाराम की कोई परा  
अपना सर्वोपरि अपने भाइयों की सेवा में अर्पण  
तो नाम ही के साधु होते हैं । वे केवल  
निज या सामाजिक काम काज के परिचय  
व्यापी बनते हैं । इनका भेष साधु का होता  
वही सामाजिक इच्छाएं छिपी रहती हैं ।  
आकर्षण हृदय में बने रहते हैं । केवल  
अगाने, भगवें अपने पहनने आदि से कोई ।  
इस बात को पंजाबी के एक कवि ने ब  
दिया है—

मन्ता नाम दे प्रभु का जपन मोलना, बीया मोल  
बाग मोलना याद कर सैन बाँहते, पद के नि  
गलना नाम ज्ञान पर करन छोकी,  
काटा बिच कोई आँखा मरुत वाला, जेइका

कराम राम कह बाइगुन बाइगुन कह, बाँलागाह  
कोई संख्या नापत्री पाठ पूजा, बिच अपनी कमर  
करे बिच दरवा खोलन काई, शरीर करवा का कोई दरवाही  
मनो समझका हो गया जड़े पूरा, मिटो जड़े बाबा भाइया  
जिब मेम कर सुखसुख हान सारे, बोक बाइ के मिटो बिबर हा  
सीरुन छक दिव ईलाया बाक (मित्र वरान होकरा मही रिहलवा  
मेरवा होकरा बनु हा बक कथा, पैर बुड हा दिवा कल हा  
कल हा बालका समझका बाइ जेइ' कच भाइरा गलना रिहलवा  
कल' बाक बाक कर सैन मोला जोका बाक हा सुरी बाइका हा  
बक' बक न क' हा' मू' बा' मू' ना 'हरे बहायका जेइ

चिरनचित्तनुं वस कर लइये, कर्म काण्ड न कुम्भ संवार दा इ  
जेहा न सुरमा होर कोई, जेहदा चित्त नूं पकड़ खिलयार दा इ  
चित्त दी तुमी परताल भाई, चित्त डुबदा चित्त ही तारदा इ  
चित्त दी खेह है प्यारया ओए, चित्त जित्तदा चित्त ही हारदा इ

बाह्य चिह्न और आहम्बर साधु नहीं बनाते। सच्चा साधु  
ने अपने मन की दौड़ को कायू में करता है। जहां साधारण  
सांसारिक आनन्द लुटते हैं, वड़े बड़े शानदार महलों में  
हैं। स्वादिष्ट से स्वादिष्ट भोजन करते हैं। बढ़िया से बढ़िया  
गरी के सामान प्राप्त करते हैं। गद्देदार बिस्तरे और कमानी  
पलंग बिठा कर सोते हैं। वहां सच्चा साधु इन सुखों को  
उ समझ कर त्याग देता है। इन को अपने कल्याण के  
में बाधाएं समझता है, अपने मन को ऐसी मजबूत नकेल  
न लेता है कि वह इन क्षणिक सुखों की तरफ आकर्षित नहीं  
जा। मन को वश में किए बिना साधु एक कदम भी नहीं  
ज सकता। यदि मन की बागदोर ढीली है तो साधु अपने  
जिह्व का पालन नहीं कर सकता। इसी लिए एक और पंजाबी  
विने कहा है—

हाड़ा शांत हो जाऊंगा चित्त तेरा,  
मोह नाया दे जाल नूं तोड़ के बेग ।  
जित लवंगा नारयां वैरियां नूं,  
इस मन अमोदे नूं मोड़ के बेग ।  
मिट जाएगी भटकना कुल तेरा,  
चित्त विषय विकारा नो होइ के बेग ।  
अमृत आवेगा बड़ा सवाद तेनू,  
चित्त नाल प्रनु द जाड़ के बेग ।



शक्ति का बल नमाये रमाई पै नाच है,  
सबदे के दाग मे है म्याही गुणाह की।

वास्तविक सफलता हृदय की पवित्रता और दिल को  
मे कराने में प्राप्त होती है। हाथी मूँठ मुँडवा लेने से सत्य  
शक्ति नहीं होती।

हाथी मूँठ मुँडवाए के हुआ है घोटम घोट।

अरे मन को क्यों नहीं मूँडया जिसमें सारा खोट ॥

एक उर्दू का कवि इसी बात को निल शब्दों से व्यक्त  
करता है—

इस कलन्दर की पसन्द आई मुझे कितनी यह बात।

चार अम् के मक्का से दिल मक्का होता नहीं ॥

इसी प्रकार हाथी मूँठ बढ़ाने या मात्ता हाथ में लेने के  
पर्यन्त एक और कवि ने मक्का को बड़ी खूबी से अपने शब्दों  
वर्णन किया है। वह कहता है—

क्या फायदा अगर रेश बढ़ाई तुने।

पेशानी पै महाराब बनाई तुने ॥

तमचीट व मुमरला से क्या हासिल।

जब कुछ भी न की दिक्की सफाई तुने ॥

इसी प्रकार गीत रूप बन्धन पर भी वास्तविक सफलता  
ही निकल सकती—

इन्सान को देव है कि यह रंग दिल मे ही।

जाहिर मे सब मज्द हो पोशाक म्या बागल ।

हम यह सिद्ध न कर पाए हैं कि मन का कार्य में रखने  
इच्छाओं का हमन करने से और इच्छा पर विजय प्राप्त  
में यह सब संभव नहीं है। इस बात का इन्कार



नहीं किया जा सकता कि जैन साधु प्रायः, उमरेक युक्त होते हैं। श्री स्वज्ञानचन्द जी के जीवन-चरित्र में कालने से ज्ञात होता है कि वे एक सच्चे साधु, वै गृहस्थ के सुखों को भोगने और शाही कराने से इनकार कर बालों ने नकद पचीस हजार रुपए पेश किए अतिरिक्त पांच रुपए रोज का जेब खर्च देना परन्तु इस धीरे युयुक्त ने स्पष्ट कह दिया—

सोड़बते बढ़ते दोस्तों से हमें ग्रासत नहीं।  
हाथ फैलाए कहीं जाके, यह आसत ही नहीं।

क्या यह मौजजा नहीं कि लोग  
कि उन्हें रुपया दिलाया जावे, परन्तु आप भी  
करते हैं कि इन्हें रुपया दिलवाने के जाल से मुक्त किया

जीवनानन्द के एक क्रांती पर पड़े हुए रंगीन  
मफे भी भागते हैं, परन्तु आप भी को मन  
का साथी चुनने के लिये प्रायश्चित्त की जाती है। आप  
हैं कि मैं केवल एक ही की सेवा नहीं करना चाहता,  
मैं सारे संसार का सेवक बनना चाहता हूँ। आज  
आज वैसा के लिए एक दूसरे की जान के लागू बन  
चाही या कालाज के बाद दुकानों की खातिर एक  
जैसे पृथ्वी व्यक्ति को मौत के घाट बतार देता है। परन्तु  
स्वज्ञानचन्द जी को पकड़ पकड़ कर लाते हैं और  
गुम सम्पत्ति लो पर वे छोड़ छोड़ कर भागते हैं और  
कि मैं इस बन्धन में कैसना नहीं चाहता। क्या ये स  
मौजजा नहीं हैं? इस मौजजा रूप जीवन को व्यतीत करे  
जैन साधुओं की वृत्ति का और वर्णन आगे बढ़िये।









रेत की सी दीवार है दुनियां ।  
 भोछे का सा प्यार है दुनियां ॥  
 बिजली जैसी चमक है  
 पल दो पल की मलक है  
 पानी का सा है यह पधारा ।  
 जुगनु का सा है चमकारा ॥  
 आज जहां जंगल में बंध  
 कज सुनसान पड़ा है अंध  
 आज जहां है मेला दूना ।  
 कल वह गांव पड़ा है सुना ॥  
 आज है रहने की तपका  
 कल है चलने की फिर बांका  
 आज है पाना कल है खोना ।  
 आज है हंसना कल है रोना ॥  
 हार कभी और जीत कभी  
 इस नगरी की रीत यही  
 साथ सोहाग और सोग है यां का ।  
 नाव का सा संयोग है यां का ॥  
 रंज में अमृत मिला हुआ  
 अमृत में बिष पुजा हुआ  
 गिरे वही हैं बदे हैं जो यां ।  
 पड़े वही हैं बदे हैं जो या ॥  
 सुरा न हो तू दे मतको  
 नरो में रहो न दे जाने  
 राम की पटा है भाती गरजती ।  
 पदों में या पक्याल है बजती ॥

यह भजन सुन कर लोग बहुत प्रसन्न हुए और बहुत  
मे आवाज़ें बोलने लगीं कि एक भजन और सुनाया जाय ।  
इति ने यह कर कहा कि संसार की असामान्य और भीत  
नकटता की ही बानें न सुनाएं जायें अपितु संसार में अपने बहने  
। और हमें परायण होने का भी कोई उपदेश सुनाया  
।

तब स्वामी निरानन्द जी ने कहा कि अभी इन्हें अपनी  
रहता सुनाने का । इसके पश्चात् यदि समय मिले, तो  
भजन और पुन उपदेश सुना देंगे । यह सुन कर सब पुन  
ए और आनन्द स्वरूपी श्री महाशय ने अपनी आत्मबधा  
नी प्रारम्भ की ।

“ प्रिय महाशय गण तथा सज्जनों ! मेरे पिता जी व्या-  
करण करते थे । परन्तु बड़े ईश्वरभक्त थे । वे व्यापार में भी  
नदारी के साथ काम करते थे । हमें मटैब वे नेक शिक्षा  
दा करते थे एवं हमारे चरित्र का बड़ा ध्यान रखते थे ।  
वे पवित्र जीवन और हम महाशयों का मुक्त पर विशेष  
तन पड़ा । मुझे कोई घुली आदत न थी और मैं घुरे लड़कों  
साथ खेलता भी न था । मैं नित्य सन्ध्या करता और  
छोटा का व्याख्याय करता था । जहां बड़ी भी उपदेश होता,  
अथवा सुनने जाता । मैंने एक कापी बना ली थी । जो अच्छी  
से सुनता, वे सब इस कापी में नोट कर लेता था । जो अच्छी  
बना या भजन सुनता, उन्हें दूसरी कापी में लिख लेता था,  
तब जब समय मिलता, उन का पत्र पत्र नकल कर पढ़ता  
। पर मैं सुनता । एक दिन एक न बड़ा पत्र उद्घोषित  
। मैंने देखा कि एक बड़ा पत्र था ।

की । सांसारिक सुखों की असारता का ऐसे मुक्त  
बर्णन किया कि उसका मेरे दिल पर विशेष प्रभाव  
पड़ने लगा । उन्होंने कहा कि जो लोग इस संसार के सुखों  
करने में लगे रहते हैं, वे यह नहीं समझते कि  
सगुणभगुर हैं । इस संसार में सदैव परिवर्तन हो  
रहा है । जहाँ कल हमें आशा दृष्टिगोचर होती थी, आज  
गया है । सभी एक सज्जन ने कहा था कि  
सम्बन्ध रखने वाले भजन ही न सुनाए जायें।  
संसार निरन्तर और नीरस ही दिखाई देता है । मुझे  
भजन अच्छे लगते हैं । उस महारमा जी ने ऐसा ही  
गाया था, जो मुझे बहुत प्रिय लगा था । वह मुझे घर में  
ही और मैं उसे सुनाता हूँ :—

जहाँ बीगना है, वहलें कभी आशा पर हो  
नगाव है जहाँ रहते, कभी बसने बारा हो  
जहाँ चरित्त है मीरा और मरामर वह बारा  
कभी या कमरा है वहाँ ये, बसने ये और शरा हो  
जहाँ है मंगरेहो ये जहाँ बाहू है ते  
जहाँ कंधर बदे है अब, कभी बसने मीरा हो  
जहाँ मनमान जगत् है, जहाँ है शरीर मीरा हो  
कभी क्या क्या नें दगावें बहा, और होमोम हो  
जहाँ आनन्द आनन्द का कभी दुःख है कभी हो  
'क' क्या क्या नें दगावें अब और क्या क्या देगा है

आनन्द आनन्द का कभी दुःख है कभी हो

जहाँ आनन्द आनन्द का कभी दुःख है कभी हो  
'क' क्या क्या नें दगावें अब और क्या क्या देगा है





महारमा जी के उपदेश के पश्चात् उस प्रभावित हुआ कि चलने से भी रुक गया और जो महारमा जी ने अपने उपदेश में कहा था कि हमें सोचना चाहिए कि मानव जीवन का उद्देश्य क्या है किम्वय तक उसे पूरा कर रहे हैं। मैं बैठ कर जो लगा और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं अपने जीवन के को बिलगुप्त मुद्राप बैठे हूँ और केवल पशुओं की पी कर अपनी समर के अमृत्य समय को नष्ट मैं सोचने लगा कि क्या करें ? कैसे अपने जीवन को बनाऊँ। किस तरह मनुष्य जन्म को सार्थक करें। अपनी अपने दिमाग में सोचा कि मुझे किसी महारमा की राह में चाहिए और उनसे शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। आखिर निर्णय किया कि जिस महारमा का भाषण सुनकर मैं उनकी ही सेवा में उपस्थित होऊँ। उस समय विप्रम हुआ। मैं ने आगले दिन वहाँ जाने का निश्चय किया। सवेरे घर चला गया, परन्तु रात को नींद बहुत कम आई। विचार आता था कि यदि मकली छिपकली और चिल्ली की जमा मोत का भाव, हाँ क्या बनेगा। मैंने ही इसका अपने काम का कोई कार्य ही नहीं किया। मैं कदम ही नहीं सीपानिर्माण समान हो नाकि प्राप्त काक होने ही है। आनन्दो राम महारमा उ चलागा मैं मयपसु कर छूट ही

महारमा जी के उपदेश के पश्चात् उस प्रभावित हुआ कि चलने से भी रुक गया और जो महारमा जी ने अपने उपदेश में कहा था कि हमें सोचना चाहिए कि मानव जीवन का उद्देश्य क्या है किम्वय तक उसे पूरा कर रहे हैं। मैं बैठ कर जो लगा और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं अपने जीवन के को बिलगुप्त मुद्राप बैठे हूँ और केवल पशुओं की पी कर अपनी समर के अमृत्य समय को नष्ट मैं सोचने लगा कि क्या करें ? कैसे अपने जीवन को बनाऊँ। किस तरह मनुष्य जन्म को सार्थक करें। अपनी अपने दिमाग में सोचा कि मुझे किसी महारमा की राह में चाहिए और उनसे शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। आखिर निर्णय किया कि जिस महारमा का भाषण सुनकर मैं उनकी ही सेवा में उपस्थित होऊँ। उस समय विप्रम हुआ। मैं ने आगले दिन वहाँ जाने का निश्चय किया। सवेरे घर चला गया, परन्तु रात को नींद बहुत कम आई। विचार आता था कि यदि मकली छिपकली और चिल्ली की जमा मोत का भाव, हाँ क्या बनेगा। मैंने ही इसका अपने काम का कोई कार्य ही नहीं किया। मैं कदम ही नहीं सीपानिर्माण समान हो नाकि प्राप्त काक होने ही है। आनन्दो राम महारमा उ चलागा मैं मयपसु कर छूट ही



जी हमको बड़े प्रेम से मिले । आदर से बिठाया घोंघ  
हाल पूछा । पिता जी ने संक्षेप में मेरी कृष्णा  
भगत जी सुनकर अतीव प्रसन्न हुए और कहने लगे, कभी  
मनुष्य जिनके हृदय में पूर्ण युवा अवस्था में ऐसे  
हो जायें । साधारणतया मनुष्य वृद्ध भी हो जाते हैं ।  
कांपने लगते हैं । सिर हिलता है । इन्द्रियां विवश  
वही बात होती है कि—

पोरी की है यह आमद या अन्नशला है कोर,  
एक एक दान्त अपना हिलने लगा रहने में ।

ऐसे दशा में भी मनुष्य विषय भोगों का  
करता । इसकी अपवित्र इच्छाएं बनी रहती हैं । इसे  
जरा भी विचार नहीं आता ।

अकसोस सफेद हो गए बाज तेरे,  
लेकिन हैं ब्याह अब भी एमाज तेरे ।  
तू जुझे चुर्ता बना हुआ है अब तक,  
हुनियां पे हनूत पड़े हैं आज तेरे ।

ऐसे मनुष्यों को जीवन के उद्देश्य का विचार  
नहीं होता । वे आलस्य का शिकार होकर पड़े रहते हैं ।  
सोचते ।

मे क्या या किस लिए भेजा गया इस बारे में सोचें,  
न अब तक मृद को पहचाना न कुछ राक्ष मरद मरद ।

भगत जी ने मेरे पिता जी को कहा कि आज मैं  
बोधगोला है कि तुम्हारे यहा क्या सुपुत्र अवतार हुआ है ।  
भगत जी ने कहा कि अब मैं तब तक स बात थीत करना चाहता हूँ ।



सोच लाए और शाम को अकेला मेरे पास आया।  
मेरा दिल का बोझ हलका होगया। पिता  
'बहुत अच्छा' कह कर मेरे साथ बैठ कर  
की प्रतीक्षा करने लगा। पांच बजे के करीब मैं  
आया। लेकर भगत जी की सेवा में उपस्थित हुआ।

भगत जी मुझे देख कर बैठ लड़े हुए।  
बगाया, प्यार किया। और बैठ जाने का  
गया तो हमारी निम्नलिखित बातचीत हुई।

भगत जी—सुनाओ वरस ! आज प्रातःकाल  
मौन रहने का कारण ठीक समझा था ?

मैं—हां महाराज ! मैं अपने जिना जी की कं  
कर बाल न कर सकता था।

भगत जी—अच्छा तुम अपना प्रभु पूर्ण  
वशर देने का प्रयत्न करोगा।

मैं—महाराज ! मेरा दिल संसार का त्याग  
दे। इसमें कुछ रस नहीं।

भगत जी—संसार को छोड़ कर क्या अच्छा  
कामोंगे। संसार को क्यों छोड़ सकता है ? इसमें  
पर ही संदेह।

मैं—मैंने देखा कि वा है कि संसार कहीं से  
का है कुछ नहीं बना सकता। मैं जगु ही बना हुआ

भगत जी—संसार किमी का बहकना नहीं। -  
कर के स्वयं स्वयं इसमें समाया है। यदि

३ मनुष्य संसार में रहे तो वह अपना कल्याण भी कर  
ता है और औरों के लिए धोम भी नहीं होता । इस रहस्य  
को मनुष्य समझ लेता है वह ऊपर से तो अपने धोमों बघों  
भार करता है, परन्तु उसके दिल की तार परमात्मा से  
निघट रहती है । वह अपने आत्मा को भगवान् के भजन  
विवश रखता है । जाहिरा तौर पर वह धोमों और ऊँटों पर  
रो करता है, परन्तु उसका हृदय प्रत्येक प्रकार के कार्यों से  
र होता है । संसार में वह धन दौलत कमाता है । परन्तु  
चा दिल भगवान से जुड़ा रहता है ।

मै—भगत जी हमारा दिल तो एक ही है । इसे चाहे  
जी तरफ लगा लें । कहा है—

जिम शरस को उठवा की तलबगारी है ।

दुनियां से हमेशा उसे बे करारी है ॥

एक चराम में कित तगढ़ मनाएं दोनों ।

गाफिल यह खाब है, वह बेगारी है ॥

भगत जी—बेटा ! आप तो बड़े बुद्धिमान हैं परन्तु यदि  
तो लोग हमी विचार के हो जावें तो त्यागी लोगों के माने  
। सा प्रबन्ध कौन करे ? संसार के सब काम कैसे चले ?  
। बाडो कौन करे ? कपड़े कौन तय्यार करे ? भेष तो यही  
के संसार में रहता हुआ मनुष्य बैरागी बन कर रहे । जैसा  
एक हिन्दी के कवि ने कहा है—

न जग त्यागी न हर को भूत आधी जिन्दगारी में ।

रहो दुनिया में जो जैसे कवन रहन है पानी में ।

मरम रहे संसार में मन को रखे पास ।

जिम न हो संसार में वह जाने मम दास ॥

मैं—महाराज ! यह कहने की बातें हैं ।  
 करके मनुष्य अपने आपको पवित्र कैसे रख  
 दिल १ तेरा एक इसमें वे हरी ।  
 लक्ष्मण दो दो समा सकती नहीं ॥  
 होवे जिसदिल में मेरी लक्ष्मण की जा ।  
 गौर की लक्ष्मण का इसमें काम क्या ॥  
 सुन के यह इक की तरफ हाथ अपना जोड़ ।  
 सब की लक्ष्मण से गहरे मुँह अपना मोड़ ॥

भगत जी—प्रियवर ! मैं  
 जाऊँ । इस अवस्था में आपका इन गुण  
 प्रकार स्वयं रूप से समझना प्रकट करता है कि  
 मैं विशेष चमक पैदा होगी । परन्तु केवल परम  
 संसार नहीं छोड़ा जाता । यदि दिल में इच्छा है  
 तो जंगल में जाकर बैठना भी ठीक है । पर मैं  
 मनुष्य सब कठिनाईयों का सामना करता हुआ अपने  
 इन्द्रियों को बरा में रख सकता है, वह सब स्वाधीन  
 जो दूसरों के दुकदों पर निर्वाह करता है और  
 लक्ष्मण और मोह से रहित होकर पवित्र नहीं बनता ।  
 तुम्हें सनाता हूँ कि मनुष्य को किस प्रकार का जीवन  
 चाहिये ।

तर्क दुनिया इक खाने खाते हैं ॥

किन्दगा जहो बहद का नाव ।  
 मोन क्या है काम से आगम ॥

१ दुनिया का न्यायन ।

सुराहियों के सामने होना खड़ा ।

सर फरोशों का यही पैनाम है ॥

जानता है जो चलन्ता भीत से ।

उस का ही दुनियां में नेक इनाम है ॥

जान देना, कौल से फिरना नहीं ।

हज़ प्रश्नों का यही ठो काम है ॥

रंजो गम सह कर के जीना शान है ।

गम से भर जाना भी कोई काम है ॥

बिलगिलाना चहचहाना रात दिन ।

जिन्दगी गोया सुराही का नाम है ॥

हर समय और हर घड़ी जो सुरा रहे ।

बन बही दुनियां में शाद और कान है ॥

भर गया जो फर्ज़ की तन्मील में ।

दीनो दु नयां में वसी का नाम है ॥

दावे से कहता हूं सुरादिल एक बात ।

तर्क दुनियां इक उपाते खान है ॥

मैं—भगत जी मैंने आप का बहुत सा समय लिया ।

आपका बड़ा कृतज्ञ हूं । आपने इस विषय पर बहुत प्रकाश

फला है, परन्तु मुझे अभी सन्तोष नहीं हुआ । फरसी के दो

वियों का कर्मान मेरे ध्यान को आकर्षित कर रहा है । उसे

आप के सामने पेश करके आप से सविनय आज्ञा लूंगा और

दर किसी दिन आपको मेरा मैं उपस्थित हूंगा । एक कवि ने

इस प्रकार कहा है—

आदे गैर मे गद व बादिल आदे सुरा कमतर ।

चुं परशद खाने मे बाशद पना है व खाने ज कमतर ।



अथोत् यदि मनुष्य किसी और वस्तु को  
तो प्रभु की याद अवरय कम हो जाती है। क्योंकि इस  
में यदि दूसरे मनुष्य पुन आये तो स्वाभाविक  
के स्वामी के लिए वहाँ स्थान कम रह जाता है।

और दूसरे कवि ने एक मन्त्र के हार्दिक भावों  
प्रकार वर्णन किया है—

आ कस के तुरा रानाखन जा रा ये कुन ।  
परहिम्नो अट्याल व स्थानुमा रा ये कुन ।  
दीवाने कुनी हर के [ब्रह्मनरा ब्रह्मती ।  
दीवानप तू हर के जहाँ रा ये कुन ॥

अर्थात् वे प्रभु जिस मनुष्य ने तुम्हें  
अपनी ज्ञान की भी परवाह नहीं करता। वह  
और बार बार से भी अलग हो जाता है। यदि उस प्रभु  
को कोई दोनो ब्रह्मन भी बहरा दे तो वह केवल  
अर्थात् वह दोनो ब्रह्मन का आधिपत्य लेता भी  
करेगा।

मन्त्र भी—अथ हो प्रिय वस्तु । तुम ही प्रभु हैं ।  
विक्रम से मैं तुम और भी यह मन्त्रा है और  
यह अलखी का मन्त्रा है परन्तु बाल्य में अथ  
क्या है अथ हि । किसी समय अवरय आये ।

मन्त्र का का अलखी का है वहाँ से  
मन्त्र का का प्रभु का है । प्रभु का अलखी  
मन्त्र का है प्रभु का प्रभु का अलखी का है  
मन्त्र का है प्रभु का प्रभु का अलखी का है

ने में लगा रहा, परन्तु किसी अन्तिम परिणाम पर न पहुँच सका। जब मैं दोनों तरफ की युक्तियों की तुलना करता, तो मुझे पता चलता कि प्रतीति होती। कुछ दिन व्यतीत हुए ही थे कि जैन साधु शहर में चौमासा करने के लिये पधारें। उन्होंने मुझे बताया कि प्रारम्भ की। वे प्रति दिन प्रातःकाल कथा करते हैं। मैं भी वहाँ जाता था। एक दिन उन्होंने कहा कि यदि मैं भी अपने कर्तव्यों का ठीक रूप से पालन करे और गन्तव्य से जीवन व्यतीत करे, तो जन्म जन्मान्तरों के व्यतीत होने के पश्चात् वह भी अपना कल्याण कर सकता है, परन्तु बुद्धिमान से कल्याण के मार्ग की सड़क शीघ्र से शीघ्र तै हो जाती है। एक उदाहरण देकर उन्होंने समझाया कि मनुष्य बैल-गाड़ी पर सवार होकर अपने गन्तव्य स्थान की ओर जा रहा है और दूसरा मोटरकार पर बैठ कर, तो यह बात ठीक है कि वह दोनों अपने स्थान पर पहुँच तो जावेंगे परन्तु इस बात में कोई इन्कार नहीं कर सकता कि जो व्यक्ति मोटर पर सवार है वह शीघ्र ही वहाँ पहुँच जावेगा।

सज्जनों! इस बात का मेरे दिल पर बड़ा प्रभाव पड़ा। मैं अपना हार्दिक आकर्षण भी इसी ओर था। जब कथा समाप्त हो गई और सब लोग चले गये, तो मैंने मुनि जी से निवेदन किया कि मुझे दीक्षा दी जावे। उन्होंने पूछा 'क्या आप माता पिता जीवित हैं?' मेरे हाँ में उत्तर देने पर उन्होंने कहा कि जब तक तुम उनसे आशा न लो, तब तक तुम्हारी दीक्षा नहीं हो सकती। यह तो एक बड़ी भारी बाधा उपस्थित हो गई। मुझे आशा न थी कि मेरे माता पिता आशा दे देंगे। मेरे पिता जैन महात्मा का उपदेश सुनने भी कभी न गए थे। मैंने उन्हें प्रेरणा करके कथा में जाने के लिये राजा किया।



‘‘तु मेरे दिल में उबाल अवश्य था जिसे उचित अवसर मिलने  
[ प्रकट करना चाहता था ।

एक दिन शाम के समय मैं घर में कुछ काम कर रहा  
।। पिता जी पड़ोसी के घर से आर और स्वयं कहने लगे,  
‘‘बेटा ! यदि जीवन का यही फल है और इसी तरह मौत किसी  
ही समय आकर दबा सकती है, तो मेरी तरफ से तुम्हें आज्ञा है  
कि तुम जिस प्रकार चाहो, अपने जीवन का सुधार कर लो ।’  
पिता जी की यह बात सुनकर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ । परन्तु  
मैंने इस भाव को दबा लिया और पिता जी से कहा, ‘‘चलो  
मुनि जी के दर्शन कर आवें । हम दोनों वहाँ गए । कुछ समय  
कृष्णमूर्ति होने के पश्चात् मैंने मुनि जी से निवेदन किया  
कि मेरे पिता जी ने मुझे दीक्षा लेने की आज्ञा दे दी है । मुनि  
जी ने जब पिता जी की ओर दृष्टि डाली, तो पहले तो वे कुछ  
तन्मय हो गए । फिर कहने लगे, ‘‘हां महाराज ! मैंने  
मनुष्य के शरीर की असारता को अपनी आंखों से देख लिया है ।  
अब मैं अपने पुत्र के मार्ग में बाधक नहीं होना चाहता । अब  
मुझे कोई आपास नहीं है ।’

कुछ समय के पश्चात् आवश्यक आज्ञाओं का पालन करके  
मैंने दीक्षा ले ली । उस समय जैन गान्धारी की एक नवयुवति  
ने भी दीक्षा ली । अब मेरी माता ने यह देखा कि वह आनूपलों  
से लड़ी हुई सभा में आई और हमने दावा लेने का प्रयास की ।  
फिर थोड़ी देर के पश्चात् ही वह साधुवेश में आ परिभ्रमण हुई ।  
इस अमाशान्त परिवर्तन ने मेरी माता के हृदय पर बहुत अशान्त  
प्रभाव डाला । पहले तो वह मेरे माता के साथ रह रही थी  
परन्तु फिर उसके मुख पर शान्ति और संतोष की किरणें दृष्ट-



परन्तु यदि वह अपनी इच्छाओं का दमन नहीं कर सकता  
र सांसारिक विषय वासनाओं के लिए भटकता फिरता है, तो  
सन्यास-आश्रम के लिए कलङ्क है। वह पहले से भी अधिक  
। का योग्य सिर पर उठाता है, क्योंकि बाह्यतः पूज्य रूप बना  
कर दुष्कर्मों पर विजय प्राप्त नहीं करता। साधु जीवन का अर्थ  
यह है कि मनुष्य अपनी गृहस्थाओं का त्याग कर दे और  
ना सर्वस्व अपने भाइयों की सेवा के लिये बलिदान कर दे।

दूसरी ओर यदि एक गृहस्थ अपने कर्तव्य का पालन  
। नदारी और प्रेम से करता है, अपने व्यापार में सचाई और  
। य से काम लेता है, वह भी साधु ही है। यद्यपि उस के हृदय  
सन्यास लेने की इच्छा पैदा नहीं होती, परन्तु घर में ही  
रत के समान निर्लेप और पवित्र जीवन व्यतीत करता  
नेक कमाई करता है और उसका सदुपयोग करता है, तो  
। गृहस्थ-आश्रम में रहता हुआ भी अपना कल्याण कर  
कता है। तात्पर्य यह कि यदि गृहस्थ बने, तो अपने गृहस्थ-  
। श्रम के कर्तव्यों का सुन्दरता से पालन करे। यदि साधु  
नने की सही भावना हो और सचा वैराग्य हो जावे तो साधु  
। वन ग्रहण करे। फिर साधु जीवन के सब नियमों का पालन  
रे। उनमें किसी प्रकार की कर्मा न आने देवे। यदि कोई केवल  
। श्रम से बचने के लिये झूठे वैराग्य का आडम्बर रख कर  
। वन आनन्द लूटने के लिये या किसी अपावत्र विचार से  
। साधु बनता है, तो वह मन्यास-आश्रम का कलङ्क है। कोई  
। समा भी आश्रम में है। उसका जीवन उसी प्रकार का हीना  
। हिचे—

न गमगी हो तकलीफ में जो बरार<sup>१</sup>,

न राहत से सुरा हो न रमना हो हर ।

बराबर हो ज़िमके ज़िमे छाड़ी

न हो मदह<sup>२</sup> य सम<sup>३</sup> का रिसे कुठ<sup>४</sup>

तक़द्वर न लाज़ब न उलफ़ा नमे ।

गर्भ<sup>५</sup> हो न गम या ममरैत<sup>६</sup> नमे ॥

न इज्जत न बेइशती का मना

हटा ले जो सब की तर्फ से हर

रहे बे तलब बे गर्भ<sup>५</sup> बे मवाज़,

अगर हो पही ज़िन्दगानी का हाल ॥

राश्व और शहबन<sup>७</sup> मे दिल हो गदी

तो समझो नमे एक इन्सा का

जब श्यामी नित्यानन्द श्री अरना कथन में  
पुके, तो आनन्द श्रुति जो ने कहा कि मैं आनन्द  
आशा करता हूँ, परन्तु जाने में पहले जैन साधु के  
विषय में थोड़ा सा श्री नवेदन करूँगा ।

जब कोई जैन वाता प्रहण करता है, तो हमें जिन  
प्रकार का न करने पड़ते हैं—

१—आजीवन हिमा न करना। मित्र और शत्रु में  
अन्तर न। परन्तु हिमा न लेकर तत्कालीन तक किसी  
के हिमा न करना। सब लोगों की कपटे समान ।  
२—अपने कपड़े न बदलना। कपड़े जो प्रयोग में  
आते हैं, वे न बदलने। ३—अपने कपड़े न धोना। ४—

न हो दूसरे से ऐसा करवाना । मन वचन और काया से  
उ का पालन करना ।

२—आजीवन झूठ न बोलना । क्रोध, लोभ, भय, और  
मदाक से परहेज करना । झूठ बोलने वालों का समयेन  
वालों को अच्छा न समझना । मन वचन और काया से  
उ का त्याग करके हर एक बात का ठोक ठोक स्वरूप प्रति-  
करना ।

३—आजीवन चोरी न करना । किसी की आशा के बिना  
तेनका भी न उठाना । न स्वयं चोरी करना न दूसरे से  
ना और न ही चोरी का अनुमोदन करना । मन वचन और  
से इस व्रत का पालन करना ।

४—ब्रह्मचर्य का पालन करना—स्त्री, जानवर या किसी  
जीव के साथ विषयो का त्याग करना । मन वचन और काया  
दशा में हर समय ब्रह्मचारी रहना । स्त्री के शरीर को  
ना । आज ही की पैदा हुई लड़की के शरीर को भी हाथ न  
ग । जिन कपड़े या आसन पर स्त्रियां बैठ चुकी हों उसको  
भी घड़ी तक न छूना । भोग क्रिया को अपनी आँखों से भी  
लना । दूसरे जीवों का ब्रह्मचारी रहने का उपदेश देना ।  
र, भग, चरन, पावन आदि सब प्रकार की नशे वाली  
में परहेज करना तथा दूसरे को न पना ही उपदेश देना ।

५—अपरमप—समस्त भाव को नष्ट करना । कोढ़ी या  
तक पान न रखना । रात को भोजन न करना और पान  
पाना । देवाई तक भी न लेना । बारह महीने छाया में



सोना । सरदी गरमी आदि कष्टों को सहन करना ।  
 एवं ध्यान में रत रहना । रेलगाड़ी, मोटर कारी, रथ  
 तांगा, बैलगाड़ी या किसी भी प्रकार की सवारी पर  
 नदैव पैदल यात्रा करना । आचण, भाद्र, आश्विन की  
 इन चार महीना के अतिरिक्त किसी भी स्थान पर  
 एक एक महीने में अधिक नहीं ठहरना । अथाय  
 घमै प्रकार के लिये भ्रमण करते रहना । किसी भी  
 दंगे जनस्थिति का स्पर्श न करना । जो मोक्ष साधु  
 तप्यादि किया गया हो, उसे प्रदण न करना । नि  
 निमग्न होकर न करना किन्तु मधुग्री इति  
 लेकर अपना जीवन-निर्वाह करना । निर्दोष भिक्षा  
 निर्वाह करने हुए लोगों को सम्मार्ग पर चलने  
 देना । आग तथा कुल के पानी को न छूना । इसमें  
 पवित्र वस्तुओं के धोवन का पानी नितार कर देने हैं ।  
 मैदा और अवशिष्ट नहीं होना ।

अदैव अहिंसा का प्रचार करना । जीवरों को  
 बचाने का उपदेश देना । जो लोग हिंसा या पाप से  
 मुक्त हैं, उनका उपदेश के द्वारा सुधार करना, एवं  
 प्रेम की शिक्षा देना । वर्ष में न बार ओष का मास  
 अनादर को सहन करना । जेवा को मातृत्व के रूप  
 में मान्य करना । पुत्र न रहना । अदैव नो वि  
 र्ति रहना । अथवा मरुतुलया का पवित्र रहना । वि  
 र्ति के वस्तु मा । न नाना न नाना अथवा नाना  
 वस्तु न नाना अथवा नाना वस्तु न नाना अथवा

रना किन्तु इन्हें मोक्ष का साधन समझ कर पालन करना ।

जैन माधु गृहस्थ व सब भगवों से मुक्त होया है । घन, घोर स्त्री से इमे कोई सम्बन्ध नहीं होता । इस लिये वह गहों से दूर रहता है । साधारणतया उपरिक्त तीनों वस्तुएं ही का मूल कारण होती है । आपने किसी जैन मुनि को व या जैन में न देखा होगा, क्योंकि वह सत्तार के बल्लेहों होता है ।

इनका वह कर भी आनन्द ऋषि जी रहने लगे माधु-  
ही और भी कई छोटो छोटो बातें हैं, क्यों \* अब समय हो गया है और मैंने बिहार करना है इस लिये अब अपने को मनात्र करता हूँ; हाँ बिदा होने से पूर्व मैं एक भजन साथ मिलकर दोलना चाहता हूँ । पहले मैं बोलूंगा, पीछे आप बोलें । यह भजन सदा गाने के लिये भी है ।

लोगों ने आनन्द ऋषि जी का बहुत बहुत धन्यवाद और रहने लगे कि हमें ज्ञात न था कि जैन मुनि की वृत्ति इतनी कठिन होती है । धन्य है ये लोग जो इतने प्रयत्नों का पालन करते हैं । फिर उन्होने कहा कि हम प्रवरय बोलेंगे । अब निम्नलिखित भजन भी आनन्द ऋषि जी ने—

### प्रेम सङ्गोष्ठ

सा—ये सीता प्रेम रचाला कोई विरला विरलठ वाला ।

। सुर है प्रेम है देव प्रेम धम है प्रेम है मेला

। हाँ फेरों माया कहें उदेना 'वसन्त वाला

यह सीता प्रेम रचाला कोई जगत् में नही वाला



# सच्चे मनुष्य .

हर वक्त झमाने का सितम सहते हैं,  
हासिद जो बुरा कहते हैं, चुप रहते हैं ।  
जो नेक हैं वे बंदों को भी कहते हैं नेक,  
वे सुनते हैं बुराई पर न बुरा कहते हैं ॥

संसार में जो मनुष्य आते हैं, वे प्रायः अपना जीवन व्यतीत करते हैं, मानो अंधेरी रात में एक घने जङ्गल में जा रहे हों। वे नहीं जानते कि हम कौन हैं ? कहां से आये ? कहां जा रहे हैं ? किधर जाना है ? क्यों जाना है ? और कौनसा रास्ता ठीक है ? प्रत्येक मनुष्य को अपना मार्ग देखने के लिये एक टमटमाती हुई लालटेन मिली हुई है। कुछ लोग इस लालटेन की चिमनी को अपने पापकार्यों एवं कुसंस्कारों से इतना गंद कर लेते हैं कि उन्हें अपना मार्ग बिलकुल दिखाई नहीं पड़ता। वे अंधेरे में भटकते, ठोकरें खाते, गिरते और चोटें खाकर कई प्रकार के कष्ट उठाते हैं। परन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो अपनी पवित्रता और शुभ कार्यों से इस लालटेन की चिमनी को इतना साफ कर लेते हैं कि उन को अपने गन्तव्य मार्ग का मार्ग साफ दिखाई देता है। बस इस लालटेन के द्वारा वे अपने मार्ग पर बढ़ते चले जाते हैं। वे लोग केवल अपनी यात्रा ही नहीं करते बल्कि अपने साथ और भी बड़े मनुष्यों को ले जाते हैं यदि वे अज्ञानु हों और उन को विचार दिव्य हों।

यह समार सैरगाइ नहीं। न ही यह आराम है किन्तु यह तो परीक्षास्थल है, कागज हमारा मन है। कलम हैं। हर एक मनुष्य को प्रश्नपत्र मिलते हैं। साधारण नहीं होते। परन्तु उन के प्रश्न निम्न प्रकार के। मनुष्य कौन है? किम वरेण्य के लिये आया है? के ध्येय को वह कदां तक पूरा कर रहा है।' इनके रूप में दिये जाते हैं। जो जैसे उत्तर लिखेगा अर्थात् करेगा, वह वैसे नम्बर पायेगा। इस परीक्षा को असफलता इसी बात पर आश्रित है कि मनुष्य पर्ये हैं है अर्थात् उस के कर्म किस प्रकार के हैं।

जिस कागज पर इन प्रश्नों के उत्तर लिखे जाने हैं हमारा मन है। यदि यह कागज सफेद है, इस पर स्याही नहीं गिरी, तो उत्तर साफ साफ लिखे जायेंगे। कागज पहले ही मैला है। तो उस पर क्या लिखा जा सके। मन को शुद्ध रखने के लिए इसे सम अवस्था में रखना है जैसे हमारे शरीर में आग, पानी, हवा और पृष्ठी एक निश्चित से रखे हुए हैं। यदि वह निश्चित कायम रहे, तो स्वस्थ रहता है, नहीं तो कोई न कोई रोग लग जाता है। प्रकार इस मन की वृत्तियों को बश में रखने से है यह मन रह सकता है। जैसे हलवा या मिठाई तटवार करनी। नममें आटा, घी और चीनी आदि सभी सामग्री नियत रूप में डाली जाता है। इस परिमाण में कम या अधिक तो वह चाँठ अच्छा नहीं बनता। उस ही यदि मन की वृत्ति में न रखा जावे तो वह खराब हो जाता है और बीमार है। मन के अस्वस्थ होने पर मनुष्य अपने प्रसपत्रों के

नहीं लिये सकता, अतएव परीक्षा में असफल हो  
 है। मनुष्यों में यही खूबी है, उनका यही गुण है एवं  
 यह महत्ता है कि वे मन की वृत्तियों को ठीक अन्दाजे से  
 है। उन्हें इधर उधर नहीं होने देते। इससे मन पवित्र  
 है और वे अपने प्रभुपत्नी के उत्तर स्वच्छ मन पर बिना  
 की महीब के लिखते चले जाते हैं जिसका फल यह होता  
 है इस परीक्षा में सफल हो जाते हैं।

प्रत्येक मनुष्य संसार में अपनी भावना के अनुसार अपना  
 स्थान बनाता है और अपनी भावना के अनुसार ही  
 पाद रिष्ट होता है। इस बात को उदाहरण देकर समझाना  
 ज्ञान होता।

एक शाहूकार ने शहर से दूर एक मकान इस विचार में  
 कि बाहर सुनी हवा में रहेंगे। वहाँ में एक खोर  
 । हमने सोचा कि खोरी बनने जाते समय यह मकान  
 कायम होगा और साथ ही हमने खोरी बनने में भी  
 लगे रहेंगे। यह भी खोर की भावना। दूसरे दिन वहाँ  
 लुप्त होकर बाला निकला। हमने सोचा कि लुप्त  
 होकर यह बड़ा मकान बनाना है। यह दोनो ही भावना  
 ने का फल नहीं मिलता। परन्तु यह विचार था कि  
 भावना कि जो नष्ट मकान है वह नष्ट होकर नष्ट हो  
 नष्ट मकान यह दुष्ट भावना वह मकान नष्ट होकर नष्ट  
 मकान यह लक्ष्य है कि नष्ट मकान नष्ट होकर नष्ट  
 मकान नष्ट होकर नष्ट मकान नष्ट होकर नष्ट मकान  
 मकान नष्ट होकर नष्ट मकान नष्ट होकर नष्ट मकान







तोसरी कपोत लेश्या : इसका रङ्ग क्यूना की लेश्या  
रङ्ग के समान और स्वाद कच्चे आम जैसा होता है जिसे  
खटाई और कड़वाइत मिली हुई होती है ।

चौथी तेजो लेश्या के नाम से पुकारी जाती है । इस  
रङ्ग सिमरफ के समान होता है । सूर्य अस्त होते समय आर  
का जैसा रङ्ग होता है वैसा ही मोने की तरफ चमकने वाला  
इस लेश्या का होता है इसका स्वाद पक आम के रस के रस  
के समान होता है ।

पांचवी पद्म लेश्या है । इसका रंग हरी या सलोन  
फूल के रंग जैसा होता है और स्वाद दूध या गाँने के रस के  
होता है ।

छठी शुक्र लेश्या कहलाती है । इसका रंग दूध के  
सफेद और स्वाद मिसरी के समान बहुत ही मीठा होता है ।

इन लेश्याओं का स्पर्श भी वर्णन किया गया है । पर  
तीन प्रकार की लेश्याओं का स्पर्श गाय की जिह्वा के स्पर्श  
समान होता है । पिछली तीन प्रकार की शुभ लेश्याओं का स्पर्श  
रई के स्पर्श के समान होता है ।

साध्यों के इन लेश्याओं की गन्ध का भी वर्णन किया  
है । परती तीन प्रकार की लेश्याओं की गन्ध मरे हुए कुत्ते  
दुर्गन्ध के समान होती है पिछली तीन प्रकार की लेश्याओं  
गन्ध खन्दन की सुगन्ध के समान होती है

परती तीन प्रकार की लेश्या अशुभ और पिछली  
प्रकार की लेश्या शुभ होती है । मनुष्य का बाहिरी १६ प  
नन प्रकार की लेश्या का निरूपण आनंद और वि



वानो श्यामी को स्थाने की भावना करता है। वेसे गुणों में एक कवि कहता है—

न रमने युगल है रराको कदूरत है न कीनरै।

दिल अपना माफ है, मरसे हमें पाराना माफ है।

वेसे मन्त्रन—गुरुओं की दृष्टि इनकी गुहरी की निसी की गुहरी की ओर ध्यान हो रही है। गुहरी गुहरी पर हा आती है। इस लिए मरसे कोई गुहरी नहीं देता जैसे कि कहा है—

मिना है जिन को दिल मुमनस पुरे को भी देतने है  
पड़ेगा भाईने में अकम मोभा दहार जटा हो गते

इसके विपरीत का योग वहकी तीन प्रकार के रहते है, इनकी दृष्टि मैत्री और विचार समान है। इनकी जीवन भी पूरी एवं भाव भी अगुम होने है।

विपरीत तीन प्रकार की भावना या सेव्या के होते हैं। इनके गुणों का एक कवि ने इस प्रकार वर्णन किया है—

ओ किमा मे अदावन न दगा करते है।

वे ही आराम मे दुनिया मे रहा करते हैं।  
जिनका है शीशर दिल माफ कदूरत से दूया।

ओर के दिल को भी मित्रने से जिनके  
ओर ओर केन से अदावन है उनका वरना।

ओर कावन न रमाने से दूया करते हैं।  
ओर न के अदावन से अदावन है उनका वरना।

ओर न के अदावन से अदावन है उनका वरना।  
ओर न के अदावन से अदावन है उनका वरना।

ओर न के अदावन से अदावन है उनका वरना।  
ओर न के अदावन से अदावन है उनका वरना।

को परवा नहीं जोई मिले या न मिले ।

हक में सब ही के मगर वे तो दुष्टा करते हैं ॥

जो शाद है बराबर उनकी निगाह में सभी,

अच्छा जाने न उसे न उसका मिला करते हैं ।

जैसे शास्त्रों की आज्ञा है कि मनुष्य पिछली तीन प्रकार की  
बनना चाहता है। इन प्रकार की भावना के लोग इन संसार में  
जान करते हैं और सुखी रहते हैं एवं परलोक भी उनकी  
चिन्ता है । शुभ कर्म भी बड़ी बांधते हैं । उनकी शान्ति,  
और ज्ञान इस प्रकार फैलता है जैसे ऐतह के साक  
निपट ।

अर्जुन की बखान बन्द हो महाराज भी शुद्ध होकर थे  
। इनके हृदय में किसी के विष द्वेष न था । वे प्राणिमात्र  
की निगाह से देखते थे, प्राणिमात्र का भला करना  
। ऐसा करने में उन्हें आनन्द काठा था यही उनके  
मात्र प्रयत्न हो रहा था । हमें इनका अनुसरण करके  
भावना को शुद्ध और निमज बनना चाहिए ।

जुग जग चारो न सुगई किनी कौं अकवार,

नै तुम्हारा भी जहां नै कोई बदखार न हो ।



# महाराज श्री के चतुर्मास

जैसा कि पहले लिखा जा  
सम्बत् १६६० में दीक्षा ली। आप ने अपने गुरुवर  
दिवाकर पूज्य आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज  
कमलों में रहते हुए आठ चतुर्मास किये और  
सुब सेवा भक्ति की। इस अवसर समय में ही  
पर्वोत्स अभ्यास किया और कभी कभी अपनी  
धन समाज को लाम भी पहुँचाते रहे। आप के  
किया-कारण और संयम-चारित्र्य को देखते हुए  
श्री पूज्य आचार्य जी महाराज करमाया करते थे  
अन्ध जी बहुत अच्छे साधु बनेंगे। अतः इन आठ  
पञ्चात् श्री आचार्य जी महाराज ने  
श्री जी को पृथक् चतुर्मास करने की आज्ञा दे दी।  
गुरुमहाराज से पृथक् होना न चाहते थे,  
को आज्ञा का पालन करना भी आवश्यक था,  
चतुर्मास आप ने सम्बत् १६६६ में सुनाम पटियाला  
किया। पहले ही चतुर्मास में धर्म-ध्यान का  
उस समय के आचार्य भी सोहन लाल जी महाराज  
मुद्गारविन्द से पचाइ और धन्यवाद भेजा।  
अपनी ओजस्वी वाणी का सफल प्रमाण पढ़ने ही  
दे दिया, इस लिये अगस्त सम्बत् १६७० का चतुर्मास  
को प्रायेण पर पञ्चाङ्ग की राजधानी लाहौर में इस  
वर्ष प्रचार करते हुए अनेक भव्य प्राणियों को





**सूर** सम्बत् १६७१ का चतुर्मास आप श्री जी ने कसूर में किया। इस चतुर्मास में भी खूब धर्म ध्यान।। वहाँ पर एक महाजन जैन धर्म का बड़ा द्वेषी था। आप गोचरी के लिए जाते और उसकी दुकान के आगे से होते तो वह कुछ उपहान सा किया करता था। आपने भी जे मन में यह ठान ली कि इस व्यक्ति के हृदय में जो द्वेष हुआ है उसे निराकरना ही चाहिए। अतः आपने यह मन सा बना लिया कि जब भी उसकी दुकान के पास से गुना तो पाँच सात मिनट रुकें होकर उस महाजन से बातें करना। इस प्रकार उसके हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि जे उस विद्वेष को स्वयं ही छोड़ दिया तथा प्रतिदिन जे आने लगा। भावक के ब्रत धारण किए और क्या समय ही सुख पर सुखवस्त्रिचा लगा कर सामायिक करने लगा। यह था आप श्री जी के पवित्र जीवन और मनोहर देशों का प्रभाव। महापुरुष पारव्वटी होते हैं जो उनके नरक में आता है उसे भी सोना बना देते हैं।

इसके पश्चात् जो चतुर्मास हुए उनमें खूब जैन धर्म का बार हुआ, बड़े प्रभावशाली व्याख्यान हुए और जनता में धर्म प्रभावना हुई।

**खरड़** सम्बत् १६७२ का चतुर्मास आपने खरड़ जिला अन्बाला में किया। इस चतुर्मास में आपने संस्कृत वाक्य पढ़ा। संस्कृत वाक्य का विषय बड़ा कठिन और टित है, यह बाल्यकाल में पढ़ा जाता है। क्योंकि उसे ठीक करनी पड़ता है, तत्पश्चात् उसका अर्थ मनन करने विशेष समय देना पड़ता है। परन्तु आपने ३२ वें का आयु









हैं। मरहूम साहब के विद्वान, लेनामों के गुरु रक्षय मन्त्रभक्त बाले तथा परम शास्त्र प्रवृत्ति के माहिर हैं। इन्होंने अग्निसमय तक हमारे अस्थि नायक महाराज जी की खूब सेवा की।

**बुढलाडा** सन्वत् १९८६ का चतुर्मास बुढलाडा मण्डी

जिला हिमालय में हुआ। इस चतुर्मास में आपने अपनी आदुभरी बाणी की वट अमृतवर्षा की कि जैन लोग तो आप पर भी ज्ञान से पुर्वान होतें ही थे परन्तु उनातनधर्मों, धार्यसमाजों और मुसलमान तक भी आप की वधा लागी पर सुग्ध हो गये। इस चतुर्मास में धार्यसमाज का धार्मिक प्रभव था। आप भी के व्याख्यान इतने सुन्दर मनोहर थे सर्वप्रिय होतें थे कि धार्यसमाजी लोग प्रथम आप की उपदेश सुनकर फिर अपने उत्सव का कार्यक्रम प्रारम्भ करते थे। इस प्रकार जहाँ की साधारण जनता पर आपकी विश्व उपदेशों का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

इस चतुर्मास में एक भयानक घटना घटी और आपने वही की जनता पर यह कृपा की कि ये लोग इस उपकार को पर काल तक न भूल सकेंगे। मण्डी पर एक ऐसी विपत्ति आने लगी कि जिससे मण्डी के तबाह होने का पूरा पूरा भय हो गया था। उस घटना का विवरण इस प्रकार है कुछ मुसलमान गोघातकों ने एक हारजन भाई की सगर्भ गाय घात कर दी। यह समाचार आस पास के गांवों में फैल गया और हा के कृपक लोगों का खून जाश मारने लगा। क्योंकि एक गुराफ चमकार का सगर्भ गाय घात कर दी गई थी इस कारण उस प्रदेश की जनता में बड़ा रोष भर गया कुछ शस्त्रधारी हाक उस प्रदेश में फिर रहे थे। वे अपनी चतुर्मा





हम अपने सङ्गठन के लिये सभी कुछ समी कर सके  
हमारे मिल बैठने के लिये कोई स्थान हो।  
लोगों ने स्थानक फरद स्थापित किया। जिस  
सम्भार हो गया है।

**कसूर** सुजवानपुर से आप कसूर पहुँचे।

अतिसङ्गठन के विषयों पर व्याख्यान होने  
हुए। यहाँ जैनी भाई सामायिक आदि एक विराट्ट के  
किया करते थे। परस्पर में प्रेम बढ़े, ऐसा कोई साधन  
महाराज श्री के दो तीन व्याख्यान सुनने के पश्चात्  
कहा महाराज ! कसूर के लोग धिक्ने पड़े हैं,  
महात्मा अपना ओर लगा चुके हैं, परन्तु कुछ नहीं  
ऐसे ही आप के उपदेशों से भी यहाँ कुछ नहीं होने की  
है। यह सुनकर आपने कहा कि हमें तो अपने  
करना है और धर्म का नाश बजाना है। तुम इसे  
किर जो भी मैं आप से करना। इस प्रकार कई दिन  
लोरदार व्याख्यान हुए। लोगों के दिनों पर अभी हुई  
रगड़ा, तो वे लोग एक दूसरे की ओर मँडकने लगें कि  
रहा है। हमारे दिनों में समार मा कैसा पैदा हो रहा है  
साधु के उपदेश तो हमारे हृदयों के अर्न्तर्गत तक  
महाराज श्री कई प्रकार से और भिन्न भिन्न दृष्टियों से  
में जैन भाइयों का कर्तव्य बतलाने थे। एक दिन  
और घन के वास्तविक स्वरूप पर व्याख्यान चल पड़ा  
विषय पर नूतन प्रकार का। ऐसा प्रकार का कि सुनने  
अपने दिमाग का टटोलने लगे। आप ने दान के वास्तविक  
राश्या के बहुत से प्रमाण उद्धृत और युक्तियों द्वारा समझाये





लापरवाही और शरूलत पर ऐसी शाब्दिक मार के सब पसीना पसीना हो गए और बगलें झुंके में आपने कर्माया—

मेहार्ण अलं चन्द्रस्य चन्द्रं तद्वराणं कत्रिष्ये।

सुपुदिसाणं य रिद्धि सामन्तं सयज्ञ सोवसे।

अर्थात् बादलों का पानी, चांद को चाँदनी फलपूल, मन्त्रों का धन दीतत सब कुछ परोपकार होता है। जब यह उपदेश समाप्त हुआ तो कि हम चिक्के पड़े हैं। हम पर किसी का उपदेश परन्तु अब मिसरी की बली तथा असफ़ु के समान हम महाराज भी के उपदेश का एक एक शब्द हमारे और रग रग में असर कर गया। बाहर निहारे इकट्ठ कर के श्यानक बनाने का इह निग्रह कर बिहारी समय रकमें लिखी गई। कई सात्रनों ने सोचा रकमें तो कागज पर ही लिखी रह जायेंगी। परन्तु भी के उपदेशों ने तो वनक परपर दिनों को मोच या। प्रत्येक दानो महाशय अपने आप दूसरे ही दिन अपनी रकम समा के लछाची के पास से आया। वह बहुत रह गई थी, वह अगले तीन चार दिनों में सब की सब रकमें बैंक में जमा करा दी गई। इस श्यानक तय्यार हो चुका है

**ग्राही** चन्द्र से विहार करके आप बाहरी को या श्यानक न दाने के समान या। या या और बगला यकान महजने से या या कि अक न के बगल न या चमू निहा सादमे से है।

रादरी की जागृति और साहसपूर्ण कार्य होने की सूचना यहां रहते ही पहुंच चुकी थी। वधर महाराज जी ने पधार कर अपने मनोहर हृदयमाही-व्याख्यान देने आरम्भ कर दिये। 'म' ध्यान, और संगठन के विषय पर अधिक भार दिया। इसके फलस्वरूप लाहौर निवासियों ने भी अपन कर्तव्य को पहचाना और सोचा कि बिना स्थानक के तो हम अपनी भाषा या मोटिंग भी नहीं कर सकते। इस प्रकार वे लोग अपनी जाति के उपाय सोचने लगे और इकठ्ठा करके स्थानक फंड पापित किया। अब हमसे एक शानदार स्थानक तय्यार हो चुका है। कसूर और लाहौर के लोग आप भी को लाख लाख गन्धबाद देते हैं कि उनके जगाने से वे रूठ बैठे हैं और अपनी टिगियों को दूर किया है।' जन्ही दिनों लाहौर ही में रावलपिंडी

१. ये क्षेत्र अब पाकिस्तान में चले गए हैं। महाराज भी के प्रदेशों से जो वहां कार्य हुए उसके लिये वहां के भाइयों ने काफी अनुरोध किया। पाकिस्तान बनने से अब वह सब कुछ हमें व्यर्थ सा लीज होता है। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं। चाहे महाराज भी अपने अनुभव में बड़ जान लिया हो कि ये क्षेत्र इस प्रकार चले जाने हैं परन्तु उनका ध्येय तो जैन भाइयों की मनोवृत्तियों को सुधारना था, उन के दिलों में दान की भावना को उत्पन्न करना था, उनको धर्मप्रचार के लिये तय्यार करके भगवान् की सत्सचे सैनिक बनाना था। जैन भाई चाहे अम्बाला डबोवन के हों चाहे रावलपिंडी डबोवन के हों, जहां कहीं वे रहते थे, जहां में आप ने उपरोक्त भावनाओं को समान रूप से भरा। अब पाकिस्तान के भाई बैराक उन क्षेत्रों को छोड़ आए हैं परन्तु उपरोक्त भावनाएँ तो उनके साथ हैं और दुनियां के किसी भाग में चले जाएँ वे भावनाएँ उनके साथ रहेंगी।

लापरवाही और शरूलत पर ऐसी शान्दिक मार डाली  
के सब पसीना पसीना हो गए और बगलें झंकने  
में आपने कर्मिया—

मेहाणं जलं चन्द्रस्य चन्दनं तरुवराणं कन्नमिषो।  
सुपुरिसाणं य रिद्धि सामन्नं सयज्ञ सोवस्य॥

अर्थात् बादलों का पानी, चांद की पारिवी,  
फलफूल, सज्जनों का धन दौलत सब कुछ  
होता है। अब यह उपदेश समाप्त हुआ तो  
कि हम चिकने पड़े हैं। हम पर किसी का उपदेश  
परन्तु अब मिसरी की हली तथा असफख के समान पर  
महाराज श्री के उपदेश का एक एक शब्द उनके  
और रग रग में असर कर गया। बाहर निकलते  
शकट के स्थानक बनाने का रद्द निश्चय कर लिया  
उसी समय रकमें लिखी गई। कई सज्जनों ने सोचा  
रकमें तो कागज पर ही लिखी रह जाएंगी। परन्तु  
श्री के उपदेशों ने तो उनके परंपर दिनों की मोह बंद  
था। प्रत्येक दानो महाराज अपने आप दूसरे ही दिन  
अपनी रकम सभा के खजाने के पास ले आया। वे  
बहुत रह गई थी, वह अगले तीन चार दिनों में  
सब की सब रकमें बैंक में जमा करा दी गई। उस  
स्थानक तय्यार हो चुका है

**साहौर** कसूर से बिहार करके आप साहौर पहुँचे।  
श्री स्थानक न होने के समान था। रक-  
मा तथा और बेपाया मकान महल्ले में था जो कि  
क वाग्य न था। कसूर जिला साहौर में है।







दिखारें, पूरे छ मास तक बरसाइ बरने और  
 सुधार करने का उपदेश दे किन्तु हम उस से मसबूत  
 समझान और भाति को ऊँचा बठाने का कोई  
 हम ऐसी निद्रा में तल्लीन हैं कि करबट तक नहीं  
 हमारे जिये डूब मरने का स्थान है। धिक्कार है  
 होने पर। धिक्कार है हम पूछीपत्तियों को कि  
 स्वागत नहीं कर सकते। धिक्कार है हमारी  
 को कि गुरुदेव हम को ऊपर बठाना चाहें  
 नीचे मरें। क्या हमारी नालायकी और अज्ञानता की  
 है ? ” ऐसे बुझने वाले वाक्य जब कहे गए तो  
 लोगों को काफी शर्म आई और उन्होंने कहा कि  
 रूपेश अपने गुरु महाराज जी का अपमान है कि  
 बलिष्ठ अनुमोक्ष की हो नहीं अपितु उमास की करें  
 इस प्रकार बरादरी के मुख्य मुख्य लोग आपसे  
 पहुँचे और वापिस राबकपिण्डो कोटने की प्रार्थना की  
 राब जी ने कहा कि अब हम वहाँ से आ  
 अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है। अब  
 अमाही पुइयो ने हाथ जोड़ कर विनती की, कि  
 सादर ! आप की वापसी बरादरी के लिए बड़ी  
 सिद्ध होगी। सभी का ही जीवन ही परीपक्षम है  
 इस प्रकार बार बार विनती और प्रार्थनाएँ किये जाने पर  
 कहा कि हम बने भी बने परन्तु हमारे जाने  
 इस बात का हमें पहले प्रमाण मिलना चाहिए।  
 और मजबूत सब बातें हाँकर विचारने लगे कि वह  
 कि वह हमें कुछ कुछ दिखाना चाहिए।





की बरादरी को जेहलम के भाइयों ने अपने हाथों से  
कहों ने समा करके उन भाइयों को कुछ घन इच्छा कर दिया।

**जम्मू** श्यालकोट से बिहार करके आया - ११

बरादरी में अपने बच्चों की पढ़ाई  
करने का कोई प्रबंध न था और बरादरी के लो-  
क्यों में पढ़ते थे । आपने अपने स्थानों के महा-  
विद्यालय के विषय में व्याख्यान देने आरम्भ  
कहा कि मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसकी अनिच्छा  
तक अनिच्छा और अज्ञानता दूर न हो, मनुष्य अपने  
समकक्ष ही नहीं सकता । उपदेशों का यह फल हुआ कि  
ने इच्छा करके विचार किया कि हमें अपने बच्चों की  
जिसे प्रबंध करना चाहिये । इस प्रकार कहोने पर  
परामर्श करके दस हजार रुपया एकत्रित कर लिया।  
जो का यहां छोड़े हो दिन ठहरने का विचार  
आप बिहार की तय्यारी करने लगे । परन्तु  
जम्मू का कारमीर के मृत्युपूर्व प्रधान मंत्री राजा  
जनक दीवान विशनराम साहब C. S. I. C. I.  
V. O. महाराज की के चरणों में उपस्थित हुए  
ब्रह्मा के साथ विनती की कि आप कुछ दिन और  
रुका करें, बरादरी ने जो हाथ छोड़ कर प्रार्थना की  
रिजाल साहब और बरादरी की विनती को स्वीकार  
करा अपना बड़ा पूरा किया अर्थात् २६ दिनों की  
विदाय करने का तय्यारी करने लगे । ब्रह्मा के  
बाद महाराज ने कुछ दिन और ठहरने के  
आपने दुर्भाग्य से दस दिन और ठहरने के लगे



वहाँ नौ दिन ठहरै। वहाँ से बिहार जाके मोरारजी  
 कालिदास आदि म्थानों को पवित्र करते हुए पुनः  
 और सम्भवतः १६६६ का जन्मोत्सव पाटणाला के विद्यापीठ  
 के प्रधान आप उपरममिन् होने के कारण वही ठहरे।  
 आप की दूसरी बार गुरुकुल के उत्सव पर पधारने से  
 की गई जिसे आप ने स्वीकार कर लिया।  
 पर आप ने बिहार किया और वहाँ से काश्मीर, अमर  
 उत्सव के उत्सव पर गुरुकुल पधार गए। इस समय  
 विद्यामन बीकानेर के सेठ चम्पा लाल जी बाँठिया थे।  
 पर भी आप ने वहाँ प्रभावशाली और कर्तव्यमूक  
 दिखे। उत्सव की समाप्ति पर प्रधान जी ने पाँच हजार  
 दिया और पाँच हजार बीकानेर से आप हुए  
 दिखवाया। इस उत्सव पर गनवर्ग के प्रधान साक्षात्  
 जो भी पधारें हुए थे। इन्होंने प्रधान पर पर  
 प्रधान जी के महान् स्तुत दान दिया। अरबी धर्मार्थी,  
 अल्प धर्मार्थी जो भी स्तुत दान दिखवाया और दासों के  
 साथ ही। इन के असाहस को देख कर रोष उत्पन्न  
 होकर दान दिया। इस प्रकार इस वर्ष इहोम उत्सव  
 उत्सव उत्सव हो गई। और चौदह हजार गनवर्ग  
 इस प्रकार वैष्णोम उत्सव उत्सव उत्सव उत्सव उत्सव  
 का उत्सव उत्सव गई।

**अम्बाला**

इसी गुरुकुल के उत्सव पर अम्बाला  
 के माई आप हुए थे। उन्होंने अम्बाला  
 मोरारजी के उत्सव की, जो आपने उन वर्ष दिखवा  
 अम्बाला के उत्सव पर अम्बाला के उत्सव पर  
 अम्बाला के उत्सव पर अम्बाला के उत्सव पर



वहां नौ दिन ठहरे। वहां से बिहार करके सोन-  
 कालिका आदि स्थानों को पवित्र करते हुए पुनः गुरुकुल  
 और सम्बत १६६६ का चतुर्मास पटियाली के स्थान  
 के पश्चात् आप पुरमसिन होने के कारण वहीं ठहरे।  
 आप को दूसरी बार गुरुकुल के उत्सव पर प्रधान  
 की गई जिसे आप ने स्वीकार कर लिया।  
 पर आप ने बिहार किया और वहां से अम्बाला,  
 उत्सव के अवसर पर गुरुकुल पधार गए।  
 रियासत बिकानेर के सेठ चम्पा लाल  
 पर भी आप ने बड़े प्रभावशाली और कर्तव्यसुवर्ण  
 दिये। उत्सव की समाप्ति पर प्रधान जी ने पाँच हजार  
 दिया और पाँच हजार बिकानेर से आए हुए अपने  
 दिलावाया। इस उत्सव पर गतवर्ष के प्रधान साहू  
 जी भी पधारे हुए थे। इन्होंने प्रधान पर नौ हत्त  
 प्रधान जी के सतरा खूब दान दिया। अपनी धर्मपत्नी  
 अन्य सातिशनों से भी खूब दान दिलाया और रुपये की  
 कमा दी। इन के असाह को देख कर  
 लोककर दान दिया। इस प्रकार इस वर्ष इक्कीस हजार की  
 रकम एकत्रित हो गई। और चौदह हजार गत वर्ष की  
 इस प्रकार पैसीस इनमें रुपये एक दम एकत्रित होने से  
 की बराब सुधर गई।

**अम्बाला** इसी गुरुकुल के उत्सव पर अम्बाला  
 के माई आए हुए थे। उन्होंने  
 माँव बन का शायना की, जो आपन जैन धर्म दिवाकर  
 आपका भी आभाराम का महागन की अक्षा ३३  
 भीकार का सा। वहा से बिहार करके आप लखन, माँव

एक लुथियाना पधारे। वहाँ अपने गुरुजनों के दर्शन करके  
हृदय तथा नेत्रों को पवित्र किया। कुछ दिन दमकी  
ने रह कर आपने अम्बाला की ओर बिहार दिया  
दोसाटा, मन्ना, मन्ही गोविन्दगढ़, सरहन्द आदि एँत्रों में  
वहाँ पहुँचते हुए अम्बाला से आठ मील शम्भू गाँव में  
गए। वहाँ अम्बाला के बहुत से भाई आपका स्वागत  
के लिये पहुँच गए और अगले दिन बड़ी धूमधाम से  
आम्बाला नगर में प्रवेश हुआ। आपके पधारने से  
वहाँ का क्या हाल था अब उसका वर्णन करते हैं।

महाराज की के पधारने से पहले सूर्य देवता अपनी  
उत्तम तपो हुई किरणों के तेज भावों से अपनी पूरी शक्ति  
कर पृथ्वी बिंद की तम लोहपिंड बनाने की स्तार हो  
या। उसने अपना ऐसा तेज प्रकट किया कि दोपहर के  
य वृक्षों की छाया भी सुखद गई। पक्षीगण अपनी चोंचों  
से वृक्ष की विन्दुओं के लिए तड़प रहे थे। तालाब शुष्क  
गए थे और मैंसे बड़ी पानी न पाकर छप्पड़ों के बीच में  
अपने बजते हुए शरीर की ठंडक पट्टंचाने का प्रयत्न कर  
भी। रोटी का एक मास खाने की लोगों का जी न चाहता  
और पानी पी पी कर लोग अपना पेट मशक के सदृश  
करे थे। पेट पानी से भर जाता था परन्तु मुख ज्यों का  
शुष्क हो रहता था तथा और पानी की माँग करता था।  
म्बाले में वैसे भी पानी की बड़ी कमी है। बाटर बच्चेस है  
लुत्ति भी मीप्प ऋतु में पानी की कमी तर्ही हो जाती  
। इन लिये सरकार। नज़रों पर पानी आने के समय बड़ी  
रक्षापेन होती है। सोभागव से ही कोई पुरुष अपने पूरे  
जवन भर कर ले जाता है। नहीं तो कसा के आवे भरते









होनामों की सँदरा बढनी गई तब उस समय लाला जी ने स्वयं  
 हो इस बात की आवश्यकता अनुभव की और बिना किसी के कहे,  
 सीप बना कमरा खाली कर दिया। यह आप के जद्दूमरे  
 उद्देश्यों का ही प्रभाव था, कि बड़ा पड़ते मित्रों के कहने पर भी  
 लाला जी तय्यार न हुए थे, अब अपने आप कमरे की खाली  
 कर दिया। आप के उद्देश्यों का प्रभाव अच्छा पड़ रहा था, अतः  
 आप ने बड़ा पूरा कल्प किया और बड़ी रीत डर रही। आप की  
 बड़ा की जैन बगदगी ने चतुर्नाम की चिन्ता की, तो आप ने  
 चर्मापि अमी कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अभी होली  
 चतुर्नाम नहीं हुआ। जब होली चतुर्नाम हो चुकेगा, तब जैसा  
 करना होगा देखा जायगा।

## रामां मण्डी

भरिलहा में आप ने गमां मण्डी की  
 और विहार किया कोई तीन मील हो  
 रहे होंगे कि आप के पाँव की ब्याड़ें में पीक पड़ गई। चलना  
 दुश्कर हो गया परन्तु नहागात्र की शनैः शनैः चलते गये और  
 पञ्च मील की दूरी पर एक गाँव में जा ठहरे। रात्रि की पाँव  
 की तकलीफ और बढ़ गई तब आप के शिष्यों ने चिन्ता की  
 कि पाँव की ऐसी अप्रवेक्षना में चलना कठिन नहीं अपितु  
 असम्भव है अतः आप आदेश करें तो हम आपको वापस  
 भरिलहा या आगे रामा मण्डी हाली में बिठा कर ले चलें।  
 किन्तु कुर्बान जाएं आप की पैरशक्ति और ताइम पर कि इतना  
 कष्ट होना पर भी उस देनन और कस्टक के तय्यार न हो क  
 चलने का पैरज हो पार करके क र म न र ड प्रभाव हो  
 इस बगद हक न बैनी प्रसाद न बड़ मज्जन दुख है तब चतुर्नाम  
 की बड़े प्रेम और मद्धा न मवा क न है ३-६ न २-६ ३ म



हमें बड़े बड़ा संत आशीर्वाद मिला बापार में ही और  
 जब इस प्रकार भी बिना बिना के नहीं, इसी प्रकार  
 बापार में दुखों का आश्रित बिना था परन्तु लाला  
 लाला की जेबें बिना की परबा न करते हुए भरिपटा की  
 की महाशय की के बधनामृत विषयों के लिए बिना  
 की की प्रेमा के ही भारी लाला किया और करने का बट  
 का लाला का जलता के समुद्र का द्वारा बर्षाधन किया।  
 लाला के के अतिविन उपदेश होते रहे। लाला का बर्षाधन  
 होते ही। धर्म ध्यान बढ़ता ही गया।

भरिपटा में ऐसी भाइयों के ही बेबल की पर ही परन्तु  
 हर से जाने बने हरानाथों की भोजन आदि में सेवा के  
 के लाला बापारों नियत थी। इन में से भी तो ऐसी भाई  
 लाला भी लाला लाला का और रोप सात मनाहनधर्मों  
 का लाला साधन थे। इनमें से वह भारी लाला लाला  
 लाला की पत्नी की थी। करने सम्बन्धी का पारना  
 लाला में मांग कर लिया और बरीर देह भी वेदव का पारना  
 ही प्रमत्ता पुरेष्ट कराया। बिना भी आप के ही पारना  
 का उनके मुन से दही निरुत्ता कि ऐसी अद्भुत और  
 का प्रेमभाव हमने कही भी नहीं देखा। वह दोनों भाई रात्रि  
 मन्त्र महाशय की वे पाम आते और उनके मुनारविन्द  
 उपदेश मुन कर आते। इनकी धर्म भावना दिनों दिन बढ़ती  
 जाती। यहा तक कि आपन स्थानक परट के लिए भी  
 का हिमा के बड़े मुन एक हजार रुपया दानपात्र में टाल  
 का और कही भी आपन नाम न 'लाला' का यह था प्रभाव का  
 लाला का पवित्र उपदेश का। 'लाला' का आप आपन  
 सेवा नहीं बहन थे उन लाला का लाला का लाला का लाला का



ले धर्मोपदेश होने रहे। उपदेशों को सुन कर वहाँ के  
नेस्थानक के रही हुई बुद्धियों को दूर जाने के लिये  
या। वहाँ के बिहार वरष आप दसवाँ मण्डी गया  
एही की जनता को कृतार्थ करते हुए मोक्ष मंटी (भट्टिया  
राइन) पधारें।

**इ मण्डी** यहाँ तीन बिरादरी के वेबल १३ पर है  
इसकी मोर्चा संस्था होने पर भी आप  
एर उपदेशों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जन लोगों ने भी  
कमी का अनुभव करने हुए स्थानक परत स्थानित  
तीर तीन हजार की रकम एकत्र कर ला। वहाँ से आप  
मण्डी पधारें।

**तमा मण्डी** यहाँ भी कोई स्थानक न था। आप  
भी के उपदेश हुए और उनका  
रता प्रभाव पड़ा कि सुटलाहा मण्डी वाले लाला रामजी  
ने जो बिचिरकाल से यहाँ रहते हैं, अफेले ही ने  
बनाने का कार्य अपने जुम्मे ले लिया। यह दानवीरता  
जनन उदाहरण है और दूसरों के लिये अनुकरणीय है।

यहाँ पर महाराज जी की राबलपिण्डी से सुचना मिली  
गंगा जी की धर्मपत्नी अपने पृथ्वी पति की शुभ स्मृति  
कार्य करना चाहती है। आपने उस देवी को कहला  
ए जाति उदार का कोई कार्य बरादरी के परामर्श से  
चाहिए। तब उस देवी ने बरादरी के परामर्श से  
पत्नीम हजार के मुख्य की मण्डी जमीन

अब उन्होंने एक तीन मञ्जरा की  
न को दे दिया है।



# श्री महाराज का अन्तिम काल

जब मुखां सदा मुञ्चर जाता है,

इत्सान आता है आये मर जाता है ।

है शिन्दर व होर बहो नेक अलाम,

जो जानके कुछ बान भी कर जाता है ।

मृत्यु का जाना निश्चित है । और कोई बात तो भूली  
नहीं है, परन्तु मृत्यु ने निश्चय जाना है तोटा क्यदा  
होईं मैं इसमें बच न रहा । एक न एक दिन यह समय  
ही देवता ही पड़ता है । जो जाना है उसही मृत्यु कबर  
में है ।

और बचेगा कोई न दुनियां में जान ली,

मौत कष्ट दराय आनन व आसम कष्ट बराय मौत ।

कयक मनुष्य यह जानता है कि हमें मृत्यु ने एक दिन  
त्य का दबाना है, तथापि वह अपने खान पान एष सात्तारिक  
में ही हो खान रखता है आगे की कुछ चिन्ता नहीं करता,  
ने जीवन के व्यय और लज्ज की आर नहीं देखता—

अब खबर गरम मौत व जान का है,

नाश तुम्हें फिर आये शान का है ।

हमों व लये शरार इक दिन है फना

जाना तब दल न जान का है

यह तो ठीक है कि क'इ ता नान आनु भ'न' व' इस  
का उ'दना है और व' इ'श'म'ह' इस जगत से विदा हो



जाता है। सदा के लिए न कोई ठहरा है, न कोई ठहरा।  
 इस असार संसार में करोड़ों, अरबों बाप मोर के  
 कोई भी छोटा अणु नहीं बड़ा यहाँ अपना पांव न रखे  
 जो आया अक्षय गया। हाँ एक तो इस प्रकार बार-बार  
 गए जैसे कि कीड़े मकड़ी, कुछे विनिमय करते हैं  
 आते हैं। किसी को पता तक नहीं चलता। दूसरे, जो  
 ये ऐसे महापुरुष आते हैं, जिनकी मृत्यु पर स्वर्ग  
 और गांव गांव में खेद प्रकट किया जाता है। जहाँ  
 के हृदयों पर गहरी चोट आती है और इस प्रकार  
 शोक होता है। निसर्गवेद उनका मौलिक शरीर इस  
 मिट जाता है परन्तु उनका नाम अमिट बना रहता है।

जम रह गया यहाँ न यहाँ जम रह गया,  
 दोनों का रह गया तो फलतः नाम रह गया

मरते नहीं हैं जिन्दगी आबीद है, वो राख,

नेकी के साथ जिनका यहाँ नाम रह गया

मस्जिद के अपने सारे ही भाई पहुँच गये,

वेगम्बर अब रहे नहीं वेगम्बर रहे न

ज्ञानी क्या अज्ञानी सब को यह संसार सँभल  
 पकवा है। अज्ञानी जन अपने जीवन को व्यर्थ है।

यथा पापी का भार अपने सिर पर उठा कर बैठे हैं  
 ज्ञानी जन अपने जीवन का पूरा पूरा साम उठा कर

पुछ का पायेय अपने भाग से आते हैं—

गर कास भरस जिये तो फिर मरमा है,

वेमानव हमर एक दिन मरना है।

हो तोशय आश्रयत मुद्रया कर से,

गपकित पुके दुनिया से सकल करवा





नेहला तो आप ने पानी से मुख साफ किया। डाक्टर स हब तं दी परन्तु कुछ न हुआ। तब आप ने दवाई लेने से इन्कार किया और पानी तक भी प्रदण न किया। आप की शिष्य-तो आप के पास ही बैठों थी, परन्तु आप किसी के लिये न भी मोह न दिखा रहे थे, वे केवल ध्यान-मग्न थे और अकार ध्यान में तल्लीन रहते हुए सुषवार की प्रातः साढ़े बने के समय स्वर्ग सिधार गए। आप भगवान महावीर के इच्छन्तोस चतुर्मासों को पूर्ण करके बयालीसवें के बीच में स्वर्ग को प्राप्त हुए।

महाराज श्री के स्वर्ग सिधारने की सूचना गाँव गाँव एवं नगर में तार तथा टेलीफोन द्वारा पहुँचाई गई। हर जगह ने भी यह समाचार सुना, एक दम हल्ला-बल्ला रह गया। बीमारी नहीं, तकलीफ नहीं, अकस्मात् सध ने यह खबर। कई लोगों को तो सुनते ही इस सूचना पर विश्वास तक आया, किन्तु विश्वास न करने से ही यह समाचार मिथ्या मान सकता था। आखिर विश्वास करना ही पड़ा। स्यालकोट, हुं, गुजरांवाला और नारोवाल-क्योंकि ये क्षेत्र पत्थर से नहीं पड़े हैं इस लिये इन क्षेत्रों के लोग तो स्वर्गवास का खबर सुनते ही महाराज श्री के अन्तिम दर्शन करने के लिये वार की-साय की ही आगए, और अगले दिन तो अत्येक न की गढ़ी में आदम ही आदम आता चला गया। कोई हरावली-रहो से आ रहा है तो कोई अम्बाले से कोई जेडलम आ रहा है तो कोई पटियाले से कोई लुधियाने से तो कोई ग से और और से इस प्रकार बगह जगह से आप के तो बड़ाबु पमकर पहुँच गए कई दुशाले डाले गए



था, परन्तु अब शीघ्र से आतिथित कर भी दिया सकते थे, और  
इसका नियम था बन गया है। अब शीघ्र करके अथवा  
भा आदि से कोई प्रस्ताव पास करने सुप रह जाते हैं, यद्यपि हम  
ने गजानन अन्ध जी महाराज मरी बन सकते, तथापि उन के  
जिन का समुदाय करके उनके द्वारा आरम्भ विदे गये बावों  
तो सो क्या सकते हैं तथा उन बावों को और आगे बढ़ा कर अपने  
दिन को सफल बना सकते हैं।

ऐसी पवित्र और बड़े हस्ती के समे क्षेत्र से उठ जाने का संद  
ने अवश्य होता है, परन्तु ऐसी पवित्र आत्माएं शास्त्र ही निर्वाण  
ही अधिकारी बन जाती हैं।

॥ आह ! महाराज भी स्वप्न अन्ध जी ! ॥

क्यों आज हैं धमन में गुल्लो बगें अशक्त  
क्यों हो रहा है रक्षा हर दूध से आशवार ?  
हम सब के दिल भी आज हैं क्यों शरीर बेकरार ?  
क्यों हो रहा है चरने नीली घास बार बार  
कृष्ण जिस का और जहां से था दिल गुदाश  
रुह नरामे हयात थी जिस की नवाए राज  
पोशीदा जिस के साज में था दर्द व सोजी साज  
फिरत गुलन्द और दिल जिस का था पाक बाज  
बाए बाँह राजदारे बतन आज उठ गया  
बाँह अन्धलापे उर धमन आज उठ गया



# महाराज श्री के विशेष गुण

दुनियाँ दुनो से हम को दुर्लभ काम नही,  
अब हम हैं बड़ा काम का बड़ा काम नही,  
दुर्लभ हिकर यही सुख नही शान नही,  
कोई घर है शरक जिस में आना नही।

१. स्वास्थ्य और सौभाग्य—मनुष्य को अपने जीवन यात्रा के लिये यह सुन्दर एवं भोग्य शरीर मिलना ही सौभाग्य की सवारी है। जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने सवारी अच्छी न होने पर अथवा कमजोर होने पर अपने पथ को संकुलित संकलित पूर्वक पार नहीं कर सकता। उस प्रकार जिस मनुष्य का शरीर निम्न तथा रोगग्रस्त हो, अपनी जीवन यात्रा ठीक रूप से पार नहीं कर पाता। जिये यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने शरीर का ध्यान उन बातों से करने का पूरा पूरा प्रयत्न करे जो लक्ष्य लिये हानिकारक हैं।

भी भवानन्द जी महाराज अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखते थे। खान पान में कड़ी मर्यादा से धारण करते थे। विशेष करके अन्न से करते थे। इसी कारण ही शरीर बड़ा पथ सुखील था। यही कारण था कि जब भी पानी आदि में अतीव रुचि पूर्वक और बड़े प्रेम से स्नान संवा किया करते थे निम्न तथा रोगा पुष्टि का तो स्नान ही दिल नहीं चाहता। स्नान संवा क्या करते हैं।

२. माधाराण मनुष्य मान वरदाई के भूरे होने हैं—  
 इस मा सम्मान भी प्राप्त करने के लिए दशारी लाखी रूपय  
 उपहार देते हैं। कई माधु भी अपनी मान प्रतिष्ठा के वड़े  
 खुद होते हैं, परन्तु आप भी मान से बासी दूर रहते थे।  
 अपनी प्रशंसा सुन कर कभी हर्ष न मनाते थे। कई बार ब्रि  
 गेगो ने आप की प्रशंसा में ब्रिहदार लिखने के लिए आपसे  
 गठारिता की का नाम पूछा, परन्तु आप टाल देते थे। अग्राणा  
 ने एक बार लोगो ने आपसे नाम की जय सुलाई, तो आपने  
 ज्ञाया कि जय सुलाने योग्य नाम तो, जबल भगवान महावीर का  
 । हमारी जय न सुलाया करो।

३. आप के मन और वाणी में एकता थी—ममार  
 के हितनी ही वृत्त हस्त्रियां हो चुकी हैं और होती रहेंगी किन्तु  
 अपने अधिकांश ऐसी होती हैं कि दूर से तो उनका प्रभाव  
 अच्छा पड़ता है और निकट आने पर वह प्रभाव नहीं रहता।  
 इसका कारण यह है कि उनके मन और वाणी में एकता नहीं  
 होती। वे तो मन पर्यंतों के सहारा होते हैं जो एक दूर से बड़े  
 मुहावने प्रतीत होते हैं, उनकी बातों पर एक साफ मैदान  
 दिखाई पड़ता है, परन्तु समीप आने पर कुछ और ही दिखाई  
 देता है। कितने ही गुरु स्वयं और बचान निधान मिलते हैं।  
 मैं ही बहुत से विद्वान हैं जिनका 'निम्न' हुई पुस्तकों का पढ़  
 र वे बड़ी उच्च हस्त्रियां प्रदान करते हैं परन्तु कुछ दिन  
 उनके पास रहने से वह अनुमान 'निम्न' निकलता है क्योंकि  
 उन सभी के मन और वाणी में एकता नहीं है। एक  
 बारसा के काव न कहें—

हर कम नामक वर।

नाम है खुद के नाम के नाम के नाम









निमित्त—मायावती, निर्धन हो अथवा मनवान् हो सब  
वृद्धि में देखते थे। वह न था कि अमीरों में ही मीठी मीठी  
रस और सुखों में लाया जाही करने। अमीर हो अथवा  
निमित्त जो सुख होना था उसे बिना निमित्त वह देते  
थे। अमीर बनने के स्वभाव में ही न था।

निमित्त—आप तो किसी साम्राज्य के पक्षधर या  
नहीं थे न कहते थे। उही कारण है कि सब लोग आप की  
बढ़ते थे। प्रत्यक्ष रूप में ही आप स्थानस्थानियों के पुण्य  
गुरु देहावती भी आप की पुण्यवृद्धि से देखते थे।  
देहावती ने दोनों साम्राज्यों के बीच जो वैमनस्यभाव बढ़  
था, आप के उपदेशों की सुन कर उन लोगों ने उसे  
हटा दिया। अमीरों ने आप के पवित्र उपदेशों से प्रभावित  
देहावती भाइयों ने भी स्थानस्थानियों के लिये दान दिया।  
ने आप ने देहावती के पुण्य भी आत्मनारायण जी  
की शक्तियों के अन्तर पर उन की स्टेवर आकर  
दिखा दिया। नरकोपक में देहावती के पुण्य ने आप के गुणों  
की वृद्धि में भरी भरी प्रशंसा की थी। इन बातों से आप की  
वृद्धि के हृदय प्रभावित होते हैं।

एक नई की शक्ति—एक बार आप भट्टारक से रामानन्द की  
विचार कर रहे थे कि मार्ग में हा पाँव की ग्याई एक  
नई शक्ति का वेदना हुई। वह भी कठिन होगया।  
निराश्रित ग्या कि आप का हाथ म बाँठा कर लेजाया जाय।  
निराश्रित वह हान हर भी आप न इनकार कर दिया।

एक नई—आप के मन में जब पुण्यवृद्धि के उदय से वैराग्य







जो बी की सेवा में समर्पित किए गए थे। वे इस प्रकार हैं—

### धर्म का नूर

वृ १६७६ के नाभा चतुर्मास की ममाप्ति पर श्री सनातन धर्म सभा और स्थानीय सेवासमिति की ओर से पढ़ा गया अभिनन्दनपत्र ]

प्रधान जी ! तथा उपस्थित सज्जनो !! मैं सनातनधर्म सभा सेवासमिति के सदस्यों की ओर से यह अभिनन्दन पत्र श्री जी महाराज की सेवा में उपस्थित करता हूँ।

सर्व प्रथम मैं जो कहना चाहता हूँ, वह यह है कि इस स्वामी जी महाराज ने नाभा में चतुर्मास करने की आज्ञा दी है, इसमें सेवासमिति का खबरदस्त हाथ है। हमारे प्रेम और दिली भावना को देख कर स्वामी जी महाराज ने पर अपार कृपा की और हम सब को सत्सङ्ग का लाभ दे। हम इसके लिये यावज्जावन आप भी के कृतज्ञ रहेंगे।

दूसरे जैसा कि शास्त्रों में महात्माओं के गुण बताए हैं, वे सब गुण वैराग, त्याग, शान्ति, मद्रचये की चमक, चरमवित्र आचार विचार, विद्वत्ता, नम्रता, स्वाध्याय और गुरु स्तुति स्वामी जी महाराज में पाए जाते हैं।

तीसरे—दिन हो या रात स्वामी जी महाराज का कोई समय नहीं देखा गया, जबकि वे स्वाध्याय न कर रहे हैं अथवा गुरु स्तुति न देने हो।

चौथे—सब से बड़ कर आप में जो गुरु पाया गया है कि प्रतिदिन दो दो घंटे लगातार आप के



## निष्पत्ति

[ सम्बत् १९८७ मानेरकोटला के चतुर्मास में एम्  
 स्थानकवासी तथा देहरावासी समाज में बहुत  
 अपने उपदेशों द्वारा शान्त किया था। यह अभिनन्दन  
 इसी समय का है और भी आत्मानन्द जैनमभा  
 और से भेंट किया गया है। ]

सेवा में भी श्री श्री १००८ श्री लखानचन्द जी महाराज

यहां पर आपके शिष्य महेश्वरी सहित बंधारने  
 सब में जो प्रेम और सम्पत् की सहर दी है, यह  
 की ही कृपा का फल है। आप बंधार में शान्ति-विषय  
 भावी तथा साम्प्रदायिक वक्तुपात से रहित हैं। आप में हेतु  
 विचार समाज के लिये अत्यन्त लाभदायक तथा उपयोग  
 है। यदि ऐसे विचार सारे साधु-समाज में फैल जायें  
 आशा की जा सकती है कि जैन समाज जो इस  
 मर की कमजोरियों एवं गूटियों का प्रधान स्थान बना हुआ  
 ऐसा कदापि नहीं रह सकता। जैन एसोसिएशन का इसका  
 पधारने की ही शुभ स्मृति है। आशा है यह एसोसिएशन  
 काम तक चली रहेगी।

सेवक—

ता० २.११.३०. मन्त्री भी आत्मानन्द जैन समाज के लिये  
 समाज का दर्द अनुभव करने वाले  
 [ सम्बत् १९८७ मानेरकोटला चतुर्मास में जैन एसोसिएशन  
 और से समर्पित अभिनन्दन पत्र ]

इस वर्ष श्री श्री १००८ श्री लखानचन्द जी महाराज  
 अन्य मन्त्रि महाराज व पधारने से श्री आत्मानन्द प्राप्त हुआ



५. दान विद्या है करते सुबहो शाम हमें ।  
अपने हाथों से वह दान दिताने ।
६. गिनती है इन की हिन्द के नेताओं में ।  
दर्द और राम के फिताने मिटाने ।
७. इमनियाजे मजहबो मिश्रत से बहुत दूर है भा ।  
प्रेम भक्ति से हमें अपना बनाने ।
८. हो मना स्वामी भला मुक्त से क्यों क्या बनही ।  
धर्म की शमां से जब नूर दिताने ।
९. साकिनाने बुद्धसाहा स्वामी के फरमान पे चलो ।  
हागा कइयाण तुम्हारा भारीबाँद बनहा दो ।
१०. वमां ने फिकरे बनाए स्वामी की याद में ।  
बम्बना नमस्कार मेरी बार बार मिर को कुं  
धारे जाल बनी
- तारीख १२-११-३२      बुद्धसाहा महोदय

### तारों में चान्द

। सम्बन्ध १३२४ रावजपिएहो चतुर्मास की मूमति पर म  
जेन असाई की ओर से ममपित ।

करा कि मैं मिहतां बयान तेरी,

भा अज्ञान चन्द्र महाराज को ।  
अवस्था गुन अज्ञान इम समन अम्बर,

नाल मिज्ञे न तेरे कोई गुन को ।  
पेट भूनि शान्ति की न दर आवे,

तर बिष बम नमाकार को ।  
न बर न बर नाक छोट के,

न बर न बर न न देहा को ।

जिनको कन जी भी प्रेमचन्द,  
 दूरे दूर से ठेरे दो नैन धारे।  
 जो यह नये प्रिलोक बन्द,  
 छोटी जगत् जगत् जिनां न नदरे।  
 नर बंधु लेता न कोई सनी,  
 बिब लरदां बनके जो बन्द धारे।  
 पर लेह तु भी जैन बन्द बन के,  
 दली बननी शिख नरकतो ई देव धारे।  
 जो नर सन नुर जी दो बर होये,  
 बने लर नूं बनना बनन दस्ता।  
 नर मोह ई जिनां नदरे रैन,  
 लैर बरन दा बनन जलन दस्ता।  
 लर नुर दा बनन लर लर लर दस्ता,  
 लेहदा बिब है कनो जलन दस्ता।  
 लर लर बिब है लर लर,  
 लर लर दा दस्ता बनन दस्ता।  
 लर लर मे लैर लूक बनन,  
 लर लर दा लर लर लर लर लर।  
 लैर बनने लर लर लर लर  
 लर लर लर लर लर लर लर लर  
 लर लर लर लर लर लर लर लर  
 लर लर लर लर लर लर लर लर  
 लर लर लर लर लर लर लर लर  
 लर लर लर लर लर लर लर लर